हिन्दी भाषा का इतिहास और भाषा विज्ञान

MASTER OF ARTS HINDI LANGUAGE AND LITERATURE

Self Learning Material

M23HD03DC

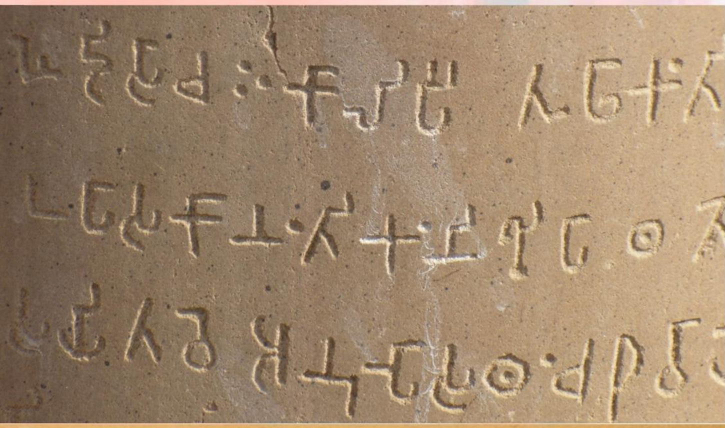
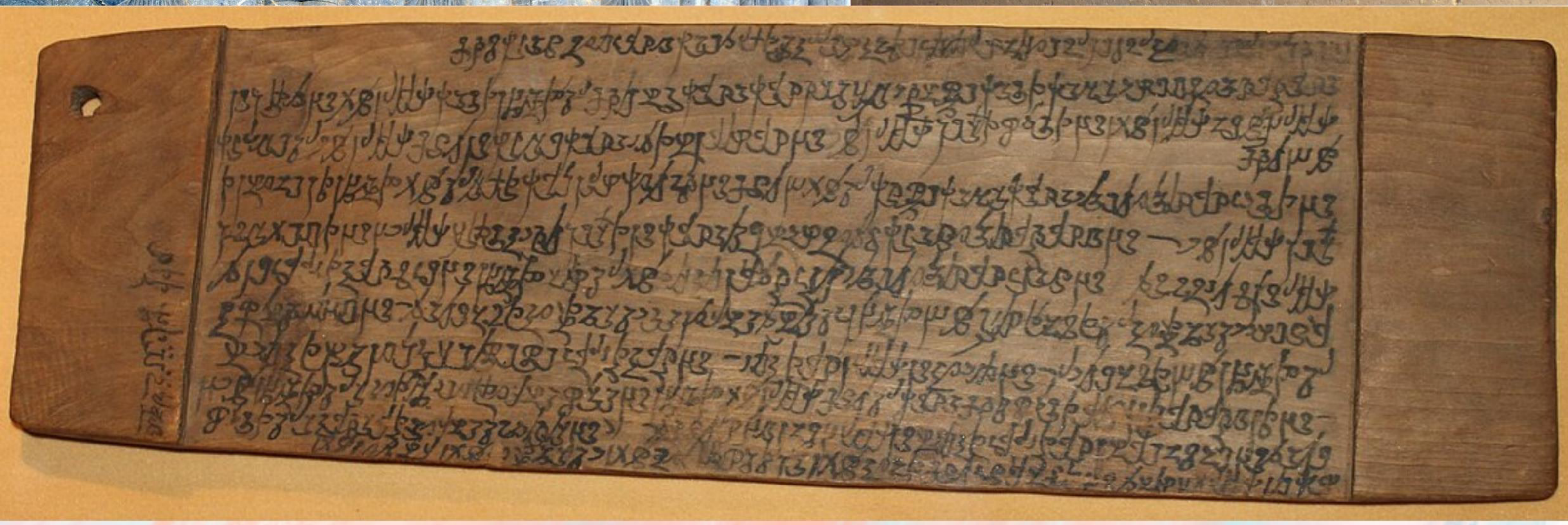

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Vision

To increase access of potential learners of all categories to higher education, research and training, and ensure equity through delivery of high quality processes and outcomes fostering inclusive educational empowerment for social advancement.

Mission

To be benchmarked as a model for conservation and dissemination of knowledge and skill on blended and virtual mode in education, training and research for normal, continuing, and adult learners.

Pathway

Access and Quality define Equity.

हिन्दी भाषा का इतिहास और भाषा विज्ञान

Course Code: M23HD03DC

Semester-I

Discipline Core Course
MA Hindi Language and Literature
Self Learning Material

വിദ്യകൊണ്ട് സ്വതന്ത്രരാവുക

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

The State University for Education, Training and Research in Blended Format, Kerala

Documentation

M23HD03DC

हिन्दी भाषा का इतिहास और भाषा विज्ञान

Semester I

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from Sreenarayanaguru Open University. Printed and published on behalf of Sreenarayanaguru Open University by Registrar, SGOU, Kollam.

www.sgou.ac.in

ISBN 978-81-966843-2-7

9 788196 684327

Academic Committee

Dr. Jayachandran R.
Dr. P.G. Sasikala
Dr. Pramod Kovapurath
Dr. R. Sethunath
Dr. Jayakrishnan J.
Dr. B. Ashok
Dr. Vijayakumar B.

Development of the content

Dr. Indu G. Das

Review

Content : Dr. Indu K.V.
Format : Dr. I.G. Shibi
Linguistics : Dr. Indu K.V.

Edit

Dr. Indu K.V.

Scrutiny

Dr. Sophia Rajan, Dr. Karthika M.S., Dr. Indu G. Das, Dr. Sudha T., Krishnapreethi A.R.

Co-ordination

Dr. I.G. Shibi and Team SLM

Design Control

Azeem Babu T.A.

Production

November 2023

Copyright

© Sreenarayanaguru Open University 2023

Message from Vice Chancellor

Dear,

I greet all of you with deep delight and great excitement. I welcome you to the Sreenarayanaguru Open University.

Sreenarayanaguru Open University was established in September 2020 as a state initiative for fostering higher education in open and distance mode. We shaped our dreams through a pathway defined by a dictum 'access and quality define equity'. It provides all reasons to us for the celebration of quality in the process of education. I am overwhelmed to let you know that we have resolved not to become ourselves a reason or cause a reason for the dissemination of inferior education. It sets the pace as well as the destination. The name of the University centers around the aura of Sreenarayanaguru, the great renaissance thinker of modern India. His name is a reminder for us to ensure quality in the delivery of all academic endeavors.

Sreenarayanaguru Open University rests on the practical framework of the popularly known "blended format". Learner on distance mode obviously has limitations in getting exposed to the full potential of classroom learning experience. Our pedagogical basket has three entities viz Self Learning Material, Classroom Counselling and Virtual modes. This combination is expected to provide high voltage in learning as well as teaching experiences. Care has been taken to ensure quality endeavours across all the entities.

The university is committed to provide you stimulating learning experience. The post graduate programme in Hindi has a unique blend of language and literature. The focus of the programme is on enhancing the capabilities of the learners to undergo a deeper comprehension of the sociology of the forms in literature although the required credits are in place to learn other aspects of Hindi literature. Care has been taken to expose the students to recent trends in Hindi literature. We assure you that the university student support services will closely stay with you for the redressal of your grievances during your studentship.

Feel free to write to us about anything that you feel relevant regarding the academic programme.

Wish you the best.

Regards,

Dr. P.M. Mubarak Pasha

01.11.2023

Contents

BLOCK-01 हिन्दी भाषा-उद्‌भव और विकास 01

इकाई : 1 भाषा की उत्पत्ती एवं परिभाषा 02

इकाई : 2 संसार की भाषाओं का वर्गीकरण 09

इकाई : 3 हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ- वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ। 17

इकाई : 4 मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ-पाली, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ 23

BLOCK-02 आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण 30

इकाई : 1 आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ- हिन्दी का भौगोलिक विस्तार 31

इकाई : 2 हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ 38

इकाई : 3 हिन्दी का विकासात्मक स्वरूप 45

इकाई : 4 हिन्दी के विविध रूप 52

BLOCK-03 भारत में लिपि का विकास 59

इकाई : 1 लिपि का उद्‌भव और विकास 60

इकाई : 2 भारत की प्राचीन लिपियाँ-ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि 68

इकाई : 3 देवनागरी लिपि- उद्‌भव और विकास 76

इकाई : 4 देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, देवनागरी लिपि का मानकीकरण 81

BLOCK-04 भाषा विज्ञान- स्वरूप, परिभाषा, वर्गीकरण 88

इकाई : 1 भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की पद्धति और स्वरूप 89

इकाई : 2 भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण की इकाइयाँ-वाक्य विज्ञान, रूप विज्ञान 96

इकाई : 3 स्वनिम विज्ञान-स्वरूप, भेद, स्वनिम परिवर्तन 105

इकाई : 4 अर्थ विज्ञान-स्वरूप, भेद 112

हिन्दी भाषा-उद्‌भव और विकास

BLOCK-01

Block Content

Unit 1: भाषा की उत्पत्ती एवं परिभाषा

Unit 2: संसार की भाषाओं का वर्गीकरण

Unit 3: हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ- वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ

Unit 4: मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ- पाली, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ

इकाई : 1

भाषा की उत्पत्ती एवं परिभाषा

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषा की उत्पत्ति के बारे में जान पाता है
- भाषा और भाषा की परिभाषा को समझता है
- भाषा के विविध रूपों से परिचित होता है
- भाषा की उत्पत्ति सम्बंधित सिद्धांतों से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

मानव सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के नाते उसे आपस में सर्वदा ही विचार-विनिमय करना पड़ता है कभी वह शब्दों या वाक्यों द्वारा अपने आप को प्रकट करता है तो कभी सिर हिलाने से उस का काम चल जाता है। रेलवे गार्ड और रेल-बालक का विचार-विनिमय झंडियों से होता है। हाथ से संकेत, करतल-ध्वनि, आँख टेढ़ी करना,मारना या दबाना गहरी साँस लेना आदि अनेक प्रकार के साधनों से हमारे विचार-विनिमय का काम चलता है। हमारे पाँच ज्ञान-इंद्रियों में किसी के भी माध्यम से अपनी बात कही जा सकती है। किन्तु इन सभी में सबसे अधिक प्रयोग कर्ण-इंद्रिय का होता है। अपनी सामान्य बातचीत में हम इसी का प्रयोग करते है। वक्ता बोलता है और श्रोता सुनकर विचार या भाव को ग्रहण करता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

दैवी उत्पत्ती सिद्धांत, यो है हो सिद्धांत, गुप्त भाषा, साहित्यिक भाषा

Discussion / चर्चा

'भाषा' शब्द का सम्बन्ध 'भाष' (बोलना) धातु से है। अर्थात् 'भाषा' का शब्दार्थ है 'जिसे बोला जाय। किन्तु मोटे रूप से उन सभी साधनों को भाषा कहते हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य अपने विचारों को व्यक्त करता या सोचता है।'

1.1.1 भाषा की उत्पत्ति

भाषा की उत्पत्ति का सम्बंध इस बात से है कि मानव ने सर्वप्रथम किस काल में अपने

मुख से निसृत होनेवाली ध्वनियों को वस्तुओं-पदार्थो, भावों से जोड़ा। इतिहास के किस काल में मानव ने सामूहिक स्तर पर यह निश्चय किया कि किस शब्द का क्या अर्थ होगा। 'भाषा की उत्पत्ति' का प्रश्न भाषा-विज्ञान की विचार-सीमा में नहीं आता। विज्ञान जो पदार्थ का तात्विक विश्लेषण करके यह बता देगा कि यह भाषा किस वर्ग की भाषा है। उसके गुण-दोषों की चर्चा कर देगा पर उसके जन्म का प्रश्न दर्शनशास्त्र की सीमा में जाता है। आजकल के भाषा वैज्ञानिक भाषा की उत्पत्ति के प्रश्न को भाषाविज्ञान की सीमा में नहीं मानते। भाषा की उत्पत्ति (The Origin Theory of Language) के सम्बन्ध में सबसे प्राचीन मत यह है कि संसार की अनेकानेक वस्तुओं की रचना जहाँ भगवान ने की है। भाषा की उत्पत्ति संस्कृत के 'भाष' शब्द से हुई जिसका अर्थ है बोलना, यानि जब हमने बोलना सीखा उसी समय भाषा का भी जन्म हो गया।

भाषा की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों ने दो प्रकार के विचार-मार्ग अपनाए हैं जिन्हें प्रत्यक्ष मार्ग और परोक्ष मार्ग कहा जाता है-

▶ भाषा की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों में दो मत

प्रत्यक्ष मार्ग जिसमें भाषा की आदिम अवस्था से चल कर उसकी वर्तमान तक विकसित दशा का विचार किया जाता है।

परोक्ष मार्ग जिसमें भाषा की आज की विकसित दशा से पीछे की ओर चलते हुए उसकी आदिम अवस्था तक पहुंचने का प्रयास किया जाता है।

1.1.2 भाषा की उत्पत्ती से जुड़े सिद्धांत

भाषा क्या है। यह जानने के पहले यह देखा जा सकता है कि उस की उत्पत्ती कैसे हुई। भाषा की उत्पत्ती की समस्या की ओर बहुत पहले से लोगों का ध्यान जाता रहा है। किन्तु इसका कोई संतोषजनक और सर्वमान्य उत्तर ढूँढना कठिन है। वस्तुतः भाषा की उत्पत्ती इतने प्राचीन काल में हुई कि उस के बारे में व्यवस्थित रूप से विचार करने के लिए हमारे पास कोई आधार नहीं है। यों इस सम्बन्ध में अनेक मत व्यक्त किये गए हैं जिन में कुछ प्रमुख निम्नांकित है।

1. दैवी उत्पत्ती सिद्धांत
2. धातु सिद्धांत
3. निर्णय सिद्धांत
4. अनुकरण सिद्धांत
5. मनोभावाभिव्यक्ति सिद्धांत
6. यो है हो सिद्धांत
7. इंकित सिद्धांत
8. संपर्क सिद्धांत
9. समन्वित रूप

▶ भावाभिव्यंजक, अनुकरणात्मक तथा प्रतीकात्मक भाषा

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आज तक जितने भी सिद्धांत सामने आये हैं या इस क्षेत्र में जो कुछ भी काम हुआ है उस के आधार पर इतना ही कहना संभव है की भाषा की उत्पत्ती भावाभिव्यन्जक, अनुकरणात्मक तथा प्रतीकात्मक शब्दों से हुई हैं। मानव विकास के साथ-साथ भाषा का भी विकास होता आया है।

1.1.3 भाषा की परिभाषा

भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी भाषा-समाज के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं। उपर्युक्त परिभाषा में निम्नलिखित बातें ध्यान देने की है।

- ▶ भाषा ध्वनिमूलक होती है।
- ▶ भाषा में प्रयुक्त ध्वनियाँ उच्चारण अवयवों से उच्चरित होती है।
- ▶ भाषा एक व्यवस्था है।
- ▶ भाषा प्रतीकात्मक होती है।
- ▶ प्रतीक यादृच्छिक होती है।
- ▶ भाषा किसी विशेष या सीमित भाषिक समाज की होती है।
- ▶ भाषा विचार विनिमय का साधन होती है।

▶ उच्चारण अवयवों से उच्चारित ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्था

1.1.4 भाषा के विविध रूप

संसार में भाषा के विविध रूप या विभिन्न प्रकार मिलते हैं। ये विभिन्न रूप निम्नांकित आधारों पर बनते हैं।

इतिहास के आधार पर- मूलभाषा, प्राचीन भाषा, मध्यकालीन भाषा, आधुनिक भाषा आदि।

भूगोल के आधार पर- व्यक्ति बोली, स्थानीय बोली, विभिन्न शहरों की भाषा जैसे बनारसी, विभिन्न क्षेत्रों की भाषा जैसे ब्रज, अवधि, भोजपुरी आदि। किसी देश के विभिन्न प्रदेशों की भाषा जैसे पंजाबी, गुजराती आदि तथा विभिन्न देशों की भाषा-चीनी, जापानी आदि।

निर्माता के आधार पर- चोरों की भाषा, डाकुओं की भाषा, दलालों की भाषा आदि।

प्रयोगों के आधार पर- राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, वकीलों की भाषा, खेल-कूद की भाषा, डाक्टरों की भाषा आदि।

शुद्धता के आधार पर- शुद्ध भाषा, अशुद्ध भाषा, मानक भाषा, अमानक भाषा।

शीलता के आधार पर- शील भाषा, अश्लील भाषा।

प्रचलन के आधार पर- मृत भाषा, जीवित भाषा, प्रचलित भाषा, अप्रचलित भाषा।

मिश्रण के आधार पर- मिश्रित भाषा, अमिश्रित भाषा।

धर्म के आधार पर- हिंन्दू भाषा, मुस्लिम भाषा, ईसाई भाषा।

बोध गम्यता के आधार पर- क्लिष्ट भाषा, सरल भाषा, गुप्त भाषा।

श्रवण के आधार पर- मधुर भाषा या कर्कश भाषा।

रचना के आधार पर- योगात्मक भाषा, संयोगात्मक भाषा।

भाषा के ऊपर गिनाये गए रूपों में कुछ प्रमुख पर यहाँ विचार करना ज़रूरी है।

1. **मूल भाषा-** मूल भाषा उस भाषा को कहते हैं जिस से बहुत सी भाषाएँ निकली हो। उदहारण के लिए उत्तरी भारत की मूल भाषा संस्कृत है। जिससे पाली, प्राकृत, अपभ्रंश

होते हुए हिन्दी, मराठी, बंगाली आदि।

2. **व्यक्ति बोली (Dialect)**- हर व्यक्ति की अपनी भाषा या बोली अन्यों से भिन्न होती है। उदाहरण के लिए हिन्दी बोलने वाले जितने भी लोग हैं यों तो वे एक भाषा हिन्दी बोलते हैं। किन्तु हर व्यक्ति की हिन्दी अपनी व्यक्तिगत विशेषता लिए रहती है। किसी भी एक व्यक्ति की भाषा 'व्यक्ति बोली' या 'व्यक्ति भाषा' कहलाती है।
3. **स्थानीय बोली (Local Dialect)**- किसी अत्यंत छोटे क्षेत्र की बोली कभी-कभी अपनी विशेषता लिए रहती है, जिसे स्थानीय बोली कहते है। उदाहरण के लिए 'बनारसी' स्थानीय बोली है जो बनारस शहर में बोली जाती है।
4. **उपबोली (Sub Dialect)**- कभी-कभी कई स्थानीय बोलियों के सामूहिक रूप को उपबोली कहते हैं। किसी एक बोली के क्षेत्र में कई उपबोलियाँ हो सकती है। जैसे ब्रज भाषा के क्षेत्र में भुक्सा, डांगी आदि उपबोलियाँ बोली जाती है।
5. **बोली (Dialect)**- किसी भाषा के क्षेत्र में बोले जाने वाले उस भाषा के उपरूप को बोली कहा जाता है। उदाहरण के लिए हिन्दी भाषा क्षेत्र में अवधि, ब्रज आदि बोलियाँ हैं।
6. **उपभाषा (Sub Language)**- कभी-कभी कुछ भाषाओं के अंतर्गत कुछ ऐसे बड़े उपरूप मिलते हैं, जिनमें हर एक के अंतर्गत कई बोलियाँ होती हैं। इन्हें 'उपभाषा' कहा जाता है। उदाहरण के लिए हिन्दी के अंतर्गत पाँच उपभाषाएँ मानी गयी है। पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी तथा बिहारी।
7. **मानक भाषा (Standard Language)**- प्रयोग की दृष्टि से किसी भाषा का आदर्श रूप मानक भाषा कहलाता है। भाषा का यही रूप उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शिक्षा, प्रशासन, साहित्य रचना तथा औपचारिक विचार-विनिमय का माध्यम होता है।
8. **राजभाषा (Official Language)**- किसी देश के राज-काज या प्रशासन में जिस भाषा का प्रयोग होता है, उसे राजभाषा कहते हैं। भारतीय संविधान के अनुसार हिन्दी भारत की राजभाषा है। जिसका अर्थ यह है कि केंद्र अपना कार्य हिन्दी में करे साथ ही विभिन्न प्रदेशों से शासन सम्बन्धी प्रत्र-व्यवहार भी हिन्दी के माध्यम से करें।
9. **संपर्क भाषा (Link Language)**- जो भाषा ऐसे व्यक्तियों या प्रदेशों में संपर्क का माध्यम बने जिनकी भाषाएँ एक न हो उसे संपर्क भाषा कहते हैं।
10. **राष्ट्रभाषा (National Language)**- प्रायः लोग राजभाषा और राष्ट्रभाषा को एक समझते हैं। किन्तु दोनों में अंतर है। राजभाषा का प्रयोग तो राज-काज में होता है। किन्तु राष्ट्रभाषा का प्रयोग उसके बहार भी होता है।
11. **गुप्त भाषा (Secret Language /Code Language)**- सामान्यतः भाषा सामान्य समाज की होती है। किन्तु गुप्त भाषा विशेष वर्ग की होती है। इसका उद्देश्य होता है आपसी विचार विनिमय को सामान्य लोगों से छिपाए रखना। उदाहरण के लिए चोर, डाकू, दलाल तथा सेना ऐसी भाषाओं को प्रयोग करते हैं जिन्हें दूसरे न समझ सकें।
12. **कृत्रिम भाषा (Artificial Language)**- कृत्रिम भाषा का प्रयोग कभी-कभी उपर्युक्त प्रकार की गुप्त भाषाओं के लिए होता है जो सहज न होकर कुछ तोड़ी-मरोड़ी जाती है। कई लोगों ने पूरे विश्व के लिए अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में ऐसी कृत्रिम भाषाएँ बनायीं है। ऐसी भाषाओं में सर्वाधिक प्रसिद्ध भाषा 'एस्परेंतो' है।
13. **साहित्यिक भाषा**- इस का प्रयोग साहित्य तक सीमित रहा है। यह प्रायः व्याकरण और शब्दावली की दृष्टि से बोलचाल की भाषा से भिन्न होती है। बोलचाल की भाषा में भाषा

▶ विचार-विनिमय के लिए भाषा का प्रयोग

की नवीनतम प्रवृत्तियों को स्थान मिलता है, किन्तु इस में प्रायः वे नहीं आने पाती।

1.1.5 भाषा और बोली में अंतर

▶ शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में बोली का विशेष महत्व

'बोली' मुख्य रूप से भाषा का वह स्वरूप होता है जिसका उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में वार्तालाप करने हेतु किया जाता है। विश्व भर में बोली जाने वाली विभिन्न प्रकार की बोलियाँ सांस्कृतिक एवं राजनीतिक आधार पर अपने क्षेत्र का विकास कर सकती हैं। जब किसी क्षेत्रीय बोली में साहित्य की रचना का विस्तार होता है तो उसे उपभाषा के नाम से जाना जाता है। शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में बोली का विशेष महत्व होता है। विश्व भर में बोली जाने वाली अनेक बोलियाँ मिलकर भाषा को समृद्ध करने का कार्य करती हैं। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 650 से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं।

▶ सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सामाजिक मान्यताएँ

किसी भाषा में साहित्य प्रचुर मात्रा में होता है जबकि बोली में साहित्य का आभाव होता है। भाषा का क्षेत्र मुख्य रूप से विस्तृत होता है परन्तु बोली का क्षेत्र सीमित होता है। भाषा का प्रयोग राज कार्य या प्रशासनिक कार्यों में किया जाता है जबकि बोली का उपयोग आम बोलचाल में किया जाता है। भाषा विभिन्न प्रकार की बोलियों से मिलकर बनाई गयी है परन्तु बोली का स्वरूप स्वतंत्र होता है वह किसी भी भाषा से संबंध नहीं रखती है। भाषा को सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं सामाजिक मान्यताएँ प्राप्त होती हैं जबकि बोली को किसी भी प्रकार की मान्यता की आवश्यकता नहीं होती। भाषा में राजभाषा का दर्जा प्राप्त है परन्तु बोली को राजभाषा का दर्जा नहीं दिया गया है। भाषा को लिपि की आवश्यकता होती है परन्तु बोली को किसी भी प्रकार की लिपि की आवश्यकता नहीं होती।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

भाषा के बारे में बात करें तो इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में कोई निश्चित मत का प्रतिपादन करना सम्भव नहीं है। जैसा कि इसके पूर्व के लेख में हमने बताया है और यह सर्वविदित भी है कि संसार के जीवधारियों के जन्म और विकास के साथ-साथ भाषा की उत्पत्ति और विकास की गाथा अभिन्नतः जुड़ी हुई हैं। भाषा विदों का मानना है कि शुरुआत में मनुष्य द्वारा संकेतों का प्रयोग किया जाता था, जिनके माध्यम से ही वह अपने विचार प्रकट करता था और दूसरों के भावों व विचार समझ लेता था। मानव की शिक्षा, सभ्यता व संस्कृति के विकास के साथ-साथ भाषा के ये संकेत भी बदलते गये और संकेतों का स्थान ध्वनियों ने ले लिया, ये ध्वनियाँ ही आगे चलकर शब्द और वाक्य के रूप में परिवर्तित हो गई और भाषा का मौखिक रूप जिसे हम वाचिक या कथित भी कह सकते हैं इसका प्रचलन बढ़ा। धीरे-धीरे मानव ने इन ध्वनियों के लिये लिपि का आविष्कार भी कर लिया और फिर इसका लिखित रूप भी सामने आया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भाषा की परिभाषा और उत्पत्ती के बारे में अपना मत व्यक्त कीजिए।
2. भाषा के विविध रूपों के बारे में टिप्पणी लिखिए।
3. भाषा क्या है और भाषा की उत्पत्ति संबंधित सिद्धान्तों के बारे में व्यक्त कीजिए।

4. राजभाषा और राष्ट्रभाषा से क्या तात्पर्य है?
5. भाषा और बोली में क्या अंतर है? अपना मत प्रकट कीजिए।
6. गुप्त भाषा और क्रित्रिम भाषा के बारे में टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्‌भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Video

https://www.youtube.com/watch?v=f1cXP__o15s

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2 संसार की भाषाओं का वर्गीकरण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषा परिवार को जानता है
- भाषा के वर्गीकरण के बारे में समझता है
- भारोपीय परिवार से परिचित होता है
- योगात्मक, अयोगात्मक भाषाओं को जानता है

Background / पृष्ठभूमि

भाषा के वर्गीकरण के मुखयतः दो आधार हैं- आकृतिमूलक और अर्थतत्त्व सम्बन्धी। प्रथम के अन्तर्गत शब्दों की आकृति अर्थात् शब्दों और वाक्यों की रचनाशैली की समानता देखी जाती है। दूसरे में अर्थतत्त्व की समानता रहती है। इनके अनुसार भाषाओं के वर्गीकरण की दो पद्धतियाँ होती हैं- आकृतिमूलक और पारिवारिक या ऐतिहासिक।

Keywords / मुख्य बिन्दु

योगात्मक, अयोगात्मक, सतम वर्ग, केन्तुम वर्ग

Discussion / चर्चा

जिस प्रकार मनुष्यों का परिवार होता है, उसी प्रकार भाषाओं का भी परिवार होता है। ऐसी भाषाओं का समूह, जिन का जन्म किसी एक मूल भाषा से हुआ हो, भाषा परिवार कहलाता है। एक ही मूल भाषा से जन्म लेने के कारण इनमें कई समानताएँ होती हैं। जैसे भारोपीय, द्रविड़, तिबत्त, बर्मी और आग्रेय आदि।

1.2.1 विभिन्न भाषा परिवार के वर्गीकरण

संसार की भाषाओं का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जा सकता है।

1. **महाद्वीप के आधार पर-** जैसे एशियाई भाषाएँ, यूरोपीय भाषाएँ तथा आफ्रीकी भाषायें आदि।
2. **देश के आधार पर-** जैसे चीनी भाषाएँ तथा भारतीय भाषाएँ आदि।

संसार की भाषाओं के वर्गीकरण का आधार

3. **धर्म के आधार पर-** जैसे मुसलमानी भाषाएँ, हिन्दू भाषाएँ तथा ईसाई भाषाएँ आदि।
4. **काल के आधार पर-** जैसे प्रागैतिहासिक भाषाएँ, प्राचीन भाषाएँ, मध्ययुगीन भाषाएँ तथा आधुनिक भाषाएँ आदि।
5. **भाषाओं के आकृति के आधार पर-** जैसे योगात्मक तथा अयोयोगात्मक भाषाएँ।
6. **परिवार के आधार पर-** जैसे भारोपीय परिवार की भाषाएँ, एकाक्षर परिवार की भाषाएँ, द्रविड़ परिवार की भाषाएँ आदि।
7. **प्रभाव के आधार पर-** जैसे संस्कृत-प्रभावित भाषाएँ तथा फ़ारसी-प्रभावित भाषाएँ आदि।

भाषाओं के परिवार- निर्धारण के लिए इन बातों पर विचार करना होता है: (क) ध्वनि (ख) पद-रचना (ग) वाक्य-रचना (घ) अर्थ (ङ) शब्द-भण्डार (च) स्थानिक निकटता। इन छः आधारों पर भाषाओं का परीक्षण करने पर कहा जा सकता है कि वे एक परिवार की हैं या नहीं। विश्व में जो भाषाएँ अधिकृत रूप से जानी जाती हैं, उन्हें मुख्यतः बारह परिवारों में विभाजित किया गया है:

सेमेटिक कुलः हजरत नोह के सबसे बड़े पुत्र 'सैम' के नाम के अनुसार इस परिवार का नामाभिधान हुआ है। इस कुल की भाषाओं का क्षेत्र फ़िलिस्तीन, अरब, इराक़, मध्य एशिया तथा मिस्र, इथियोपिया, अल्जीरिया, मोरोक्को तक माना जाता है। यहूदियों की प्राचीन भाषा हिब्रू तथा अरबी इसी परिवार की भाषाएँ हैं।

हेमेटिक परिवारः हामी परिवार को ही हेमेटिक परिवार कहा जाता है। इस परिवार की प्रमुख भाषाओं में कुशीन, लीबियन, सोमाली तथा हौसा आदि शामिल हैं।

तिब्बती-चीनी कुलः नाम से ही स्पष्ट है कि तिब्बत तथा चीन में इसकी प्रधानता है। जापान को छोड़कर दूसरे सभी बौद्ध धर्मावलम्बी देशः चीन, बर्मा, थाईलैंड में इस परिवार की भाषाएँ बोली जाती है।

युराल-अल्ताई परिवारः इस भाषा परिवार का लोगों के युराल तथा अल्ताई पर्वतों में निवास करने के कारण यह नामाभिधान हुआ है। इस परिवार की भाषाएँ चीन के उत्तर में मंचूरिया, मंगोलिया, साइबेरिया आदि। तुर्की, तातारी, मंचू, मंगोली, और किर्गिज़ प्रमुख भाषाएँ हैं।

द्रविड़ परिवारः द्रविड़ जाति द्वारा बोली जाने वाली समस्त भाषाओं का सामूहिक नाम द्रविड़ परिवार है। इस कुल की भाषाएँ बोलने वाले मुख्य रूप से दक्षिण भारत तथा लक्षद्वीप के निवासी हैं। इस कुल की मुख्य भाषाएँ- तमिल, मलयालम, तेलुगु तथा कन्नड़।

ऑस्ट्रोनेशियाई कुलः इस परिवार की प्रमुख भाषाओं में शामिल हैं इंडोनेशिया तथा मलेशिया की मलय, फ़ीजी की फ़ीजीयन, जावा की जावानीज़ तथा न्यूज़ीलैण्ड की माओरी, आदि।

बाँटु परिवारः बाँटु का अर्थ है 'मनुष्य।' 'बाँटु' अफ्रिकी खण्ड का भाषा परिवार है। इस परिवार की मुख्य भाषाओं में ज़ुलु, काफ़िर, सेंसतों, स्वाहिली, आदि।

काकेशीय कुलः कैस्पियन सागर के मध्य कौकेशस पहाड़ के निकटवर्ती प्रदेश इस कुल की भाषाएँ हैं। इसकी मुख्य भाषा जार्जियन है।

अमेरिकी भाषा-परिवारः इसमें उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका के मूल निवासियों की करीब चार सौ भाषाएँ आती हैं, कुकूचुला और गुअर्नी प्रमुख हैं।

फ़िनो-यूग्रिक कुलः यह क्षेत्र हंगेरी, फिनलैण्ड, एस्टोनिया, लेयलैण्ड आदि प्रमुख भाषाएँ फ़िनिश, हंगेरियन हैं।

एस्किमो भाषा कुलः ग्रीनलैंड तथा एलुशियन द्वीपमाला का प्रदेश आते हैं। जिसका सम्बन्ध उत्तरी अमेरिका से जुड़ा है।

▶ भाषाओं के विभिन्न परिवार

हिन्द-यूरोपीय परिवारः यह परिवार भारत से यूरोप तक फैला है। इसलिए इसे हिन्द-यूरोपीय परिवार कहा गया है। इस परिवार को 'आर्य परिवार' तथा 'इण्डो-यूरोपियन' परिवार के नामों से भी जाना जाता है। यह परिवार विश्व के सभी भाषा-परिवारों से अधिक बड़ा होने के साथ अत्यंत समृद्ध एवं उन्नत मानी जाती हैं। समस्त यूरोप, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, नेपाल, रूस तथा दक्षिण भारत को छोड़कर शेष सभी भारतवर्ष में बोली जाती हैं। यूनानी, अवस्ता, लैटिन, पाली, संस्कृत आदि प्रसिद्ध भाषाएँ इस परिवार की हैं।

1.2.2 आकृतिमूलक वर्गीकरण, योगात्मक-अयोगात्मक

भाषा को मुख्य रूप से दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है- आकृतिमूलक वर्गीकरण और पारिवारिक वर्गीकरण। भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का आधार है या फिर दूसरे शब्दों में कहें तो भाषा लोगों के मौखिक और लिखित माध्यम की संप्रेषण प्रणाली है। इंसानों ने कई हजारों सालों के दौरान अपने विचारों, कल्पनाओं और मनोभावों को व्यक्त करने के लिए ध्वनि एवं लेखन की प्रणाली विकसित की है।

▶ आकृतिमूलक वर्गीकरण और पारिवारिक वर्गीकरण

भाषा विद्वानों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार विभिन्न आधारों पर भाषाओं का वर्गीकरण किया, जैसे कि, देश, काल, धर्म, महाद्वीप, आकृति और परिवार आदि। हालांकि इनमें से बहुत सारे वर्गीकरण आज स्वीकार नहीं किए जाते हैं क्योंकि उसका वर्गीकरण तर्कसंगत नहीं लगता है; उदाहरण के लिए, देश के आधार पर भाषा के वर्गीकरण को लें तो इसके अंतर्गत मात्र एक देश के अंदर बोलनेवाली भाषा आती है, लेकिन ये इसलिए असंगत लगता है क्योंकि प्रवास के कारण आज एक देश की भाषाएँ दूसरे देश में भी बोली जाने लगी है। और दूसरी बात कि ये जरूरी भी तो नहीं है कि एक देश में सिर्फ एक ही भाषा बोली जाती हो, जैसे कि भारत को ही लें ले तो यहाँ इतनी भाषाएँ बोली जाती है कि ये कहना कि ये अमुक भाषा सिर्फ इस देश की भाषा है; असंभव है। लेकिन वहीं आकृति के आधार पर और परिवार के आधार पर भाषा का वर्गीकरण आज मान्य है। ये दो महत्वपूर्ण भाषा का वर्गीकरण है जो कि भाषा के बारे में बहुत सारी चीज़ें पूर्ण रूप से स्पष्ट कर देती है।

1.2.2.1 योगात्मक

आकृतिमूलक वर्गीकरण का सम्बन्ध अर्थ से नहीं होता; उसका सम्बन्ध शब्द की केवल बाह्य आकृति, रूप या रचना-प्रणाली से होता है। इसलिए इस वर्गीकरण में उन भाषाओं को एक साथ रखा जाता है जिनके पदों या वाक्यों की रचना का ढंग एक होता है। पद या वाक्य की रचना को ध्यान में रखकर इस वर्गीकरण को पदात्मक या वाक्यात्मक भी कहते हैं। अंग्रेजी में इसे 'morphological' कहते हैं। आकृतिमूलक के दो प्रमुख भेद हैं: 1. अयोगात्मक और 2. योगात्मक। योगात्मक शब्द से स्पष्ट है, इस वर्ग की भाषाओं में प्रकृति-प्रत्यय के योग से

शब्दों की निष्पत्ति होती है। योगात्मक के तीन प्रमुख भेद हैं:

- अश्लिष्ट योगात्मकः अश्लिष्ट योगात्मक भाषाओं में अर्थतत्व के साथ रचनातत्व का योग होता है। इस वर्ग की भाषा तुर्की है।
- श्लिष्ट योगात्मकः श्लिष्ट योगात्मक वर्ग में वे भाषाएँ आती हैं जिनमें रचनात्मक के योग से अर्थतत्व वाले अंश में कुछ परिवर्तन हो जाता है, जैसेः 'नीति', 'वेद'।
- प्रश्लिष्ट योगात्मकः प्रश्लिष्ट योगात्मक भाषा वह है जो जिसमें अर्थतत्व और रचनातत्व का ऐसा मिश्रण हो जाता है कि उनका पृथक्करण सम्भव नहीं होता। इस वर्ग की भाषाओं में अनेक अर्थतत्वों का थोड़ा-थोड़ा अंश काटकर एक शब्द बन जाता है। जैसे 'जिगमिषति' = 'वह जाना चाहता है'।

▶ अयोगात्मक और योगात्मक

1.2.2.2 अयोगात्मक

'अयोग' शब्द से स्पष्ट है, इस वर्ग की भाषाओं में 'योग' नहीं रहता अर्थात् शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय आदि जोड़कर अन्य शब्द, या वाक्य में प्रयुक्त होने योग्य रूप नहीं बनाये जाते। संस्कृत में 'राम' में 'एण' प्रत्यय जोड़कर 'रामेण' बनाया जाता है या हिन्दी में 'मुझे दो' वाक्य में प्रयोग करने के लिए 'मैं' में कुछ जोड़-घटाकर 'मुझे' बनाया पड़ता है। पर योगात्मक भाषाओं में इस प्रकार के योग की आवश्यकता नहीं पड़ती। उस में किसी भी शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता। वाक्य में स्थान के अनुसार शब्दों का अर्थ लगा लिया जाता है। इसीलिए इन भाषाओं को 'स्थान-प्रधान' भी कहते हैं। अयोगात्मक भाषा उसे कहते हैं जिसमें प्रकृति-प्रत्यय जैसी कोई चीज़ नहीं होती है और न शब्दों में कोई परिवर्तन होता है। प्रत्येक शब्द की स्वतंत्र सत्ता होती है और वाक्य में प्रयुक्त होने पर भी वह सत्ता ज्यों-की-त्यों रहती है। इसलिए इस वर्ग की भाषा में शब्दों का व्याकरणिक विभाजन नहीं होता अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, आदि कोटियाँ नहीं होती। योगात्मक भाषाओं को निरवयव भाषाएँ भी कहते हैं।

▶ प्रकृति-प्रत्यय और न शब्दों में कोई परिवर्तन

1.2.3 पारिवारिक वर्गीकरण

भाषाओं का एक अंतरंग संबंध भी है जो केवल बाह्य रचना तक ही सीमित नहीं, बल्कि अर्थ को आधार बनाकर चलता है। जिस प्रकार एक पूर्वज से उत्पन्न सभी मनुष्य एक गोत्र के माने जाते हैं, उसी प्रकार एक भाषा से कालांतर में अनेक सगोत्र भाषाओं की उत्पत्ति भी होती है जो एक परिवार में रखी जाती हैं। अतः यहाँ उत्पत्ति का अर्थ सहसा आविर्भाव नहीं, बल्कि क्रमिक विकास समझना चाहिए।

▶ रचनातत्व और अर्थतत्व के आधार पर

हमने देखा है कि केवल रचनातत्व के आधार पर भाषा का जो वर्गीकरण होता है वह आकृतिमूलक वर्गीकरण है, पर रचनातत्व और अर्थतत्त्व के सम्मिलित आधार पर किया गया वर्गीकरण पारिवारिक वर्गीकरण कहलाता है।

1.2.4 भारोपीय परिवार

भारत से लेकर प्रायः पूरे यूरोप तक बोले जाने के कारण इस परिवार को 'भारोपीय परिवार' कहते हैं। यह परिवार एशिया में भारत, बंगलादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, इरान, यूरोप में रूस, रूमानिया, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन, इंग्लैंड, जर्मनी आदि, तथा अमेरिका, कानडा, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के अनेक भागों में बोला जाता है।

1.2.4.1 शाखाएँ

प्राचीन-संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन फ्रांसीसी, आवेस्ता, ग्रीक लैटिन आदि।

आधुनिक-अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, स्पेनी, फ्रांसिसी, पुर्तगाली, इतावली, फारसी, हिन्दी, बंगला, गुजराती, माराठी आदि।

1.2.4.2 भारोपीय भाषा परिवार का वर्गीकरण

भारोपीय भाषा परिवार विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में सर्वप्रमुख भाषा परिवार है। इसके बोलने वालों की संख्या विश्व में सबसे ज़्यादा है। इस भाषा परिवार की प्रमुख भाषाएँ संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, बंगाली, फ़ारसी, ग्रीक, लेटिन, अंग्रेज़ी, रूसी, जर्मन, पुर्तग़ाली और इतालवी इत्यादि हैं।

हिन्द यूरोपीय शाखाओं को मुख्यतः दो वर्गों में रखा जाता हैः केन्तुम वर्ग और सतम वर्ग।

1.2.4.2.1 सतम वर्ग

- इस वर्ग की प्राचीन भाषाओं में आदि-हिन्द-यूरोपीय भाषा के व्यंजनः क्य, ग्य और घ्य, स्पर्श-संघर्षी या संघर्षी व्यंजनों में बदल गये, जैसेः च, ज, स और श।
- साथ ही साथ, आदि-हिन्द-यूरोपीय भाषा के व्यंजनः क्व, ग्व और घ्व, इनमें विलय हो गयेः क, ग और घ। इनमें बाल्टिक, स्लाव, हिन्द ईरानी, अरमेनियाई और अल्बानियाई शाखाँ आती हैं। संस्कृत इसी वर्ग में आती है।

1.2.4.2.2 केन्तुम वर्ग

- इस वर्ग की प्राचीन भाषाओं में आदि-हिन्द-यूरोपीय भाषा के व्यंजनः क्व, ग्व और घ्व वैसे ही परिरक्षित रहे।
- आदिम-हिन्द-यूरोपीय भाषा के व्यंजनः क्य, ग्य और घ्य, इनमें विलय हो गयेः क, ग और घ। इनमें इटैलिक, यूनानी, केल्टिक और जर्मनिक शाखाएँ आती हैं।

1.2.4.3 भारोपीय परिवार की विशेषताएँ

- सभी प्राचीन हिन्द-यूरोपीय भाषाओं में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के कई शब्द-रूप होते थे, जो वाक्य में इनका व्याकरणिक रूप दिखाते थे।
- अधिकतर ये शब्द-रूप शब्द के अन्त में प्रत्यय द्वारा बनाये जाते थे।
- रोज़मर्रा की चीज़ों, सगे-सम्बन्धियों, सामान्य जानवरों, क्रियाओं के लिये काम आने वाले शब्द इस परिवार की सभी प्राचीन भाषाओं में एक दूसरे से बहुत मिलते-जुलते थे और इस आधार पर भाषाविदों ने आदिम-हिन्द-यूरोपीय भाषा की परिकल्पना की।
- इन विभिन्न भाषाओं के शब्दों के रूप इसलिए मिलते-जुलते थे क्योंकि यह एक ही प्राचीन जड़ से उत्पन्न हुए सजातीय शब्द थे।

- संसार का सबसे बड़ा भाषा परिवार

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

संसार में जितनी भाषाएँ बोली जाती हैं उनकी निश्चित संख्या ज्ञात नहीं हैं, किन्तु अनुमान किया जाता है कि 3, 000 के लगभग भाषाएँ हैं। वस्तुतः भाषाओं की निश्चित संख्या बताना असंभव है, क्योंकि यह वही बता सकता है जो सारी भाषाओं को जानता हो और एक भाषा से दूसरी भाषा के अन्तर से परिचित हो। वर्गीकरण से किसी वस्तु के अध्ययन में सहायता मिलती है। संसार की भाषाओं के वर्गीकरण के कई आधार हो सकते हैं, किन्तु भाषा-विज्ञान की दृष्टि से दो ही आधार माने गये हैंः आकृतिमूलक और पारिवारिक। भाषाओं का एक अंतरंग संबंध भी है जो केवल बाह्य रचना तक ही सीमित नहीं, बल्कि अर्थ को आधार बनाकर चलता है। जिस प्रकार एक पूर्वज से उत्पन्न सभी मनुष्य एक गोत्र के माने जाते हैं, उसी प्रकार एक भाषा से कालांतर में अनेक सगोत्र भाषाओं की उत्पत्ति भी होती है जो एक परिवार में रखी जाती हैं। अतः यहाँ उत्पत्ति का अर्थ सहसा आविर्भाव नहीं, बल्कि क्रमिक विकास समझना चाहिए। हमने देखा है कि केवल रचनातत्व के आधार पर भाषा का जो वर्गीकरण होता है वह आकृतिमूलक वर्गीकरण है, पर रचनातत्व और अर्थतत्व के सम्मिलित आधार पर किया गया वर्गीकरण पारिवारिक वर्गीकरण कहलाता है।

भारोपीय भाषा परिवार को 'केंतुम' और 'शतम' वर्गों के रूप में जाना जाता है। यह विभाजन पश्चिमी और पूर्वी भाषाओं के रूप में किया गया है। पूर्वी भाषाएँ 'केंतुम' वर्ग और पश्चिमी भाषाएँ 'शतम' वर्ग के रूप में चिह्नित कि गई हैं। शतम वर्ग को भारत-ईरानी, आर्य भाषा परिवार के रूप में भी जाना जाता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. विभिन्न भाषा परिवार की जानकारी दीजिए।
2. भारोपीय भाषा परिवार का वर्गीकरण कैसे हुआ है? और भारोपीय परिवार की विशेषताएँ अपने मत पर व्यक्त कीजिए।
3. आकृतिमूलक वर्गीकरण से क्या तात्पर्य है?
4. भाषा परिवर के वर्गीकरण पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
5. आकृतिमूलक, योगात्मक और अयोगात्मक में अंतर क्या है?

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Video link
https://www.youtube.com/watch?v=CsihYoqgU08

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3 हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ- वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ।

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- हिन्दी भाषा के उद्‌भव से संबंधित जानकारी प्राप्त करता है
- भारत में प्रयोग किए जानेवाले विभिन्न भाषा परिवार को समझता है
- भाषा परिवार के विभिन्न वर्गीकरण से जानकारी प्राप्त करता है
- प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं से अवगत होता है

Background / पृष्ठभूमि

हिन्दी एक इंडो-आर्यन भाषा है और दुनिया की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जो मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत में बोली जाती है। इसकी उत्पत्ति 8 वीं शताब्दी के मध्य भारत की एक बोली से हुई है, जिसे 'संस्कृत अपभ्रंश' के नाम से जाना जाता है। सदियों से, यह संस्कृत, फारसी, अरबी, पुर्तगाली और अंग्रेजी जैसी कई भाषाओं से प्रभावित रहा है। ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान, हिन्दी एक आधिकारिक भाषा बन गई; इसने पूरे भारत में अपना प्रभाव फैलाने में मदद की। हिन्दी भाषा ने भोजपुरी, अवधी, ब्रजभाषा, मागधी और बुंदेली सहित कई बोलियों को जन्म दिया है। आज, हिन्दी भारत में उपयोग की जाने वाली आधिकारिक भाषा है और उत्तरी भारत में रहने वाले अधिकांश लोगों द्वारा बोली जाती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, श्लिष्ट योगात्मक भाषा, भारोपीय परिवार

Discussion / चर्चा

भाषा विज्ञान के आचार्यों ने संसार की भाषाओं में एकता ढूंढ कर उनका पारिवारिक वर्गीकरण किया है। इसके परिणाम स्वरूप परस्पर संबंध रखने वाली भाषाओं को एक परिवार के अंतर्गत रखा गया है। इस संसार में मुख्यतः कुल 13 भाषा परिवार हैं- द्रविड़, चीनी, सेमेटिक, हेमेटिक, आग्नेय, यूराल-अल्टाइक, बाँटु, अमरीकी (रेड इंडियन), काकेशस, सुडानी, बुशमैन, जापानी-कोरियाई तथा भारोपीय। हिन्दी का संबंध भारोपीय परिवार से

है। यह परिवार मुख्यतः भारत तथा यूरोप और उसके आसपास फैला हुआ है। पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल, ईरान, अमेरिका का कुछ भाग तथा आस्ट्रेलिया में भी भारोपीय परिवार की भाषाएँ बोली जाती हैं।

▶ संसार का सबसे बड़ा भाषा परिवार- भारोपीय परिवार

भारोपीय (भारत और यूरोपीय) परिवार संसार का सबसे बड़ा भाषा परिवार है। भूमंडल की लगभग 350 करोड़ जनसंख्या में इस परिवार की भाषाएँ बोलने वालों की संख्या 150 करोड़ है। इसकी प्रमुख भाषाएँ संस्कृत, ग्रीक, लैटिन, अवेस्ता, अंग्रेजी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी, हिन्दी, मराठी, बंगाली आदि है।

1.3.1 प्राचीन भारतीय आर्यभाषाएँ

अधिकांश विद्वान 1500 ई. पूर्व के आसपास के काल को भारतीय आर्य भाषा का काल मानते हैं। तब से लेकर आज तक भारतीय आर्य भाषा की यात्रा लगभग 3500 वर्ष की हो चुकी है।

अधिकांश विद्वान भारतीय आर्य भाषा के इस लंबे काल को तीन भागों में बांटते हैं:-

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल (1500 ई. पूर्व से 500 ई. पूर्व तक)
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल (500 ई. पूर्व से 1000 ई. तक)
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा काल (1000 ई. से अब तक)

▶ वेदों में भारतीय आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप

भारतीय आर्य भाषा का प्राचीनतम रूप वेदों में देखा जा सकता है। इस भाषा में रूपों की अधिकता तथा नियमितता की भारी कमी है। अनेक विद्वानों ने प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का उद्भव काल महात्मा बुद्ध के जन्म से 1000 साल पहले माना है। इस आधार पर भी प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का आविर्भाव काल 1500 ई० पू० के लगभग माना जा सकता है।

1.3.2 प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का वर्गीकरण

प्राचीन भारतीय आर्य भाषा को दो वर्गों में बांटा जा सकता है:-

(क) वैदिक संस्कृत (1500 ई० पू० से 1000 ई० पू०)

(ख) लौकिक संस्कृत (1000 ई० पू० से 500 ई० पू०)

1.3.3 वैदिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ

▶ ऋग्वेद - वैदिक संस्कृत का प्राचीनतम ग्रंथ

वैदिक संहिताओं का काल मोटे तौर पर 1500 ई० पू० से 1000 ई० पू० माना जा सकता है। इसे प्राचीन संस्कृत, वैदिक संस्कृत या वैदिकी भी कहा जाता है। वेदों की संख्या चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद। यह ग्रन्थ वैदिक संस्कृत में लिखित हैं अर्थात् इन ग्रंथों की भाषा को वैदिक संस्कृत कहा जाता है। वैदिक संस्कृत का प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद है। इसमें कुल 10 मंडल हैं। इसमें अगर प्रथम और दशम मंडल को छोड़ दें तो शेष मंडलों में जिस संस्कृत का प्रयोग हुआ है उसे प्राचीनतम आर्य भाषा माना जा सकता है। भारतीय आर्य भाषा का यह रूप ईरानी भाषा 'अवेस्ता' के सर्वाधिक समीप है। ऋग्वेद के मंडलों की भाषा पारसियों के धर्मग्रंथ 'जेंद अवेस्ता' से मिलती है। पहले और दसवें मंडल की भाषा तनिक बाद की भाषा प्रतीत होती हैं। चारों वेदों के अतिरिक्त ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों आदि में भी वैदिक संस्कृत का ही प्रयोग मिलता है।

वैदिक भाषा श्लिष्ट योगात्मक भाषा थी। परसर्ग हमेशा कारकों के साथ प्रयुक्त होते थे।

वैदिक भाषा में दो प्रकार के स्वर थे- मूल स्वर तथा संयुक्त स्वर। मूल स्वरों में ह्रस्व स्वर और दीर्घ स्वर थे। वैदिक संस्कृत में स्वराघात का विशेष महत्व था। वैदिक संस्कृत में तीन प्रकार का स्वराघात था- उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित। संधि-नियमों में शिथिलता थी। वैदिक संस्कृत में तीन लिंग (पुलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग) तथा तीन वचन (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) तथा आठ कारक थे। वैदिक संस्कृत में विशेषण अपने विशेष्य के लिंग-वचन आदि के अनुरूप प्रयुक्त होते थे। वैदिक संस्कृत में संगीतात्मक तथा बलात्मक दोनों प्रकार का बलाघात था। अतः स्पष्ट है कि वैदिक संस्कृत की अपनी कुछ विशेषताएँ थी जो उसे आर्यों की मूल भाषा से पृथक करती हैं। यही भाषा आगे चलकर लौकिक संस्कृत में परिवर्तित हो गई।

▶ वैदिक संस्कृत में तीन प्रकार का स्वराघात

1.3.4 लौकिक संस्कृत और उसकी विशेषताएँ

लौकिक संस्कृत का काल मोटे तौर पर 1000 ई० पू० से 500 ई० पू० माना जाता है। इसे लौकिक संस्कृत के साथ-साथ संस्कृत या क्लासिकल संस्कृत ही कहा जाता है। वैदिक काल की भाषा के भौगोलिक दृष्टि से तीन रूप थे- उत्तरी, मध्य देशी तथा पूर्वी। लौकिक संस्कृत का मूल आधार उत्तरी रूप से था यद्यपि इस पर मध्य देशी तथा पूर्वी का भी प्रभाव था। वस्तुतः लौकिक संस्कृत एक साहित्यिक भाषा थी जिसे हम बोलचाल की भाषा नहीं कह सकते। आज इस भाषा को संस्कृत भाषा के नाम से जाना जाता है। इस भाषा का प्रथम प्रामाणिक ग्रंथ वाल्मीकि कृत रामायण था। लगभग इसी समय पाणिनि कृत अष्टाध्यायी की रचना हुई। इसमें पाणिनि ने शब्द रूपों, धातु रूपों तथा प्रत्ययों की विविधता को कम किया तथा काल, पुरुष, लिंग, वचन आदि के स्वच्छंद प्रयोगों को समाप्त कर दिया। रामायण के पश्चात लौकिक संस्कृत का दूसरा महत्वपूर्ण ग्रंथ महाभारत माना जाता रहा है। इन दो महाकाव्यों के अतिरिक्त कालिदास द्वारा रचित अभिज्ञान शाकुंतलम्, मेघदूत, रघुवंश और कुमार संभव लौकिक संस्कृत की प्रमुख रचनाएँ हैं। बाणभट्ट की कादंबरी तथा दंडी की दशकुमारचरितम् भी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

▶ लौकिक संस्कृत को क्लासिक संस्कृत भी कहना

लौकिक संस्कृत की विशेषताएँ इस प्रकार हैं:- वैदिक संस्कृत के नासिक्य के दो रूप लौकिक संस्कृत में हो गए- अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ) वैदिक संस्कृत की भांति लौकिक संस्कृत भी श्लिष्ट योगात्मक भाषा है। वैदिक संस्कृत में ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत स्वर प्रचलित थे। लौकिक संस्कृत में केवल ह्रस्व स्वर व दीर्घ स्वर रह गये। प्लुत स्वर गायब हो गया। वैदिक संस्कृत की भांति लौकिक संस्कृत में भी तीन लिंग (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग) और तीन वचन (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) हैं। वैदिक संस्कृत में उपसर्ग अपनी स्वतंत्र सत्ता भी रखते थे परंतु लौकिक संस्कृत में वे अनिवार्य रूप से शब्दों के पूर्व जोड़े जाने लगे। अतः स्पष्ट है कि वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत में अनेक समानताएँ होते हुए भी पर्याप्त अंतर हैं। वास्तव में वैदिक संस्कृत वह भाषा है जिससे समस्त आर्य भाषाओं का कालांतर में विकास हुआ। अतः वैदिक संस्कृत में कुछ त्रुटियां होने के बावजूद इस भाषा का महत्व सर्वोपरि है। लौकिक संस्कृत में व्याकरणिक नियमों के माध्यम से वैदिक संस्कृत की शिथिलता को दूर करते हुए उसे सुदृढ़ एवं सुव्यवस्थित रूप दिया गया।

▶ लौकिक संस्कृत श्लिष्ट योगात्मक भाषा

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में प्राचीन तथा मध्ययुगीन भाषाओं से बहुत अंतर आया है। शब्द भंडार की दृष्टी से सबसे बड़ी विशेषता यह है कि पश्तो, तुर्की, अरबी फारसी, पुर्तगाली तथा अंग्रेजी आदि से कई हजार नए शब्द आए हैं। इस से पूर्व भाषों का प्रमुख शब्द भंडार तत्सम, तद्भव और देशज था। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का प्राचीनतम नमूना वैदिक-साहित्य में दिखाई देता है। लौकिक संस्कृत प्राचीन भारतीय आर्यभाषा का वह रूप है जिसका पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' में विवेचन किया गया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा को कितने वर्गो में बाँटा गया है और उनकी विशेषताएँ क्या-क्या है।
2. वैदिक संस्कृत तथा लौकिक संस्कृत की समानताएँ क्या-क्या हैं।
3. लौकिक संस्कृत की विभिन्नताएँ क्या-क्या है?
4. वैदिक संस्कृत और उनकी विशेषताएँ लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप- हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत-डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Video

https://www.youtube.com/watch?v=MpjE2G4N7c

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ-पाली, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं की जानकारी प्राप्त करता है
- मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं के कालखण्डों को समझता है
- पाली, प्राकृत, शौरसेनी, अर्धमागधी, मागधी, अपभ्रंश आदि भाषाओं की विशेषताओं और प्रवृत्तियों को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

भारत में लोग भिन्न-भिन्न काल खंडों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोलते और लिखते आए हैं। संस्कृत इस देश की सबसे पुरानी भाषा मानी जाती है। मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा काल ई. पू. 500 से 1000 ई. तक माना जाता है। इस काल में सर्वप्रथम पाली भाषा अशोक की धर्म लिपियों में मिलती है। अशोक धर्मलिपियों की भाषा बाद में प्राकृत भाषा के नाम से जानी गयी इस काल में संस्कृत के साथ-साथ साहित्य में इन प्राकृतों का व्यवहार होने लगा। पश्चिमी भाषा का मुख्य रूप शौरसैनी प्राकृत था, पूर्वी का मागधी प्राकृत, इन दोनों के बीच में अर्धमागधी और चौथी दक्षिण रूप महाराष्ट्री प्राकृत थी। प्राकृत भाषाओं का समय 500 ई. तक है। इसके बाद प्राकृत की बिगडी बोली अपभ्रंश सामने आई। अपभ्रंश का समय 500 से 1000 ई तक है। हिन्दी भाषा का विकास अपभ्रंश से माना जाता है। कई लोग पुरानी हिन्दी से भी आधुनिक हिन्दी का विकास मानते हैं। भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार हिन्दी का स्वरूप समय समय पर बदला है, जिसका आरंभ वैदिक काल के संस्कृत से लेकर पाली, अपभ्रंश, अवहट्ट, पुरानी हिन्दी और हिन्दी भाषा के रूप में देखने को मिलता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

परिनिष्ठित भाषा, शिलालेखी प्राकृत

Discussion / चर्चा

लौकिक संस्कृत को पाणिनि ने अपने व्याकरण में जकड कर उसे सदा सर्वदा केलिए स्थायी रूप दे दिया। किन्तु जन भाषा इस बंधन को नहीं मानती। वह अबाध गति से परिवर्तित होती रही। इस जन भाषा के मध्यकालीन रूप को ही 'मध्यकालीन आर्य भाषा' की सज्ञा दी गयी है। मध्यकालीन आर्य भाषा को 'प्राकृत' भी कहा गया है।

1.4.1 मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ

यह काल ई. पू. 500 से 1000 ई. तक माना जाता है। इस काल में सर्वप्रथम पाली भाषा अशोक की धर्म लिपियों में मिलते हैं। अशोक धर्मलिपियों की भाषा बाद में प्राकृत भाषा के नाम से जानी गयी। इस काल में संस्कृत के साथ-साथ साहित्य में इन प्राकृतों का व्यवहार होने लगा। पश्चिमी भाषा का मुख्य रूप शौरसैनी प्राकृत था, पूर्वी का मागधी प्राकृत, इन दोनों के बीच में अर्धमागधी और चौथी दक्षिण रूप महाराष्ट्री प्राकृत थी। प्राकृत भाषाओं का समय 500 ई. तक है। इसके बाद प्राकृत की बिगडी बोली अपभ्रंश सामने आई।

▶ अशोक की धर्म लिपियों में पाली भाषा का प्रयोग

1.4.1.1 मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा को तीन कालखण्डों में बाँटा जाता है।

(क). प्रथम प्राकृत (पाली)- 500 ई. पू. ईसाइयों से सन् 1

(ख). दूसरा प्राकृत (प्राकृत) - ईसा सन् 1 से 500 ई.

(ग). तृतीय प्राकृत (अपभ्रंश) - 500 ई. से 1000 ई.

प्रथम प्राकृत (पाली) काल की प्रमुख रचना त्रिपिटक (तिपिटक) है। बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा और अशोक के शिलालेखों की भाषा भी यही है। इस काल में 'श', 'स', 'प' के स्थान पर 'स' का ही प्रयोग होने लगा था।

द्वितीय प्राकृत (प्राकृत) काल में पाँच भाषाएँ विकसित हुईं- शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री और पैशाची। इन पाँचों की अपनी भिन्न-भिन्न व्याकरणिक विशेषताएँ भी विकसित हुई। शौरसेनी में 'न' के स्थान पर 'ण' तथा 'य' के स्थान पर 'ज' ध्वनि मिलती है। मागधी की विशेषताएँ हैं- श, ष, स, र > ल, जय, क्ष > स्क। अर्धमागधी में सिर्फ एक 'स' है। महाराष्ट्री में रावण वहो (रावणवध) और गउड़वहो (गौड़वध) नामक महाकाव्य मिलते हैं। इसमें दो स्वरों के मध्य में व्यंजन का लोप हो जाता है। पैशाची में 'बढ्ढकहा' (बृहत्कथा) लिखी गई थी। इसमें ण > न, श, ष कहीं 'स' और कहीं 'श' मिलता है तथा संयुक्त व्यंजनों को सस्वर कर दिया जाता है।

▶ मागधी की विशेषताएँ

तृतीय प्राकृत अर्थात् अपभ्रंश को प्राकृत भाषाओं तथा आधुनिक भाषाओं के बीच की कड़ी माना जा सकता है। उस समय सात अपभ्रंश भाषाएँ मानी जाती हैं- शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री, कैकेय, ब्राचड़ और टक्क। अपभ्रंश अपेक्षाकृत सरल भाषा थी। इसमें नपुंसक लिंग समाप्त हो गया था। वचन भी दो रह गए थे। कारकों के रूप भी कम हो गए थे। शब्दावली के स्तर पर कुछ विदेशी शब्दों का प्रयोग होने लगा था। इन अपभ्रंश भाषाओं और आधुनिक आर्यभाषाओं के बीच एक अन्य भाषा भी मिलती है, जिसे 'अवहट्ट' कहा जाता है। इसे 'परवर्ती अपभ्रंश' भी कहा जाता है। संदेशरासक, प्राकृतपैंगलम, उक्ति-व्यक्ति प्रकरण, वर्ण-रत्नाकर, चर्यापद, ज्ञानेश्वरी और कीर्तिलता 'अवहट्ट' की ही रचनाएँ हैं। चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' के अनुसार ग्याहरवीं शताब्दी तक अपभ्रंश की प्रधानता रही फिर वह 'पुरानी हिन्दी' हो गई।

▶ मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा को तीन कालखण्डों में बाँटना

1.4.2 पाली, प्राकृत

पाली:- यह मध्यकालीन आर्य भाषा के प्रथम चरण की भाषा है। इस भाषा का प्रयोग बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा हुआ। इस भाषा का नामकरण आधुनिक काल के यूरोपीय विद्वानों

ने किया लेकिन फिर भी इस भाषा के नामकरण को लेकर विद्वानों में मतभेद है। पाली भाषा के क्षेत्र को लेकर भी विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वान इसे मगध की बोली मानते हैं तो कुछ उज्जयिनी की लेकिन यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि बौद्ध भिक्षुओं ने बौद्ध धर्म के प्रचार प्रसार के लिए पाली भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग किया। पाली भाषा के दो रूप हैं- (क) पाली, (ख) अभिलेखी प्राकृत। अभिलेखी प्राकृत का संबंध भी पाली के साथ ही है। जहाँ पाली का संबंध है जातक कथाओं और पिटकों से है वहीं अभिलेखी प्राकृत का संबंध उन लेखों से है जो शिलाओं पर अंकित है। इसलिए इसे शिलालेखी प्राकृत भी कहते हैं। इसमें दो प्रकार के अभिलेख प्राप्त होते हैं- अशोक कालीन अभिलेख तथा अशोकेतर अभिलेख।

▶ पाली मध्यकालीन आर्यभाषा के प्रथम चरण की भाषा

प्राकृतः- प्राकृत का समय ई. पू. 2000 से ई. पू. 600 तक है। विद्वानों का मत है कि प्राकृत भाषा जनभाषा यानी सामान्य लोगों की भाषा थी। इसलिए ही इसका नाम प्राकृत पड़ गया। प्राकृत शब्द को तीन अर्थो में लिया जा सकता है। प्रथम अर्थ में यह अभिलेखी प्राकृत से संबंधित है। द्वितीय अर्थ में भारत तथा भारत से बाहर असंख्य प्राकृत हैं। तृतीय अर्थ में प्राकृत में अपभ्रंश तथा अवहट्ठ शामिल की जा सकती हैं। इस प्रकार भूगोल, धर्म व साहित्य के आधार पर प्राकृत के अनेक भेद किए जा सकते हैं।

▶ सामान्य लोगों की भाषा

1.4.3 शौरसेनी, अर्धमागधी

शौरसेनीः- शौरसेनी वस्तुतः प्राकृत का ही एक प्रकार है। मथुरा अथवा शूरसेन के आसपास बोली जाने वाली बोली को शौरसेनी कहा गया। इसका विकास वहाँ की स्थानीय बोली से हुआ जो पाली के काल में प्रचलित थी। शौरसेनी संस्कृत से प्रभावित थी। विद्वान इसे परिनिष्ठित भाषा भी कहते हैं। संस्कृत के गद्य नाटकों की भाषा शौरसेनी है। जैन धर्म की दिगंबर शाखा ने शौरसेनी भाषा का प्रयोग किया।

अर्धमागधीः- अर्धमागधी भी एक अन्य प्राकृत का रूप है। इसका क्षेत्र मागधी बोली और शौरसेनी बोली के बीच का है। यह बोली कौशल क्षेत्र के आसपास की भाषा थी। अर्धमागधी में मागधी बोली कि अनेक प्रवृतियाँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। शायद इसी कारण से इसका नामकरण अर्धमागधी किया गया। जैनियों ने इस भाषा को आर्ष या आर्षि कहा है। अधिकांश जैन साहित्य अर्धमागधी में रचा गया। नाटकों में भी इसका खूब प्रयोग मिलता है।

▶ मधुर या शूरसेन के आसपास की भाषा

1.4.4 मागधी, अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ

1.4.4.1 मागधी

मागधी या मगही भारत की एक भाषा है। मगही शब्द का विकास मागधी से हुआ है (मागधी > मागही > मगही)। प्राचीन काल में यह मगध साम्राज्य की भाषा थी। भगवान बुद्ध अपने उपदेश इसके प्राचीन रूप मागधी प्राकृत में ही देते थे। मगही को मैथिली और भोजपुरी भाषाओं से भी गहरा संबंध है जिन्हें सामूहिक रूप से बिहारी भाषाएँ कहा जाता है जो इन्डो-आर्यन भाषाएँ हैं। मैथिली की पारंपरिक लिपि 'कैथी' है पर अब यह सामान्यतः देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती है। मगही बिहार के मुख्यतः पटना, गया, जहानाबाद और औरंगाबाद जिले में बोली जाती है। इसके अलावा यह पलामू, गिरिडीह, हज़ारीबाग, मुंगेर, और भागलपुर, झारखंड के कुछ ज़िलों तथा पश्चिम बंगाल के मालदा में भी बोली जाती है।

▶ मगही को मैथिली और भोजपुरी भाषाओं से गहरा संबंध

प्राचीन काल में ही मगही के अनेक रूप दृष्टिगत होते हैं। मगही भाषा का क्षेत्र विस्तार अति व्यापक है; अतः स्थान भेद के साथ-साथ इसके रूप बदल जाते हैं। प्रत्येक बोली या

भाषा कुछ दूरी पर बदल जाती है। मगही भाषा के निम्नलिखित भेदों का संकेत भाषाविद्वान कृष्णदेव प्रसाद ने किया हैः- 'सा मागधी मूलभाषा' इस वाक्य से यह बोध होता है कि भगवान गौतम बुद्ध के समय मागधी ही मूल भाषा के रूप में जन सामान्य के बीच बोली जाती थी। कहा जाता है कि भाषा समय पाकर अपना स्वरूप बदलती है और विभिन्न रूपों में विकसित होती है। मागधी की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

मागधी मगध के आस-पास की मूल भाषा है। सामान्यतः कुछ लोग मागधी का सम्बन्ध महाराष्ट्र से मानते हैं। इसकी अपनी कोई स्वतंत्र रचना नहीं है। निम्न श्रेणी के पात्र जो संस्कृत नाटकों में होते हैं वो इसका प्रयोग करते हैं। अश्वाघोष को इसका प्राचीनतम रूप मानते हैं। इसमें स्, ष् के स्थान पर 'श्' मिलता है (सप्य>शत, पुरुष>पुलिश)। इसमें 'र' का सर्वत्र 'ल' हो जाता है (राजा>लाजा)। प्रथम एकवचन में संस्कृत अः के स्थान पर यहाँ- ए मिलता है (देवः>देवे, सः>शे)।

- मागधी - मगध के आसपास की मूलभाषा

1.4.4.2 अपभ्रंश और उनकी विशेषताएँ

अपभ्रंश मध्यकालीन आर्यभाषा के तीसरे चरण की भाषा है। अपभ्रंश शब्द का अर्थ है- भ्रष्ट या पतित। पतंजलि ने अपने महाभाष्य में 'संस्कृत के शब्दों से विलग भ्रष्ट अथवा देशी शब्दों एवं अशुद्ध भाषायी प्रयोगों' को अपभ्रंश कहा है। दंडी और भामह अपभ्रंश का उल्लेख मध्यदेशीय भाषा के रूप में करते हैं। दंडी ने अपभ्रंश को आभीरों की बोली कहा है। दंडी के ही परवर्ती रचनाकार राजशेखर ने अपभ्रंश को परिनिष्ठित एवं शिक्षित जनों की भाषा कहा है। अपभ्रंश, आधुनिक भाषाओं के उदय से पहले उत्तर भारत में बोलचाल और साहित्य रचना की सबसे जीवंत और प्रमुख भाषा थे। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से अपभ्रंश भारतीय आर्यभाषा के मध्यकाल की अंतिम अवस्था है जो प्राकृत और आधुनिक भाषाओं के बीच की स्थिति है।

- भ्रष्ट या पतित

अपभ्रंश के कवियों ने अपनी भाषा को केवल 'भाषा', 'देसी भाषा' अथवा 'गामेल्ल भाषा' (ग्रामीण भाषा) कहा है, परन्तु संस्कृत के व्याकरणों और अलंकारग्रंथों में उस भाषा के लिए प्रायः 'अपभ्रंश' तथा कहीं-कहीं 'अपभ्रष्ट' संज्ञा का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार अपभ्रंश नाम संस्कृत के आचार्यों का दिया हुआ है, जो आपाततः तिरस्कारसूचक प्रतीत होता है। महाभाष्यकार पतंजलि ने जिस प्रकार 'अपभ्रंश' शब्द का प्रयोग किया है उससे पता चलता है कि संस्कृत या साधु शब्द के लोकप्रचलित विविध रूप अपभ्रंश या अपशब्द कहलाते थे। इस प्रकार प्रतिमान से च्युत, स्खलित, भ्रष्ट अथवा विकृत शब्दों को अपभ्रंश की संज्ञा दी गई और आगे चलकर यह संज्ञा पूरी भाषा के लिए स्वीकृत हो गई। दंडी (सातवीं सदी) के कथन से इस तथ्य की पुष्टि होती है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि शास्त्र अर्थात् व्याकरण शास्त्र में संस्कृत से इतर शब्दों को अपभ्रंश कहा जाता है; इस प्रकार पाली-प्राकृत-अपभ्रंश सभी के शब्द 'अपभ्रंश' संज्ञा के अंतर्गत आ जाते हैं, फिर भी पाली प्राकृत को 'अपभ्रंश' नाम नहीं दिया गया।

- अपभ्रंश नाम संस्कृत के आचार्यों का दिया हुआ

अपभ्रंश भाषा का ढाँचा लगभग वही है जिसका विवरण हेमचंद्र के 'सिद्ध हेमशब्दानुशासनम्' के आठवें अध्याय के चतुर्थ पाद में मिलता है। ध्वनि परिवर्तन की जिन प्रवृत्तियों के द्वारा संस्कृत शब्दों के तद्भव रूप प्राकृत में प्रचलित थे, वही प्रवत्तियाँ अधिकांशतः अपभ्रंश शब्दसमूह में भी दिखाई पड़ती है, जैसे अनादि और असंयुक्त क, ग,

> ▶ अपभ्रंश में प्राकृत से कुछ और विशिष्ट ध्वनिपरिवर्तन

च, ज, त, द, प, य और व का लोप तथा इनके स्थान पर उद्वृत स्वर अ अथवा य श्रुति का प्रयोग। इसी प्रकार प्राकृत की तरह ('क्त', 'क्व', 'द्व') आदि संयुक्त व्यंजनों के स्थान पर अपभ्रंश में भी 'त्त', 'क्क', 'द्द' आदि दित्व व्यंजन होते थे। परंतु अपभ्रंश में क्रमशः समीपवर्ती उद्वृत स्वरों को मिलाकर एक स्वर करने और दित्व व्यंजन को सरल करके एक व्यंजन सुरक्षित रखने की प्रवृत्ति बढ़ती गई। इसी प्रकार अपभ्रंश में प्राकृत से कुछ और विशिष्ट ध्वनि परिवर्तन हुए। अपभ्रंश कारक रचना में विभक्तियाँ प्राकृत की अपेक्षा अधिक घिसी हुई मिलती हैं, जैसे तृतीया एकवचन में 'एण' की जगह 'एँ' और षष्ठी एकवचन में 'स्स' के स्थान पर 'ह'। इसके अतिरिक्त अपभ्रंश निर्विभक्तिक संज्ञा रूपों से भी कारक रचना की गई। सहुं, केहिं, तेहिं, देसि, तणेण, केरअ, मज्झि आदि परसर्ग भी प्रयुक्त हुए। कृदंतज क्रियाओं के प्रयोग की प्रवृत्ति बढ़ी और संयुक्त क्रियाओं के निर्माण का आरंभ हुआ।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

प्राचीन और मध्यकालीन आर्य भाषाओं-संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश का क्षेत्र सार्वदेशिक था, जिस रूप में वे उपलब्ध है, उस रूप में उनका व्याकरणिक ढांचा भी अलग था। इन भाषाओ में प्रादेशिक निष्ठा नहीं थी, किन्तु जातीय भाषाओं में यह निष्ठा बढ़ी। संस्कृत से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से उत्तर भारत की आधुनिक आर्य भाषाओ का विकास हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता रहता है और इसके लिए सिद्धांत भी गढ़े गए थे, किन्तु अब यह धारणा कि हिन्दी या बांग्ला आदि अपभ्रंश से निकली, खंडित हो चुकी है। जातीय भाषाओं ने संस्कृत और अपभ्रंश से बहुत कुछ लिया है। हिन्दी ने उनकी विरासत को सबसे अधिक ग्रहण किया-विशेष रूप से अपभ्रंश की विरासत को। शब्द-समूह, उच्चारण तथा व्याकरणिक ढांचे के अलग होने से अपभ्रंश साहित्य को हिन्दी साहित्य का अंग नहीं माना जा सकता, किन्तु नैरंतर्य के लिए उसका अध्ययन आवश्यक है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भाषावैज्ञानिक दृष्टि से अपभ्रंश भारतीय आर्यभाषा के मध्यकाल की अंतिम अवस्था है, व्यक्त कीजिए।
2. अपभ्रंश साहित्य की विशेषताओं के बारे में टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्‌भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा एवं भाषा विज्ञान - डॉ एम एस जैन, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
4. भाषिकी - डॉ एच परमेश्वरन।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. भाषा विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
2. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेंद्रनाथ शर्मा, राधाकृष्णन प्रकाश, दिल्ली।
3. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।

Video link

https://www.youtube.com/watch?v=_CrJngg2oFM

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ और उनका वर्गीकरण

BLOCK-02

Block Content

Unit 1 : आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ- हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

Unit 2 : हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

Unit 3 : हिन्दी का विकासात्मक स्वरूप

Unit 4 : हिन्दी के विविध रूप

इकाई : 1

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ-हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं को जानता है
- आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के विकास से परिचित होता है
- आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के वर्गीकरण को समझता है
- सुनीतिकुमार चाटर्जी का वर्गीकरण को जानता है
- ग्रियर्सन के वर्गीकरण को जानता है

Background / पृष्ठभूमि

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा का विकास अपभ्रंश से हुआ है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषा से अभिप्राय सन् 1947 से पूर्व का अविभाजित भारत से है, जिसमें पाकिस्तान और बंगलादेश समाविष्ट थे। कुछ विद्वान तो भारत का अर्थ श्रीलंका और बर्मा सहित भारतीय आर्यभाषा में लेते हैं। वस्तुतः अंग्रेजों के आने से पूर्व ये सब प्रदेश भारत के ही अंग थे।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अपभ्रंश, शौरसेनी, प्राकृत, ब्राचड़

Discussion / चर्चा

ईसा की 15 शताब्दी तक भारतीय आर्य भाषा आधुनिक काल में पदार्पण कर चुकी थी। पैशाची, शौरसेनी, महाराष्ट्र एवं मागधी अपभ्रंश भाषाओं ने क्रमशः आधुनिक सिन्धी, पंजाबी, हिन्दी (ब्रज भाषा, खड़ीबोली), राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पूर्वी हिन्दी (अवधि, आदि) विहारी, बंगला, उड़िया भाषाओं को जन्म दिया। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा में परिवर्तन और ह्रास की जो क्रिया मध्यकाल के आरम्भ में चल पड़ी थी, वह आधुनिक आर्य भाषाओं के रूप में पूरी हुई।

2.1.1 आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास क्षेत्र और परिचय

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास मध्यकालीन अपभ्रंश भाषाओं से हुआ है। प्राचीन पाँच प्राकृतों से पाँच अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ है। इन पाँच अपभ्रंशों के साथ

ही ‘ब्राचड़’ एवं ‘खस’ दो अपभ्रंशों को और लिया जाता है। ब्राचड़ (सं० ब्राचड़ या ब्राचट) का उल्लेख मार्कण्डेय के प्राकृत सर्वस्व में अपभ्रंश के 27 भेदों में मिलता है। खस (खश) उत्तरी पहाड़ी भाग की भाषा थी। उसको भी अपभ्रंश में लिया है। इस प्रकार सात अपभ्रंशों से आधुनिक भाषाओं का विकास माना जाता है। अधिकांश विद्वान 1500 ई० पू० के काल को भारतीय आर्य भाषाओं का काल मानते हैं। तब से लेकर आज तक भारतीय आर्य भाषाओं की यात्रा लगभग 3500 वर्ष की हो चुकी है। अधिकांश विद्वान भारतीय आर्य भाषाओं के इस लंबे काल को तीन भागों में बांटते हैं:-

► अपभ्रंशों से आधुनिक भाषाओं का विकास

1. प्राचीन भारतीय आर्य भाषा (1500 ई० पू० से 500 ई० पू० तक)
2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (500 ई० पू० से 1000 ई० तक)
3. आधुनिक भारतीय आर्य भाषा (1000 ई० से आगे)

संसार के समस्त भाषा-कुलों में भारतीय भाषा कुल का और इस में भारतीय आर्य भाषाओं का विशेष महत्व है। प्राचीन आर्यभाषा से मध्ययुगीन भारतीय आर्य भाषाओं का उद्भव और उस से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास हुआ है। वर्तमान समय की आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में पर्याप्त विकास हुआ है। इस की विभिन्न शाखाओं में भर पूर साहित्य रचना हो रही है। इस तथ्य को ध्यान में रखकर इस परिवार की विभिन्न भाषाओं का वर्गीकरण किया गया है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण करने वाले शाखाओं मे हार्नले, वेबर, जॉर्ज ग्रीयर्सन, डॉ. सुनीतिकुमार चाटर्जी, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा आदि कतिपय विद्वानों का कार्य विशिष्ट रहा। इन में से जॉर्ज ग्रीयर्सन, तथा डॉ. सुनीतिकुमार चाटर्जी का वर्गीकरण विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

► प्राचीन आर्यभाषा से मध्ययुगीन भारतीय आर्य भाषाओं का उद्भव

2.1.2 ग्रियर्सन का वर्गीकरण

जॉर्ज अब्रहाम ग्रीयर्सन ने 1920 ई में ‘भरतीय भाषाओं का सर्वेक्षण’ के पहले भाग में आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण प्रस्तुत किया। ध्वनि, रूप तथा शब्दों पर आधारित, उनके वर्गीकरण में तीन उपशाखाओं के अंतर्गत 6 समुदायों में 17 भाषाओं कि गणना कि गई है:-

अ) बहिरंग उपशाखा-

क) पश्चिमोत्तरी समुदाय	1. लहंदा
	2. सिन्धी
ख) पूर्वी समुदाय	3. उडिया
	4. बिहारी
	5. बंगला
	6. असमिया
ग) दक्षिणी समुदाय	7. मराठी

आ) मध्य देशीय उपशाखा

घ) मध्यवर्ती समुदाय	8. पूर्वी हिन्दी

इ) अंतरंग उपशाखा

ङ) केन्द्रीय समुदाय	9. पश्चिमी हिन्दी

10. पंजाबी

11. गुजराती

12. भीली

13. खानदेशी

14. राजस्थानी

च) पहाड़ी समुदाय

15. पूर्वी

16. मध्यवर्ती (पहाड़ी)

17. पश्चिमी (पहाड़ी)

▶ ध्वनि, रूप तथा शब्दों पर आधारित वर्गीकरण

2.1.2.1 जॉर्ज ग्रीयर्सन के वर्गीकरण के आधार

1. **इतिहास-** हर्नले तथा अन्य कुछ विद्वानों का यह मत था कि आर्य भारत में दो समूहों में आए, जिन में से पहला समूह मध्य देश में बस गया। दूसरे समूह वालों ने उन्हें प्रताड़ित कर इधर-उधर खदेड़ दिया और स्वयं मध्यदेश में बस गए। इसी आधार पर जॉर्ज ग्रीयर्सन ने अपने वर्गीकरण में आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को मध्यदेशी, अंतरंग और बहिरंग उपशाखाओं में विभाजित किया है।
2. **ध्वनि-** जॉर्ज ग्रीयर्सन ने ध्वनियों को भी आधार बनाया। यही कारण है कि बहिरंग तथा अंतरंग उपशाखाओं की भाषाओं की ध्वनिओं में पर्याप्त साम्य खोजा गया।
3. **व्याकरण-** जॉर्ज ग्रीयर्सन ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के वर्गीकरण में व्याकरण रूपों को भी आधार बनाया। जैसे बहिरंग भाषाएँ श्लिष्टावस्था की ओर उन्मुख हैं और अंतरंग भाषाएँ विश्लिष्टावस्था में ही है।
4. **शब्द समूह-** अपने वर्गीकरण में जॉर्ज ग्रीयर्सन ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में प्रचलित शब्द समूह को भी आधार बनाया है। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि अंतरंग भाषाओं में जिन शब्दों की प्रचुरता है वे बहिरंग भाषाओं में सम्यक रूप से उपलब्ध नहीं होते हैं। इसी प्रकार बहिरंग भाषाओं में अति प्रचलित शब्द समूह अंतरंग भाषाओं के प्रयोग में नहीं मिलता।

▶ मध्यदेशी, अंतरंग और बहिरंग उपशाखाएँ

2.1.3 सुनीतिकुमार चटर्जी का वर्गीकरण

डॉ सुनीति कुमार चटर्जी ने जॉर्ज ग्रीयर्सन के वर्गीकरण के उक्त आधारों से असहमति प्रकट करते हुए निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए है।

1. **इतिहास-** डॉ चटर्जी के अनुसार आर्यों के दो समूहों में भारत आने बात के पुष्ट प्रमाण उपलब्ध नहीं होते, जिन पर ग्रीयर्सन का वर्गीकरण अवलंबित है। लोकमान्य तिलक के अनुसार आर्य उत्तरी ध्रुव के निवासी थे, कहीं से आए नहीं थे। ऋग्वेदकाल में उत्तरी ध्रुव भारत का ही भाग था। अतः ग्रीयर्सन के वर्गीकरण का ऐतिहासिक आधार समीचीन नहीं है।
2. **ध्वनि-** ग्रियर्सन के अनुसार बहिरंग भाषाओं में महाप्राण ध्वनियाँ अल्पप्राण हो जाती हैं। डॉ चटर्जी का मत है कि यह प्रवृत्ति अंतरंग भाषाओं में भी मिलती है। इसी प्रकार ग्रीयर्सन के अनुसार बहिरंग भाषाओं में ढ > ड, ल > र, स > ह, उ > इ हो जाता है; पर डॉ चटर्जी का मत है कि अंतरंग भाषा ब्रज में भी ऐसा होता है। अतः ध्वनिओं के

आधार पर भी ग्रियर्सन का वर्गीकरण समुचित नहीं है।

3. **व्याकरण**- ग्रियर्सन का यह मत है कि बहिरंग भाषाएँ श्लिष्टावस्था की ओर उन्मुख है। उनका विचार है कि अंतरंग भाषाओं में भी श्लिष्ट रूपों का प्रचालन होता है। इस प्रकार व्याकरणिक रूपों की दृष्टि से भी ग्रीयर्सन का वर्गीकरण उपयुक्त नहीं है।
4. **शब्द समूह**- ग्रियर्सन ने आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं को अति प्रचलित शब्दावली के आधार पर भी विभाजित किया है, पर डॉ. चटर्जी इस के पक्ष में नहीं है। उनका कथन है कि बहिरंग शाखा की सिन्धी और बंगला, या बंगला और मराठी भाषाओं के शब्द भंडार में कोई अधिक समानता नहीं है। अतः ग्रियर्सन के वर्गीकरण का यह आधार भी तर्क संगत नहीं है।

इस प्रकार ग्रियर्सन के वर्गीकरण के प्रमुख आधारों को डॉ. चटर्जी ने निर्मूल सिद्ध किया है। विभिन्न समुदायों में रखी गई भाषाओं के वितरण से भी वह सहमत नहीं है। अतः डॉ सुनीति कुमार चटर्जी ने अपने ढंग से आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का पुनः वर्गीकरण किया जो निम्नवत है।

क) उद्दीच्य (उत्तरी)	1. सिन्धी
	2. लहंदा
	3. पंजाबी
ख) प्रतीच्य (पश्चिमी)	4. गुजराती
	5. राजस्थानी
ग) मद्यदेशीय (मद्यवर्ती)	6. पश्चिमी हिन्दी
घ) प्राच्य (पूर्वी)	7. पूर्वी हिन्दी
	8. बिहारी
	9. बंगला
	10. असमिया
	11. उडिया
ङ) दाक्षिणात्य (दक्षिणी)	12. मराठी

▶ भारतीय आर्य भाषाएँ 5 वर्गों में विभाजित

अपने इस वर्गीकरण में डॉ. चटर्जी ने बारह आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ स्वीकार की हैं और उन्हें 5 वर्गों में विभाजित किया है। इन पांचों वर्गों की भाषाएँ एक दूसरे से अधिक पृथक नहीं है। यही कारण है कि अधिकांश विद्वान इस वर्गीकरण को अधिक वैज्ञानिक मानते हैं।

2.1.4 अपभ्रंश

▶ अपभ्रंश शब्द का अर्थ है- भ्रष्ट या पतित

अपभ्रंश शब्द का प्राचीनतम प्रामाणिक प्रयोग पतंजलि के 'महाभाष्य' में मिलता है। आधुनिक भाषाओं के उदय से पहले उत्तर भारत में बोलचाल और साहित्य रचना की सबसे जीवंत और प्रमुख भाषा अपभ्रंश थी। भाषा वैज्ञानिक दृष्टी से अपभ्रंश भारतीय आर्यभाषा के मध्यकाल की अंतिम अवस्था है, जो प्राकृत और आधुनिक भाषाओं के बीच की स्थिति है। अपभ्रंश शब्द का अर्थ है- भ्रष्ट या पतित। दंडी और भामह अपभ्रंश का उल्लेख मध्यदेशीय भाषा के रूप में करते हैं। दंडी ने अपभ्रंश को अमीरों की बोली कहा है। दंडी के ही परवर्ती रचनाकार राजशेखर ने अपभ्रंश को परिनिष्ठित एवं शिक्षित जनों की भाषा कहा है। स्पष्ट है कि एक दौर की भ्रष्ट-गंवारू भाषा ही अगले दौर में साहित्यिक भाषा बनी।

2.1.5 अपभ्रंश की प्रमुख विशेषताएँ

अपभ्रंश में मध्यकालीन भाषाओं की ध्वनिगत, और व्याकरणगत व्यवस्था कुछ और विकसित परिलक्षित होती है। अपभ्रंश तक भाषा में कुछ ऐसी परिवर्तन हुई जिन में अपभ्रंश मध्यकाल की अपेक्षा आधुनिक काल की ओर अधिक झुक गई। विभक्तियों के घिस जाने के कारण भाषा में वियोगात्मकता के स्पष्ट लक्षण पैदा हो गए जो आधुनिक आर्य भाषाओं की प्रमुख विशेषता बन गई। आधुनिक भाषाओं में प्रयुक्त सर्वनामों, क्रिया पदों के रूप अपभ्रंश में ही विकसित हो गए थे।

2.1.6 अवहट्ट

अपभ्रंश के ही उत्तरकालीन या परवर्ती रूप को 'अवहट्ट' नाम दिया गया है। ग्यारहवीं से लेकर चौदहवीं शती के अपभ्रंश रचनाकारों ने अपनी भाषा को अवहट्ट कहा। 'अवहट्ट' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ज्योतिरीश्वर ठाकुर ने अपने 'वर्ण रत्नाकर' में किया 'प्राकृत पैंगलम' के टीकाकार वंशीधर ने अवहट्ट माना। अवहट्ट को अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के बीच की कड़ी माना जाता है। पुरातन प्रबंध संग्रह की कतिपय अनु-श्रुतियों, नाथ और सिद्ध साहित्य, नेमिनाथ चौपाई, बाहुबलि रास आदि के अलावा संत ज्ञानेश्वर की 'ज्ञानेश्वरी' और रोडाकृत 'राउलबेल' की भाषा को भी अवहट्ट माना गया। खड़ीबोली हिन्दी के भाषिक और साहित्यिक विकास में जिन भाषाओं और बोलियों का विशेष योगदान रहा है उनमें अपभ्रंश और अवहट्ट भाषाएँ भी है। हिन्दी को अपभ्रंश और अवहट्ट से जो कुछ भी मिला उसका पूरा लेखा जोखा इन तीनों की भाषिक और साहित्यिक संपत्ति का तुलनात्मक विवेचन करने से प्राप्त होता है।

▶ अवहट्ट को पुरानी हिन्दी के बीच की कड़ी मानना

2.1.7 अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी का संबन्ध

शौरसेनी अपभ्रंश की भूमि ही पुरानी हिन्दी की भूमि है। भाषा के ढ़ाँचे की एकरूपता के कारण अपभ्रंश और पुरानी हिन्दी के बीच देशकाल की दृष्टि से कोई स्पष्ट रेखा नहीं खिंची जा सकती। आधुनिक भाषा वैज्ञानिक अपभ्रंश और हिन्दी के संबंध को व्युत्पत्तिमूलक दृष्टि से देखते हैं। वे आधुनिक अर्याभाषाओं का उद्‌भव विभिन्न क्षेत्रीय अपभ्रंश से मानते हैं। डॉ. भोलानाथ तिवारी के विचार में मूलतः संस्कृत से भ्रष्ट हुई भाषा को अपभ्रंश और अपभ्रष्ट कहा है। इनके मत में अपभ्रंश अवहठ एक भाषा के दो नाम है। सामान्य रूप से यह धाराणा प्रचलित है कि हिन्दी का आरम्भ वीरगाथाओं से हुआ वीरगाथा ही वह प्राणधारा है जिसका विकास अपभ्रंश से हिन्दी में हुआ। हिन्दी की सभी बोलीयां या तो शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई जैसे व्रज भाषा और खड़ीबोली व अर्धमागधी अपभ्रंश से अवधि, बघेली और छत्तीसगढ़ी। अपभ्रंश से विकसित होने के फलस्वरूप जो व्याकरणिक विशेषताएँ अपभ्रंश में थी वह हिन्दी में भी दृष्टिगत होती है। अपभ्रंश में व्यंजनों के स्थान पर स्वरों का प्रयोग होने लगा था। यह प्रवृत्ति हिन्दी में भी दृष्टिगत होती है। लोकोक्ति और मुहावरे में अपभ्रंश और हिन्दी में सामानता पाए जाते हैं। अपभ्रंश, अवहठ और प्रारम्भिक हिन्दी (पुरानी हिन्दी) की मूल प्रवृत्तियाँ आज भी हिन्दी की बोलियाँ ब्रज, अवधी, खडी बोली और राजस्थानी हिन्दी में पाई जाती हैं।

▶ 'प्राकृताभास हिन्दी'

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं का विकास अपभ्रंश से हुआ है। इस काल की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अंग्रेजी, अरबी और फारसी के बहुत सारे शब्द भारतीय भाषाओं में प्रविष्ट हो गये हैं। भारतीय आर्य भाषाओं में संस्कृत प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल की भाषा है। आज भी संस्कृत का धार्मिक एवं सांस्कृतिक कृत्यों में प्रयोग होता है। विश्व की सर्वोन्नत एवं श्रेष्ठतम भाषाओं में अग्रणी स्थान पाने वाली संस्कृत भाषा का विशिष्ट महत्व है। इसी कारण इसको परिगणित भाषाओं में स्थान दिया गया है। संस्कृत के अलावा आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के अंतर्गत मैथिली एवं उर्दू को भी समाहित करने की स्थिति में 14 भाषाएँ परिगणित सूची के अन्तर्गत आती हैं तथा प्रमुख भाषाओं की संख्या 20 है। भारत की जनसंख्या में आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के बोलने वाले 75 प्रतिशत से अधिक हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का सामान्य परिचय दीजिए।
2. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
3. अपभ्रंश की मुख्य विशेषताएँ व्यक्त कीजिए।
4. ग्रियर्सन द्वारा किया गया वर्गीकरण लिखिए।
5. अपभ्रंश और पुराणी हिन्दी का संबन्ध क्या है? व्यक्त कीजिए।
6. सुनीति कुमार चाटर्जी का वर्गीकरण पर टिप्पणी तैयार कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Video link

https://youtu.be/CfOwGijsFZ0

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के विकास के बारे में समझता है
- शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं को जान पाता है
- पैशाची अपभ्रंश से विकसित भारतीय भाषाएँ समझ पाता है
- ब्राचड़ अपभ्रंश से विकसित भाषाओं को जानता है

Background / पृष्ठभूमि

हिन्दी भाषा का क्षेत्र हिमाचल प्रदेश, पंजाब का कुछ भाग, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्यप्रदेश तथा बिहार है, जिसे हिन्दी प्रदेश कहते है। इस पूरे क्षेत्र में हिन्दी की पाँच उपभाषाएँ है, इसके अंतर्गत मुख्यतः 10 बोलियाँ हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

शौरसेनी, ब्राचड़, अर्धमागधी, पैशाची

Discussion / चर्चा

संसार के समस्त भाषा-कुलों में भारतीय भाषाकुल का और इन में भारतीय आर्यभाषाओं का विशेष महत्व है। आर्यभाषा का इतिहास आर्यों के भारत आगमन से प्रारंभ होता है। अपभ्रंश के विभिन्न स्थानीय रूप 1000 ई॰ के आसपास अवहट रूपों से होते आधुनिक भाषाओं के रूप में विकसित हो गया।

2.2.1 आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का काल 1000 ई॰ से अब तक माना जाता है। विद्वानों ने आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का विकास अपभ्रंश के निम्नलिखित रूपों से माना है:-

(क) शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित - पश्चिमी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी, गुजराती।

(ख) पैशाची अपभ्रंश से विकसित - लहंदा, पंजाबी।

(ग) ब्राचड़ अपभ्रंश से विकसित - सिंधी।

(घ) महाराष्ट्री अपभ्रंश से विकसित - मराठी।

(ङ) मागधी अपभ्रंश से विकसित - बिहारी, बंगाली, उड़िया, असमिया।

(च) अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित - पूर्वी हिन्दी।

▶ आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास अपभ्रंश से

इन सभी भाषाओं का संक्षिप्त परिचय अग्रलिखित हैः-

(क) शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

(1) पश्चिमी हिन्दी (2) राजस्थानी (3) पहाड़ी तथा (4) गुजराती।

1. **पश्चिमी हिन्दी**

पश्चिमी हिन्दी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। इस उपभाषा का क्षेत्र पश्चिम में अम्बला से लेकर पूर्व में कानपुर की पूर्वी सीमा तक, एवं उत्तर में जिला देहरादून से दक्षिण में मराठी की सीमा तक चला गया है। इस क्षेत्र के बाहर दक्षिण में महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और केरल के प्रायः मुसलमानी घरों में पश्चिमी हिन्दी का ही एक रूप दक्खिनी हिन्दी व्याप्त है। साहित्यिक दृष्टि से यह उपभाषा बहुत संपन्न है। दक्खिन हिन्दी ब्रजभाषा और आधुनिक युग में खड़ी बोली हिन्दी का विशाल साहित्य मिलता है।

▶ पश्चिमी हिन्दी की पांच उप भाषाएँ

खड़ी बोली- 'खड़ी बोली' शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है। एक तो साहित्यिक हिन्दी खड़ीबोली के अर्थ में और दूसरे दिल्ली-मेरठ के आस-पास की लोक बोली के अर्थ में। खड़ीबोली का क्षेत्र मेरठ, सहारनपुर, रामपुर तथा देहरादून तक है। लोक-साहित्य की दृष्टि से खड़ीबोली बहुत संपन्न है और इस में नाटक, लोककथा, लोक-गीत आदि पर्याप्त मात्रा में मिलते है। आज आधुनिक हिन्दी साहित्य में भाषा का जो रूप मिलता है वह खड़ी बोली ही है। प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी वर्मा, गुप्त, दिनकर आदि खड़ी बोली के महान कवि थे। खड़ीबोली की प्रमुख उपबोलियाँ पश्चिमी, पूर्वी, पहाड़वाली और बिजनौरी हैं।

ब्रजभाषा- ब्रजभाषा का क्षेत्र संपूर्ण ब्रजमंडल है। उसका क्षेत्र मथुरा, आगरा, अलीगढ़ तक है। मध्यकालीन साहित्य का बहुत बड़ा भाग ब्रजभाषा में रचा गया। भक्तिकाल तथा रीतिकाल के अधिकांश ग्रंथ ब्रज भाषा में रचित हैं। ब्रजभाषा अपने माधुर्य के कारण प्रसिद्ध है। ब्रजभाषा में सुंदरतम कृष्ण-काव्य की रचना हुई है।

हरियाणवी- हरियाणवी का क्षेत्र मुख्यतः हरियाणा तथा दिल्ली का देहाती भाग है। इसके अनेक रूप हैं परंतु इसके प्रमुख रूप हैं- बांगरू, बागड़ी तथा अंबालवी आदि। इसमें उच्च कोटि का लोक-साहित्य मिलता है। ध्वनि तथा व्याकरण में हरियाणी खड़ीबोली से काफी मिलती-जुलती है।

बुंदेली- बुंदेली का क्षेत्र संपूर्ण बुंदेलखंड है। यह उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है। बुन्देली और ब्रज भाषा में काफी समानता है। हिन्दी प्रदेश की प्रसिद्द लोकभाषा 'आल्हा' मूलतः बुन्देली की एक उपबोली बनाफरी में लिखा गया था। तिरहारी, लोघी तथा बनाफरी आदि इसकी मुख्य उपबोलियां है।

▶ हिन्दी प्रदेश की प्रसिद्ध लोकभाषा 'आल्हा'

कन्नौजी- कन्नौजी का प्रमुख क्षेत्र उत्तर प्रदेश का कन्नौज है इसमें भी लोक साहित्य की समृद्ध

परंपरा मिलती है। इस की प्रमुख उपबोलियाँ तिरहारी, पचरूआ तथा संडीली है।

2. **राजस्थानी**

राजस्थानी भाषाएँ आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में से एक है, जिसका वास्तविक क्षेत्र वर्तमान राजस्थान प्रान्त तक ही सीमित न होकर मध्यप्रदेश के कतिपय पूर्वी तथा दक्षिणी भाग में और पाकिस्तान के वहावलपुर जिले तथा दूसरे पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी सीमा प्रदेशों में भी है। यह हरियाणा, पंजाब, गुजरात और मध्यप्रदेश के निकटवर्ती क्षेत्रों में बोली जाने वाली भाषाओं और बोलियों का समूह है। पाकिस्तान के सिंध और पंजाब प्रांतों में भी इसके वक्ता हैं। राजस्थानी पश्चिमी इंडो-आर्यन भाषा होने के कारण पड़ोसी, संबंधित हिन्दी भाषाओं से अलग भाषा है। यह भाषा भारत में लगभग नौ करोड़ लोगों के द्वारा बोली, लिखी एवं पढ़ी जाती है।

राजस्थानी नागरी लिपि में लिखी जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ के पुराने लोगों में अब भी एक भिन्न लिपि प्रचलित है, जिसे 'बाण्याँ वाटी' कहा जाता है। इस लिपि में प्रायः मात्रा-चिह्न नहीं दिए जाते। राजस्थानी बनिये आज भी बहीखातों में इस लिपि का प्रयोग करते हैं। राजस्थानी उपभाषा के अंतर्गत लगभग 30 बोलियां आती हैं परंतु प्रमुख चार हैं- मारवाड़ी, मालवी, मेवाती तथा जयपुरी। जयपुरी जयपुर व कोटा के आसपास बोली जाती है। मेवाती मेवात क्षेत्र की बोली है। यह हरियाणा के मेवात, गुड़गांव आदि भागों में भी बोली जाती है। मालवी मालवा क्षेत्र की बोली है।

▶ नागरी लिपि में लिखी जाती भाषा

3. **पहाड़ी**

अपभ्रंश से पहाडी भाषाएँ निकली है। इनकी लिपि देवनागरी है। हिमालय की तराई भागों में बोली जाती है। पूर्व में नेपाल से लेकर पश्चिम में भद्रवाह तक की भाषाओं को जॉर्ज ग्रियर्सन ने पहाड़ी हिन्दी माना है। उन्होंने पहाड़ी हिन्दी को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है- पूर्वी पहाड़ी, पश्चिमी पहाड़ी, और मध्य पहाड़ी। यह भाषा मुख्यतः हिमालय में स्थित शहरों व गांवों में बोली जाती हैं इसकी प्रमुख बोलियाँ हैं- नेपाली, कुमाऊनी, गढ़वाली आदि। कुमाऊँनी में लोक साहित्य मिलता है। गढ़वाली अपने लोकगीतों के लिए प्रसिद्ध है। नेपाली वर्तमान में नेपाल की राजभाषा है। इसकी लिपि देवनागरी है। यह लोक-साहित्य के साथ-साथ उच्च कोटि के साहित्य के लिए भी प्रसिद्ध है।

पहाड़ी भाषाओं के शब्दसमूह, ध्वनिसमूह, व्याकरण आदि पर अनेक जातीय स्तरों की छाप पड़ी है। यक्ष, किन्नर, किरात, नाग, खस, शक, आर्य आदि विभिन्न जातियों की भाषागत विशेषताएँ प्रयत्न करने पर खोजी जा सकती हैं जिनमें अब यहाँ आर्य-आर्येतर तत्व परस्पर घुल मिल गए हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से ऐसा विदित होता है कि प्राचीन काल में इनका कुछ पृथक स्वरूप अधिकांश मौखिक था। मध्यकाल में यह भूभाग राजस्थानी भाषा भाषियों के अधिक संपर्क में आया और आधुनिक काल में आवागमन की सुविधा के कारण हिन्दी भाषाई तत्व यहाँ प्रवेश करते जा रहे हैं। पहाड़ी भाषाओं का व्यवहार एक प्रकार से घरेलू बोलचाल, पत्रव्यवहार आदि तक ही सीमित हो चला है। इसकी प्रमुख बोलियां हैं- नेपाली, कुमाऊनी, गढ़वाली आदि।

▶ अपभ्रंश से पहाडी भाषाएँ निकली

4. **गुजराती**

भारत की प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में से एक, जिसे भारतीय संविधान की मान्यता प्राप्त है। यह मुख्यतः गुजरात क्षेत्र में तथा भारत के अन्य प्रमुख नगरों में लगभग तीन करोड़

से अधिक लोगों के द्वारा बोली जाती है। गुजराती भाषा नवीन भारतीय-आर्य भाषाओं के दक्षिण-पश्चिमी समूह से सम्बन्धित है। इतालवी विद्वान तेस्सितोरी ने प्राचीन गुजराती को प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी भी कहा, क्योंकि उनके काल में इस भाषा का उपयोग उस क्षेत्र में भी होता था, जिसे अब राजस्थान राज्य कहा जाता है। अन्य नवीन भारतीय-आर्य भाषाओं की तरह गुजराती की उत्पत्ति भी एक प्राकृत भाषा से हुई है। इस भाषा के विकास को कुछ भाषाशास्त्रीय विशेषताओं में परिवर्तन के आधार पर तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है। प्राचीन गुजराती, मध्य गुजराती, नवीन गुजराती। गुजराती भाषा की अपनी लिपि है जो देवनागरी से विकसित हुई है। गुजराती में समृद्ध साहित्य मिलता है।

▶ शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित

(ख) पैशाची अपभ्रंश से विकसित भारतीय भाषाएँ

पैशाची भाषा वह प्राकृत भाषा है, जो प्राचीन समय में भारतवर्ष के पश्चिमोत्तर प्रदेश में बोली जाती थी। ग्रियर्सन ने पैशाची भाषा भाषी लोगों को आदिवासी स्थान उत्तर-पश्चिम पंजाब तथा अफगानिस्तान को माना है तथा इसे दरद से प्रभावित बताया। प्राकृत व्याकरणों एवं संस्कृत नाटकों में खंडशः इस भाषा के अंश प्राप्त होते हैं। लहंदा, पंजाबी आदि पैशाची अपभ्रंश की उपभाषाएँ है।

1. **पंजाबी**- यह पंजाब, हरियाणा तथा पाकिस्तानी पंजाब में बोली जाती है। इस बोली में 'आदि ग्रंथ' की रचना हुई। इसके अतिरिक्त इसमें उच्च-कोटि का साहित्य भी मिलता है। अमृता प्रीतम पंजाबी की प्रमुख साहित्यकार हैं।
2. **लहंदा**- यह भाषा पंजाब के पश्चिम तथा पश्चिमोत्तर क्षेत्रों में बोली जाती है। अब यह क्षेत्र मुख्यतः पाकिस्तान में है। इसमें सिख मत से संबंधित वार्ता साहित्य मिलता है।

(ग) ब्राचड़ अपभ्रंश से विकसित भाषाएँ

सिंधी- यह भाषा सिंध प्रांत की है। यह भाग मुख्यतः पाकिस्तान में है। भारत में सिंधी भाषा देवनागरी और गुरुमुखी लिपि में लिखी जाती है जबकि पाकिस्तान में यह अरबी लिपि में लिखी जाती है। मूलतः इसकी लिपि 'लहंदा' है। इसका सबसे प्रसिद्ध ग्रंथ 'शाह जो रसालो' माना जाता है। 'शाह जो रसालो' के लेखक शाह अब्दुल लतीफ हैं। शाह अब्दुल लतीफ एक सूफी कवि थे जिन्होंने अपने लेखन से सिंधी भाषा को वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय बनाया।

▶ गुरुमुखी

(घ) महाराष्ट्र अपभ्रंश से विकसित भारतीय भाषाएँ

मराठी- मराठी महाराष्ट्र की प्रमुख भाषा है। इसकी अनेक बोलियां है जैसे-कोंकणी, नागपुरी, बरारी आदि। कोंकण तट के आसपास की बोली को कोंकणी तथा नागपुर के आसपास की बोली को नागपुरी कहा जाता है। हिन्दी की तरह मराठी की लिपि भी देवनागरी है। मराठी में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। नामदेव, ज्ञानेश्वर, तुकाराम जैसे महान संतों की वाणी मराठी भाषा में ही है

▶ मराठी की लिपि भी देवनागरी है

(ङ) मागधी अपभ्रंश से विकसित भारतीय भाषाएँ

1. **बिहारी**- वास्तव में बिहारी अपने आप में कोई भाषा नहीं है अपितु बिहार राज्य में बोली जाने वाली विभिन्न बोलियों के समूह को ही बिहारी नाम दिया गया है, भोजपुरी, मगही और मैथिली इसकी प्रमुख बोलियां हैं। भोजपुरी बिहार की सबसे प्रमुख बोली है। यह बिहार के पश्चिमी तथा उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागों में बोली जाती है। भोजपुरी

में लोक-साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है परंतु साहित्यिक रचनाएँ कम हैं। मगही मगध क्षेत्र में बोली जाती है। यह मुख्यतः हजारीबाग, पटना और गया में बोली जाती है। मैथिली मिथिला क्षेत्र की बोली है। साहित्यिक दृष्टि से यह बोली सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। विद्यापति ने अपनी रचना 'पदावली' में मैथिली भाषा का ही प्रयोग किया है।

2. **बांग्ला**- 'बांग्ला' बंगाल प्रदेश की भाषा है। इस भाषा में संस्कृत के शब्दों की प्रधानता है। इसमें उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। रवींद्रनाथ टैगोर तथा शरद चंद्र चटर्जी ने बांग्ला भाषा में विश्वस्तरीय साहित्य रचा।
3. **उड़िया**- 'उड़िया' मुख्यतः उड़ीसा की भाषा है। उड़िया पर भी बांग्ला का प्रभाव है। उड़ीसा का एक नाम उत्कल भी है। अतः उड़िया को उत्कली भी कहा जाता है। इसकी लिपि देवनागरी से मिलती जुलती है। उड़िया में प्राचीन कृष्ण साहित्य मिलता है।

▶ महाराष्ट्र अपभ्रंश से मराठी

4. **असमिया**- 'असमिया' असम राज्य की भाषा है। यह बांग्ला से बहुत मिलती जुलती है। इसकी लिपि भी बांग्ला की लिपि के समान है। इसमें भी उच्च कोटि का साहित्य मिलता है।

(च) अर्धमागधी अपभ्रंश से विकसित भारतीय भाषाएँ

1. **'पूर्वी हिन्दी'**- पूर्वी हिन्दी का विकास अर्धमागधी से हुआ। 'पूर्वी हिन्दी' की प्रमुख बोलियाँ अवधी, बघेली तथा छत्तीसगढ़ी हैं।

अवधी- यह पूर्वी हिन्दी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाषा है। यह अवध के क्षेत्र में बोली जाती है। इसमें लोक-साहित्य तथा उच्च कोटि का साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। भक्तिकाल तथा रीतिकाल में अवधी भाषा का अत्यधिक प्रयोग हुआ। तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' तथा जायसी कृत 'पद्मावत' की भाषा अवधी ही है।

बघेली- 'बघेली' रीवां (मध्यप्रदेश) क्षेत्र में बोली जाती है। इसमें केवल लोक साहित्य मिलता है।

▶ पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ

छत्तीसगढ़ी- 'छत्तीसगढ़ी' मुख्यतः छत्तीसगढ़ राज्य में बोली जाती है। इसमें प्रचुर लोकसाहित्य मिलता है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिन्दी भाषा भारोपीय परिवार की है। आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में सिन्धी, गुजराती, लहंदा, पंजाबी, मराठी, उडिया, बांजली, असमिया, हिन्दी आदि प्रमुख है। इसके अतिरिक्त कश्मीरी भी भारत की एक महत्वपूर्ण भाषा है, किन्तु मूलतः वह भारत-ईरानी की दरद शाखा में आती है। संसार के समस्त भाषा-कुल में भारतीय भाषा कुल का और इस में भारतीय आर्यभाषाओं का विशेष महत्व है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा से मध्ययुगीन भारतीय आर्यभाषाओं का उद्भव और उस से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास हुआ है। वर्तमान समय की आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में पर्याप्त विकास हुआ है। इस की विभिन्न शाखाओं में भरपूर साहित्य रचना हो रही है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
2. पश्चिमी अपभ्रंश से विकसित भारतीय आर्य भाषाओं के बारे में अपना मत प्रकट कीजिए।
3. मागधी अपभ्रंश की भाषाओं पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
4. शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित भारतीय आर्यभाषाएँ कौन-कौन है? व्यक्त कीजिए।
5. पैशाची अपभ्रंश से विकसित भाषाओं का परिचय दीजिए।
6. पश्चिमी हिन्दी का उप भाषाओं पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
7. पूर्वी हिन्दी का प्रमुख बोलियाँ कितने है? व्यक्त कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ. किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ. भोलानाथ तिवारी।
2. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Video link

https://www.youtube.com/watch?v=JSSxgeAF1Bw

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3

हिन्दी का विकासात्मक स्वरूप

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- मानक भाषा और मानक भाषा का स्वरूप को जानता है
- काव्य भाषा की रूप में अवधि, ब्रज आदि का विकास की यात्रा को समझता है
- हिन्दी की संवैधानिक स्थिति को समझता है
- हिन्दी, हिंदुई, हिन्दुस्तानी, उर्दु आदि भाषाओं का सामान्य परिचय जानता है
- हिन्दी प्रसार के आंदोलन की जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

किसी भाषा के मानक भाषा बनने में उसे विकास के विभिन्न चरणों से गुजरना होता है। एक भाषा किसी क्षेत्रीय बोली से ही विकसित होकर मानक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित होती है। भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है। भाषिक आदान-प्रदान के बिना मानव जीवन बेकार है। भाषिक नियमों और बंदों की जानकारी के लिए व्याकरण का ज्ञान भी अनिवार्य बन जाता है। आगे चलकर उन्नति करते हुए वह बोली मानक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो जाती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

मानक हिन्दी, हिंदुई, हिन्दुस्तानी

Discussion / चर्चा

'मानक भाषा' किसी भाषा के उस स्वरूप को कहते हैं जो उस भाषा के पूरे क्षेत्र में शुद्ध माना जाता है तथा जिसे उस प्रदेश का शिक्षित और शिष्ट समाज अपनी भाषा का आदर्श रूप मानता है और प्रायः सभी औपचारिक परिस्थितियों में, लेखन, प्रशासन और शिक्षा, के माध्यम के रूप में हर संभव उसी भाषा को प्रयोग करता है। आज हिन्दी का जो मानक स्वरूप निर्धारित हो पाया है वह लगभग दस शताब्दियों का परिणाम है।

2.3.1 मानक हिन्दी का स्वरूप, काव्य भाषा के रूप में अवधी का उदय, काव्य भाषा के रूप में ब्रज का विकास

मानक हिन्दी का मूल आधार 'खड़ी बोली' है। हिन्दी की विभिन्न शैलियों एवं बोलियों में से एक 'खड़ी बोली' ने मानक हिन्दी की ओर अग्रसर होने के क्रम में शब्दावली के स्तर

पर विभिन्न स्रोतों का सहारा लिया है। शिक्षा, प्रशासन, वाणिज्य, समाचार-पत्र, कला और संस्कृति की विभिन्न विधाओं के लिये आदान प्रदान का माध्यम मानक भाषा के बाहरी रूप या बहिरंग आयाम हैं। जबकि अंतरंग आयामों के अंतर्गत मानक हिन्दी की भाषायी संरचना तथा व्याकरण व्यवस्था की दृष्टि से उसके स्वरूप को देख सकते हैं। इन्हीं आयामों के कारण हिन्दी निरन्तर विकसित और परिष्कृत होती रही है। मानक भाषा हमारे बृहत्तर समाज को सांस्कृतिक स्तर पर आपस में जोड़ती है और हम उसी के माध्यम से एक-दूसरे तक पहुँचते हैं।

- मानक हिन्दी का मूल आधार 'खड़ी बोली'

भाषा के रूप में अवधि का पहला स्पष्ट उल्लेख अमीर खुसरो की रचना खालिकबारी में मिलता है। रोड़ा कृत 'राउलवेल' व दामोदर पंडित कृत 'उक्ति-व्यक्ति प्रकरण' में अवधि के प्रयोग से स्पष्ट होता है कि अवधि एक भाषा के रूप में 13 वीं सदी में स्थापित हो चुकी थी। मूल प्रश्न यह है कि अवधि के मध्यकाल में एक काव्य-भाषा के रूप में स्थापित होने के पीछे कौन से उत्तरदायी कारक थे, और इसका स्वरूप कैसे था? अवधि की स्थापना के सम्बन्ध में पहला सुयोग यह हुआ कि सूफी कवियों ने अपने प्रेमाख्यानों की रचना में इसका प्रयोग किया। मुल्ला दाऊद की 'चन्दायन' ने एक ही झटके में अवधि को लोक भाषा के स्तर से उठाकर काव्यभाषा के रूप में स्थापित कर दिया। इसी परंपरा में कुतुबन की 'मृगावती' और जायसी की 'पद्मावत' है।

- अवधि एक भाषा के रूप में 13 वीं सदी में स्थापित

सूफी कवियों की अवधि में लोकभाषा की मिठास है, लोकजीवन के शब्दों का सुन्दर प्रयोग किया गया है। इसके अतिरिक्त बिंब योजना व अप्रस्तुत योजना ने इस भाषा को चरम स्तर तक पहुँचा दिया। तुलसी की कृतियों में अवधि ने नए आयामों को छुआ। यहाँ तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग किया गया है। तुलसी के हाथों में पड़कर यह भाषा नाद सौन्दर्य व आलंकारिकता से युक्त हुई। शुक्ल ने तुलसी को अनुप्रास का बादशाह इसी संदर्भ में कहा। तुलसी के बाद विशाल रामकाव्य परंपरा के स्तर पर धीरे-धीरे अवधि से दूर होकर व्रज भाषा के साथ जुड़ने लगी।

- अवधि में तत्सम शब्दों का प्रचुर प्रयोग

2.3.2 साहित्यिक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली का विकास

खड़ीबोली शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है; एक तो सहित्यिक हिन्दी खड़ीबोली के अर्थ में और दूसरे दिल्ली, मेरठ के आस- पास की लोक बोली के अर्थ में। खड़ीबोली हिन्दी आज राजभाषा और साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित है। खड़ीबोली हिन्दी का इतिहास भी पुराना है। खड़ीबोली में भी साहित्यिक रचनाएँ ब्रजभाषा और अवधि के साथ ही प्रारंभ हो गयी थी। वर्तमान समय में जिसे हम मानक हिन्दी के रूप में जानते हैं, वह खड़ीबोली का ही परिवर्तित रूप है। खड़ीबोली के संदर्भ में प्रायः यह भ्रम रहा है कि इसका साहित्यिक भाषा के रूप में विकास अवधि और व्रजा भाषा के बाद उन्नीसवीं सदी में हुआ। वास्तविकता यह है कि पुरानी हिन्दी के बाद जिस समय हिन्दी की अन्य बोलियाँ विकसित हुई, ठीक उसी समय खड़ीबोली का भी विकास होने लगा था।

- राजभाषा और साहित्यिक भाषा

2.3.3 हिन्दी की संवैधानिक स्थिति

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व देश में स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ-साथ हिन्दी को देश की राष्ट्र भाषा बनाये जाने की सर्वाधिक मांग की जाती रही थी। संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसम्बर 1946 को हुई और लगातार दो ढाई वर्ष तक संविधान निर्माण का कार्य चलता रहा। संविधान सभा में राजभाषा पर तीन दिन तक लम्बी बहस के पश्चात् 14 सितम्बर

- हिन्दी को राजाभाषा का स्थान देना

1949 को स्वतंत्र भारत के संविधान में हिन्दी को सर्व सम्मति से राजाभाषा का स्थान दे दिया गया। संविधान के भाग 17 के अनुछेद 343 से 351 तक राजभाषा सम्बन्धी विशेष प्रावधान दिए गए हैं।

हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में मान्यता स्वतंत्रता आंदोलन में देश के नेताओं ने देश को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए दी थी; क्योंकि हिन्दी ही भारत कि एक ऐसी भाषा थी जो देश में सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती थी। स्वतंत्रता आंदोलन को देशव्यापी बनाने के लिए आवश्यकता इस बात की थी कि कोई ऐसी भाषा चुनी जाये, जिसके माध्यम से स्वाधीन भारत का उद्घोष सारे देश में फ़ैल सके। समय की माँग को देखते हुए भारतीय नेताओं ने, चाहे उनका सम्बन्ध देश के किसी भी कोने से रहा हो, यह अनुभव किया कि सारे देश की भाषा यदि कोई भाषा हो सकती है तो वह 'हिन्दी' ही है, और हिन्दी को ही संपूर्ण देश के लिए संपर्क भाषा बनाने का निश्चय किया गया। गुजरात के महात्मा गाँधी, कश्मीर के जवाहरलाल नेहरू, महाराष्ट्र के लोकमान्य तिलक, बंगाल के रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पंजाब के लाला लाजपतराय, दक्षिण के चक्रवर्ती राजगोपालाचारी आदि अनेक नेताओं एक स्वर से हिन्दी को 'राष्ट्रभाषा' घोषित किया। हिन्दी स्वतंत्रता आंदोलन में शंखनाद की भाषा बनी।

▶ संपर्क भाषा बनाने का निश्चय

2.3.4 हिन्दी, हिंदुई, हिन्दुस्तानी, उर्दु

'हिन्दी' शब्द का सम्बन्ध प्रायः संस्कृत शब्द 'सिन्धु' से माना जाता है। 'सिन्धु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उस के आस पास की भूमि को 'सिन्धु' कहने लगे। यह 'सिन्धु' शब्द ईरानी में जाकर 'हिंदु' और और फिर 'हिन्द' हो गया और इस का अर्थ था हिन्द प्रदेश। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा वह 'हिन्द' शब्द धीरे-धीरे पूरे भारत का वाचक हो गया। डॉ. भोलानाथ तिवारी के मतानुसार हिन्दी का मूल अर्थ है 'हिदं का' या 'भारतीय'। व्यापक रूप में हिंदुस्तान में रहने वालों को हिंदू और उनके द्वारा व्यवहृत भाषा को 'हिन्दी' नाम दिया गया। इस संदर्भ में डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय का अभिमत है- शब्दार्थ की दृष्टि से 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग हिन्दी या भारत में बोली जाने वाली किसी भी आर्य अथवा द्रविड़ अथवा अन्य कुल की भाषा के लिए हो सकता है।

▶ व्यवहृत भाषा के रूप में 'हिन्दी'

हिंदुई नाम का प्रयोग प्राचीन हिन्दी केलिए काफी पहले से मिलता है। 13 वीं सदी में औफी और अमीर खुसरो ने इसका प्रयोग किया है। खालिक बारी में 'हिन्दी' और 'हिंदवी' दोनों का प्रयोग एक ही भाषा के लिए हुआ है, किन्तु हिन्दी का प्रयोग केवल 5 बार है, जब कि हिंदवी का 3 बार। इस का अर्थ यह हुआ कि पहले हिन्दी की तुलना में हिंदवी नाम ज्यादा प्रचलित था, धीरे-धीरे हिंदवी नाम उस भाषा के लिए सीमित हो गया, जिस में संस्कृत के शब्द अपेक्षाकृत अधिक थे, और हिंदुस्तानी उस भाषा को कहने लगे जिसमें अरबी-फारसी के शब्द ज्यादा थे।

▶ हिन्दी की तुलना में हिंदवी नाम ज्यादा प्रचलित

'हिन्दुस्तानी' नाम यूरोपीय लोगों का दिया हुआ है। उर्दू का बोलचाल वाला रूप हिन्दुस्तानी कहलाता है। केवल बोलचाल में प्रयुक्त होने के कारण इस में फारसी शब्दों की भरमार नहीं रहती, यद्यपि इसका झुकाव फारसी कि तरफ अवश्य रहता है। उत्पत्ति की दृष्टि से आधुनिक साहित्यिक हिन्दी तथा उर्दू के समान ही इसका आधार भी खड़ीबोली है। एक तरह से यह हिन्दी उर्दू कि अपेक्षा खड़ीबोली के अधिक निकट है। 'हिन्दुस्तानी' शिष्ट लोगों

▶ हिन्दस्तानी का आधार खड़ीबोली

की बोलचाल की कुछ परिमार्जित खड़ीबोली है। 'भाषा सर्वे' में ग्रीयर्सन महोदय ने इस बोली को 'वर्नाक्यूलर हिन्दुस्तानी' नाम दिया है।

▶ हिन्दी के उस दूसरे साहित्यिक रूप का नाम है 'उर्दू'

आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के उस दूसरे साहित्यिक रूप का नाम उर्दू है, जिस का व्यवहार उत्तर भारत के पढ़े लिखे मुसलमानों तथा उनसे अधिक संपर्क में आनेवाले कुछ हिंदुओं, जैसे पंजाबी, देशी काश्मीरी तथा पुरानी पीढ़ी के कायस्था आदि में पाया जाता है। व्याकरण के रूपों की दृष्टि से इन दोनों साहित्यिक भावनाओं में विशेष अंतर नहीं है, वास्तव में दोनों का मूलाधार एक ही है, किन्तु साहित्यिक वातावरण, शब्द समूह तथा लिपी दोनों में आकाश पाताल का भेद है। हिन्दी इस सब बातों केलिए भारत की प्राचीन संस्कृति तथा उस के वर्तमान रूप की ओर देखती है, उर्दू भारत के वातावरण में उत्पन्न होने और बंटने पर भी ईरान और अरब की सभ्यता और साहित्य से जीवन खास ग्रहण करती है।

▶ 'उर्दू' शब्द का विशेष

तुर्की भाषाओं में 'उर्दू' शब्द का अर्थ बाज़ार है। वास्तव में आरम्भ में उर्दू बाजारू भाषा थी। जैसे ईसाई धर्म ग्रहण कर लेने पर भारतीय भाषाएँ बोलनेवाले भारतीय अंग्रेजों से अधिक प्रभावित होने लगते हैं, उसी तरह मुसलमान धर्म ग्रहण कर लेने वाले हिन्दुओं में भी फारसी के बाद उर्दू का विशेष आदर होना स्वाभाविक था। उर्दू का साहित्य में प्रायोग दक्षिण के सूफी कवियों और मुसलमानी दरबारों से आरम्भ हुआ साधारण जन समुदाय की भाषा होने की कारण अपने घर पर उर्दू हेय समझी जाती थी। उर्दू भाषा अरबी-फारसी अक्षरों में लिखी जाती है।

2.3.5 हिन्दी प्रसार के आंदोलन

▶ हिन्दी का प्रचार-प्रसार

काँग्रेस की स्थापना से पूर्व ही बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात तथा पंजाब के राष्ट्रीय नेताओं द्वारा हिन्दी का प्रचार-प्रसार उसी प्रकार व्यापक रूप से किया, जिस प्रकार मध्यकाल में सूफी, संतों, फकीर तथा भक्तों ने किया। सर्वप्रथम विद्यासागर ने और फिर बाद में 1857 ई. में केशवचन्द्र सेन ने अपने समाचार पत्र में 'हिन्दी ही' अखिल भारत की जातीय भाषा या राष्ट्र भाषा बनाने के योग्य है- इस विषय पर निबंध लिखा। 1982 राजनारायण बोस ने और 1886 में भूदेव मुखर्जी ने भारत को एक जातीयता के सूत्र में बांधने केलिए हिन्दी की उपयोगिता के विषय पर विचार-समुज्ज्वल वकालत की। राजा राम मोहन राय ने कलकत्ता से 'बंगदूत' सन् 1926 में हिन्दी-अंग्रेजी तथा बंगाल में निकाला। नवीनचंद्र राय ने सन् 1868 में 'ज्ञान प्रदायिनी' के माध्यम से हिन्दी का प्रचार पंजाब में किया।

▶ पत्रकारिता के क्षेत्र में आंदोलन

इस प्रकार धार्मिक, सामाजिक, तथा राजनैतिक आन्दोलन की ये भाषा हिन्दी शताब्दियों से चली आ रही थी। उसका विकास पत्रकारिता के क्षेत्र में भी हुआ। सन् 1824 में कलकत्ता से 'उद्दंण्ड मार्तंड' प्रकाशित हुआ। राजा रामपाल सिंह ने सन् 1883 में लंदन से 'हिंदुस्तान' नामक पत्र निकाला। महाराष्ट्र में तिलक ने मराठी के साथ 'हिन्दी केसरी' निकाल। 'वंदे मातरम' समाचार-पत्र के 1905 के एक अग्रलेख में संपादक अरविन्द घोष ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने की वकालत की। उसके आधार पर भी रमेशचंद्र दत्त की अद्यक्षता में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के अधिवेशन में तिलक ने समग्र भारत केलिए एक भाषा मान लेने को राष्ट्रीय आन्दोलन की संज्ञा दी। जस्टिस शारदाचारण मिश्र ने 1905 में एक लिपि विस्तार परिषद की स्थापना की। महर्षि अरविन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा सुप्रसिद्ध भाषा विद्वान डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने हिन्दी का पर्याप्त समर्थन किया।

गाँधी जी हिन्दी के प्रश्न को स्वराज का प्रश्न मानते थे। वे गैर हिन्दी भाषी पहले और आखिरी सर्वमान्य राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में सामने रखकर भाषा- समस्या पर गम्भीरता से विचार किया। 1942 से 1945 का समय ऐसा था जब देश में स्वतंत्रता की लहर सबसे अधिक तीव्र थी, तब राष्ट्रभाषा से ओत-प्रोत जितनी रचनाएँ हिन्दी में लिखी गईं उतनी शायद किसी और भाषा में इतने व्यापक रूप से कभी नहीं लिखी गई। राष्ट्रभाषा प्रचार के साथ राष्ट्रीयता के प्रबल हो जाने पर अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। मुख्तसर, ब्रिटिश साम्राज्यवादी हिन्दी को आम आदमी की भाषा मानते थे। खड़ी बोली गद्य को पनपाने का श्रेय उन्हें ही जाता है। शुरू में सरकार की नीति हिन्दी के पक्ष में थी, पर बाद में उन लोगों ने उर्दू को बीच में लाकर फूट डालना शुरू किया। समाज सुधारकों एवं पत्रकारों ने राष्ट्रीय पुनर्जागरण के लिए माध्यम के रूप में हिन्दी को अपनाया और उसे आगे बढ़ाया। काँग्रेस ने राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान जनता से संवाद स्थापित करने के लिए हिन्दी को चुना और उसे राष्ट्रभाषा की गरिमा दी।

▶ पत्रकारिता के क्षेत्र में आंदोलन

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

मानक हिन्दी की महत्व यह है कि यह भाषा हमारी संवैधानिक और सामाजिक एकता को बढ़ावा देती है। इसके माध्यम से हम अपने देश में विभिन्न क्षेत्रों और भाषाओं से आए लोगों के बीच संवाद स्थापित कर सकते हैं। खड़ीबोली हिन्दी को अपना वर्तमान साहित्यिक रूप ग्रहण करने में करीब सौ साल समय लगा है। खड़ीबोली की विकास परंपरा ब्रजभाषा और अवधि आदि साहित्यिक भाषाओं से तो जुड़ा ही है, अन्य भारतीय भाषाओं से भी जुड़ा है। इस संदर्भ में उर्दू और दक्खिनी का नाम खास तौर से लिया जा सकता है। खड़ीबोली के स्वरूप ग्रहण में फोर्ट विलियम कॉलेज और भारतेन्दु मण्डल के रचनाकारों का महत्वपूर्ण योगदान है। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक संघ की भाषा, प्रादेशिक भाषाओं, न्यायालयों की भाषा के संबंध में उल्लेख किया गया है। भाषा किसी राष्ट्र के चरित्र की ज्यादा बड़ी कसौटी है। भाषा शक्तिशाली और जोरदार होती है, तो उसके इस्तेमाल करनेवाले लोग भी वैसे ही होते है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. मानक हिन्दी पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
2. काव्य भाषा के रूप में अवधि का विकास कैसे था? अपना विचार प्रस्तुत कीजिए।
3. हिन्दी, हिंदई, हिन्दुस्तानी, उर्दू, भाषाओं का परिचय दीजिए।
4. हिन्दी की संवैधानिक स्थिति पर टिप्पणी लिखिए।
5. हिन्दी प्रसार के आंदोलन पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Video link

.https://www.youtube.com/watch?v=v3zTupjyp80

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

हिन्दी के विविध रूप

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- बोलचाल की भाषा, संपर्क भाषा आदि का ज्ञान प्राप्त करता है
- राष्ट्र भाषा को समझता है
- राज भाषा के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- हिन्दी के प्रचार में संलग्न प्रमुख संस्थाओं को समझता है
- मानक भाषा और संचार भाषा की जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

भाषा मानवीय वाणी का वह रूप है, जो भावों एवं विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है। प्रारम्भ में वह एक बोली होती है। धीरे-धीरे विकसित होकर वह एक विभाषा या प्रान्तीय भाषा बन जाती है। प्रान्तीय भाषा यदि समृद्ध एवं सशक्त होती है, तो वह भाषा का रूप धारण कर लेती है। अधिक लोकप्रियता एवं जनता का समर्थन प्राप्त करके वह राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन हो जाती है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

बोलचाल की भाषा, राष्ट्रभाषा, संचार भाषा, संस्थाएँ

Discussion / चर्चा

भाषा का सर्जनात्मक आचरण के समानान्तर जीवन के विभिन्न व्यवहारों के अनुरूप भाषिक प्रयोजनों की तलाश हमारे दौर की अपरिहार्यता है। इसका कारण यही है कि भाषाओं को सम्प्रेषणपरक प्रकार्य कई स्तरों पर और कई सन्दर्भों में पूरी तरह प्रयुक्त सापेक्ष होता गया है। भाषा की पहचान केवल यही नहीं कि उसमें कविताओं और कहानियों का सृजन कितनी सप्राणता के साथ हुआ है, बल्कि भाषा की व्यापकतर संप्रेषणीयता का एक अनिवार्य प्रतिफल यह भी है कि उसमें सामाजिक सन्दर्भों और नये प्रयोजनों को साकार करने की संभावना है।

2.4.1 बोलचाल की भाषा, संपर्क भाषा

'बालचाल की भाषा' को समझने के लिए 'बोली' (Dialect) को समझना ज़रूरी है।

> ▶ बोलचाल की बोली

'बोली' उन सभी लोगों की बोलचाल की भाषा का वह मिश्रित रूप है जिनकी भाषा में पारस्परिक भेद को अनुभव नहीं किया जाता है। विश्व में जब किसी जन-समूह का महत्त्व किसी भी कारण से बढ़ जाता है तो उसकी बोलचाल की बोली 'भाषा' कही जाने लगती है, अन्यथा वह 'बोली' ही रहती है।

> ▶ सम्पर्क भाषा के तौर पर हिन्दी

अनेक भाषाओं के अस्तित्व के बावजूद जिस विशिष्ट भाषा के माध्यम से व्यक्ति-व्यक्ति, राज्य-राज्य तथा देश-विदेश के बीच सम्पर्क स्थापित किया जाता है उसे सम्पर्क भाषा कहते हैं। एक ही भाषा परिपूरक भाषा और सम्पर्क भाषा दोनों ही हो सकती है। आज भारत में सम्पर्क भाषा के तौर पर हिन्दी प्रतिष्ठित होती जा रही है जबकि अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी सम्पर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो गई है। सम्पर्क भाषा के रूप में जब भी किसी भाषा को देश की राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा के पद पर आसीन किया जाता है तब उस भाषा से कुछ अपेक्षाएँ भी रखी जाती हैं।

2.4.2 राष्ट्र भाषा

> ▶ समस्त राष्ट्र की भाषा

जब किसी भाषा को समस्त राष्ट्र की भाषा मान लिया जाता है, तब वह राष्ट्रभाषा कहलाती है। जब कोई बोली विभाषा और फिर क्रमशः साहित्यिक रचना का माध्यम बनकर भाषा का रूप धारण कर लेती है और लोकप्रियता के फलस्वरूप समस्त राष्ट्र में विचार-विनिमय का माध्यम बन जाती है, तब वह राष्ट्रभाषा के पद को प्राप्त होती है। कुछ विद्वानों की राय है कि राष्ट्रभाषा वह भाषा है, जिसे राजकीय क्षेत्र में समस्त राष्ट्र के कार्य संचालन की स्वीकृति प्राप्त हो। हमारे विचार में भाषा राजकीय नहीं, सामाजिक सम्पत्ति है। राजकीय क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा राजभाषा कही जानी चाहिए, क्योंकि यह आवश्यक नहीं है कि राजभाषा और राष्ट्रभाषा के पद को एक ही भाषा प्राप्त हो। उदाहरण के लिए हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है, क्योंकि वह जन-जन का कण्ठहार है, परन्तु वह राजभाषा के आसन पर अभी तक प्रतिष्ठित नहीं हो पायी है।

> ▶ सार्वजनिक कार्यों में उपयोगित

हमारे देश के राजनीतिक नेतागण तो अभी तक यह तय नहीं कर पाये हैं कि राज-काज के संचालन के लिए किस भाषा को अंगीकार किया जाए। तब क्या यह समझा जाए कि भारत की कोई राष्ट्रभाषा नहीं। राजनीतिज्ञ भले ही राजभाषा के पीछे लड़ते-झगड़ते रहें, हिन्दी राष्ट्रभाषा की धारा अनवरत रूप से प्रवाहमान है। राष्ट्रभाषा वस्तुतः भाषा का व्यापक रूप है, जिसका व्यवहार समस्त राष्ट्र में होता है। राष्ट्रभाषा वस्तुतः देश की संस्कृति एवं देश के आदर्शों तथा देशवासियों की आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति करती है। वही भाषा राष्ट्रभाषा बन सकती है, जिसमें सामर्थ्य है कि वह देश के विभिन्न भागों के निवासियों के मध्य सम्पर्क स्थापित कर सके तथा अन्य उपभाषाओं एवं विभाषाओं की प्रगति में सहायक बन सके।

2.4.3 राजभाषा के रूप में हिन्दी

> ▶ राज-काज के कार्यों में प्रयोग

संविधान के द्वारा जिस भाषा में शासक या शासन का कामकाज होता है उसे 'राजभाषा' कहते हैं। हिन्दी को राजभाषा बनाने की माँग सबसे पहले श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने 'संविधान निर्मात्री सभा' के समक्ष 14 सितंबर, 1949 ई० में रखी। इसी दिन इस सभा के द्वारा पूर्ण बहुमत से इस माँग को स्वीकार कर लिया गया। राष्ट्रीय हिन्दी प्रचार समिति वर्धा के द्वारा 1953 ई० में 14 सितंबर (प्रतिवर्ष) हिन्दी दिवस मनाने की माँग रखी गई। इसे भी स्वीकार कर लिया गया। 14 सितंबर 1953 ई० को प्रथम हिन्दी दिवस मनाया गया। हिन्दी को राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 ई० में संविधान के अंतर्गत 343 (क) के अनुसार

दिया गया।

2.4.4 मानक भाषा, संचार भाषा

भाषा के स्थिर तथा सुनिश्चित रूप को मानक या परिनिष्ठित भाषा कहते हैं। भाषाविज्ञान कोश के अनुसार किसी भाषा की उस विभाषा को परिनिष्ठित भाषा कहते हैं जो अन्य विभाषाओं पर अपनी साहित्यिक एवं सांस्कृतिक श्रेष्ठता स्थापित कर लेती है तथा उन विभाषाओं को बोलने वाले भी उसे सर्वाधिक उपयुक्त समझने लगते हैं। मानक भाषा शिक्षित वर्ग की शिक्षा, पत्राचार एवं व्यवहार की भाषा होती है। इसके व्याकरण तथा उच्चारण की प्रक्रिया लगभग निश्चित होती है। मानक भाषा को टकसाली भाषा भी कहते हैं। इसी भाषा में पाठ्य-पुस्तकों का प्रकाशन होता है। हिन्दी, अंग्रेजी, फ्रेंच, संस्कृत तथा ग्रीक इत्यादि मानक भाषाएँ हैं।

▶ शिक्षा, पत्राचार एवं व्यवहार की भाषा

2.4.5 हिन्दी के प्रचार में संलग्न प्रमुख संस्थाएँ

भारत के लगभग प्रत्येक राज्य में एक या अधिक संस्थाएँ हिन्दी का प्रचार कर रही हैं जो अपने राज्य के लोगों को हिन्दी सिखाती हैं तथा वहाँ हिन्दी को लोकप्रिय बनाने का प्रयत्न कर रही है। यहाँ तक कि हिन्दी के कट्टर विरोधी माने जाने वाले तमिलनाडु में 'दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास' बहुत दिनों से हिन्दी-प्रचार का कार्य कर रही है, जिसकी परीक्षाओं में प्रतिवर्ष हजारों छात्र-छात्राएँ बैठते हैं। नागालैंड में, जिसने अपनी राज्य-भाषा अंग्रेजी घोषित कर रही है, हिन्दी प्रचार का कार्य सरकार द्वारा किया जा रहा है। प्रत्येक राज्य की स्थानीय संस्थाओं के अतिरिक्त कुछ संस्थाएँ अखिल भारतीय स्तर की संस्थाएँ हैं। ये संस्थाएँ हिन्दी परीक्षाएँ आयोजित करती है, साथ ही हिन्दी के श्रेष्ठ और उपयोगी साहित्य का प्रकाशन भी करती रहती हैं।

▶ प्रमख हिन्दी प्रचार सँस्थाओं का उदय

2.4.5.1 राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा

इसी भाषाएँ भारत के प्रत्येक हिन्दी-भाषी राज्य में स्थापित है, साथ ही विदेशों में इसकी अनेक शाखाएँ है, जो सीमित द्वारा आयोजित परीक्षाओं की व्यवस्था तथा हिन्दी-प्रचार का कार्य करती रहती हैं। इस समिति की स्थापना महात्मा गांधी की प्रेरणा से बीसवीं सदी के तीसरे दशक में की गई। इसी ने 'हिन्दुस्तानी' के रूप में हिन्दी-उर्दू मिली सामान्य जन-भाषा का प्रचार करना आरंभ किया था।

▶ गाँधिजी की प्रेरणा से

2.4.5.2 हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

इस संस्था का प्रधान कार्य हिन्दी की विभिन्न परीक्षाएँ आयोजित करना है। इसकी 'साहित्यरत्न', 'विशारद' आदि उपाधियों को बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। इस संस्था ने देश-विदेश में हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में ऐतिहासिक महत्व की भूमिका याद की है। इसकी मासिक-पत्रिका 'सम्मेलन-पत्रिका' किसी समय हिन्दी की प्रमुख पत्रिका मानी जाती थी।

2.4.5.3 हिन्दी-प्रचार सभा, हैदराबाद

इसका कार्य क्षेत्र आंध्रा, कर्नाटक और महाराष्ट्र हैं। हिन्दी का प्रचार-प्रसार और साहित्य-निर्माण तथा उसका प्रकाशन इस संस्था के मुख्य उद्देश्य हैं। इसके लगभग पाँच सौ केंद्रों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। इसकी परीक्षाएँ भी चल रही हैं।

▶ विभिन्न समितियाँ

2.4.5.4 महाराष्ट्र राष्ट्र सभा, पुणे

यह सम्पूर्ण महाराष्ट्र में हिन्दी प्रचार का कार्य करती है। यह भाषा हिन्दी, उर्दू और

हिन्दुस्तानी को एक भाषा तथा देवनागरी और अरबी लिपि को उसकी लिपियाँ मानती है। यह राष्ट्रभाषा की परिभाषाएँ भी आयोजित करती है। इसके अतिरिक्त हिन्दी-शिक्षण, पुस्तक-प्रकाशन, पुस्तकालयों और विद्यालयों का आयोजन इन संस्था के प्रधान कार्य हैं।

2.4.5.5 असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

- महाराष्ट्र राष्ट्र सभा, पुणे, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

यह समिति असम, मनीपुर, त्रिपुरा, मेघालय, अरुणाचल, नागालैण्ड और मिजोरम में हिन्दी-प्रचार का कार्य करती है। यह हिन्दी की परीक्षाएँ भी आयोजित करती है, जिसके लगभग पाँच सौ परीक्षा-केंद्र भारत के इस सम्पूर्ण पूर्वी प्रदेश में फैले हुए हैं। इसकी परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लगभग पैंतीस हजार छात्र-छात्राएँ परीक्षा देते हैं। इसका अपना विशाल पुस्तकालय और प्रकाशन विभाग है। इसकी अनेक परीक्षाओं को केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता मिली हुई है।

2.4.5.6 केरल हिन्दी-प्रचार सभा

- हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन

यह केरल में हिन्दी की परीक्षाएँ आयोजित करती है। साथ ही हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करती है। इसके अपने विद्यालय और परीक्षा-केंद्र हैं। हिन्दी, मलयालम और तमिल भाषाओं में सामंजस्य स्थापना करने के प्रयोजन से 'राष्ट्रवाणी' नाम की एक त्रिभाषा साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन किया गया। इसके अतिरिक्त 'केरल ज्योति' नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी हो रहा है। सभा भवन में एक केन्द्रीय हिन्दी महाविद्यालय कार्य कर रहा है। सभा का प्रकाशन विभाग भी सुचारू रूप से चल रहा है।

2.4.5.7 दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

- गांधीजी इसके आजीवन आद्यक्ष

इसकी स्थापना सन् 1918 में गांधीजी की प्रेरणा से की गई थी। गांधीजी इसके आजीवन आद्यक्ष रहे थे। यह संस्था सम्पूर्ण अहिन्दी-भाषी दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार बड़ी निष्ठा के साथ करती आ रही है। यही अपनी परीक्षाएँ चलती हैं, प्रकाशन करती है, इसके अपने विद्यालय, परीक्षा-केंद्र और पुस्तकालय हैं। सभा के विश्वविद्यालय-विभाग में स्नातकोत्तर अध्ययन तथा अनुसंधान कार्य होता है। 'हिन्दी-प्रचार समाचार' इस संस्था का अधिकृत मुखपत्र है। हिन्दी प्रचार की दृष्टि से इस संस्था का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

2.4.5.8 नागरी प्रचारिणी सभा, काशी

- हिन्दी के अमूल्य ग्रंथों का प्रकाशन

यह सभा देश के हिन्दी की अत्यधिक महत्वपूर्ण संस्था है। इसका हिन्दी-ग्रंथों का पुस्तकालय भारत का सबसे बड़ा हिन्दी-पुस्तकालय माना जाता है। यह संस्था प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की खोज, उनके सम्पादन-प्रकाशन, हिन्दी के महत्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन आदि कार्य करती रहती है। इसने 'हिन्दी विश्व कोश', 'हिन्दी साहित्य का बृहद इतिहास', 'हिन्दी शब्द सागर' जैसे हिन्दी के अमूल्य ग्रंथ प्रकाशित किए हैं। भारतेन्दु-युग के अनंतर हिन्दी साहित्य की जितनी भी उल्लेखनीय प्रवृत्तियाँ रही हैं, उन सबके नियमन, नियंत्रण, संचालन में इसका महत्वपूर्ण योग रहा है।

2.4.5.9 बिहारी राष्ट्रभाषा परिषद

- अग्रणी संस्थाओं में स्थान

इसके प्रकाशन लोक-भाषा अनुसंधान, प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ-शोध, साहित्यिक इतिहास, शब्दकोश, अनुसंधान पुस्तकालय आदि अनेक विभाग हैं। हिन्दी के महत्वपूर्ण ग्रंथों के प्रकाशन की दृष्टि से इस संस्था को अग्रणी संस्थाओं में स्थान प्राप्त है।

2.4.5.10 केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद

इसका गठन केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों में हिन्दी-भाषा और साहित्य के प्रति अभिरुचि

उत्पन्न करने के लिए किया गया है। देश में इसकी अनेक शाखाएँ हैं।

2.4.5.11 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

▶ अहिन्दी-भाषी राज्यों के शिक्षक छात्र-छात्राओं को हिन्दी सिखाने के लिए

आरंभ में, इसकी स्थापना सन् 1952-53 में एक अखिल भारतीय विद्यालय के रूप में की गई थी। उस समय की कक्षाएँ नागरी प्रचारिणी सभा, आगरा में चल करती थीं। बाद में, इन की राष्ट्रीय उपयोगिता का अनुभव कर भारत सरकार ने इसे अपने संरक्षण में ले लिया। आज यह संस्थान एक विशाल रूप में अहिन्दी-भाषी राज्यों के शिक्षक छात्र-छात्राओं को हिन्दी की शिक्षा देने में संलग्न है। इस में हिन्दी भाषा और साहित्य संबंधी उच्च अध्ययन, हिन्दी-शिक्षण की वैज्ञानिक प्रणाली-विज्ञान का विकास, अनुसंधान, हिन्दी और अन्य भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन आदि कार्य होते रहते हैं। इसका अपना प्रकाशन-विभाग भी है।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति और विकास संबंधी एक मत यह है कि 'हिन्दी भाषा' आरंभ से ही बोलचाल की भाषा थी। इसके विपरीत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश अवहट आदि बोलचाल की भाषाएँ न होकर साहित्य की भाषाएँ थीं। इन भाषाओं के समानांतर बोलचाल की वह मूल भाषा निरंतर चलती रही थी और बोलचाल की वही मूल या आदिम भाषा आधुनिक विभिन्न उत्तर भारतीय भाषाओं के रूप में विकसित हुई, न कि संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश की विकास-प्रक्रिया से उनकी उत्पत्ति हुई थी। राज भाषा का सीधा सादा अर्थ है राजकाज अथवा सरकारी काम काज की भाषा। हिन्दी को इतने विशाल पैमाने पर राष्ट्र कि यह स्वीकृति न मिली होती, तो देश के कोने-कोने में छाई हिन्दी प्रचार संस्थाएँ पहले तो अस्तित्व में ही नहीं आ पाती और यदि अस्तित्व में आ भी जाती तो उन्हें अकाल मृत्यु की यंत्रणा झेलनी पड़ती। हिन्दी भारत के जन-मानस द्वारा स्वीकृत देश की राष्ट्र भाषा है। देश की किसी भी अन्य भाषा से इसका कोई द्वेष नहीं है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. बोलचाल की भाषा और संपर्क भाषा, में अंतर क्या है ?
2. 'राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी' इस पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
3. मानक भाषा से क्या तात्पर्य है? व्यक्त कीजिए।
4. प्रमुख हिन्दी प्रचार संस्थाओं के बारे में टिप्पणी लिखिए।
5. राज भाषा के रूप में हिन्दी टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिन्दी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।

- भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Video link

https://www.youtube.com/watch?v=ewhAbBRn2TM

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

भारत में लिपि का विकास

BLOCK-03

Block Content

Unit 1 : लिपि का उद्‌भव और विकास

Unit 2 : भारत की प्राचीन लिपियाँ-ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि

Unit 3 : देवनागरी लिपि- उद्‌भव और विकास

Unit 4 : देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, देवनागरी लिपि का मानकीकरण

इकाई : 1

लिपि का उद्भव और विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- लिपि से परिचित होता है
- लिपि का उद्भव और विकास के बारे में जानता है
- लिपि की विभिन्न प्रकार को समझता है
- चित्रलिपि की उपयोगिता को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

भाषा अपने मूल रूप में ध्वनि पर आधारित है। ध्वनियाँ ही उच्चरित होती है और सुनी जाती है। इस प्रकार भाषा की काल और स्थान की दृष्टि से सीमा है। वह केवल तभी सुनी जा सकती है जब बोली जाती है तथा वहीं तक सुनी जा सकती है जहाँ तक आवाज़ जा सकती है। काल और स्थान की इस सीमा के बंधन से भाषा को निकलने के लिए लिपि का जन्म हुआ। भाषा के विकसित हो जाने के बाद ही लिपि का विकास हुआ।

Keywords / मुख्य बिन्दु

चित्रलिपि, आक्षरिक लिपि, वर्णिक लिपि, प्रतीकात्मक लिपि

Discussion / चर्चा

जब हम किसी भी भाषा में अपने मुख से बोलते हैं, तो हमारे मुख से जो ध्वनि निकलती हैं, इन ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता हैं, वह चिन्ह उस भाषा की लिपि कहलाती हैं। जैसे- हिन्दी भाषा को लिखने के लिए देवनागरी लिपि तथा अंग्रेजी भाषा को लिखने के लिए रोमन लिपि का प्रयोग किया जाता हैं। एक ही लिपि का उपयोग एक से ज्यादा भाषा को लिखने के लिए किया जा सकता है, भाषा की ध्वनि उनके बोलने का ढंग अलग हो सकता है जिसे किसी एक लिपि में लिखा जा सकता है। कोई भी भाषा किसी एक लिपि पर निर्भर नहीं।

3.1.1 लिपि का उद्भव

भाषा की उत्पत्ति की भांति ही लिपि की उत्पत्ति के विषय में भी पुराने लोगों का विचार था कि ईश्वर या किसी देवता द्वारा यह कार्य संपन्न हुआ। लिपि की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों में परस्पर मतभेद रहा है। विद्वानों का एक वर्ग लिपि के आविष्कर्ता के रूप में ब्रह्मा को मानते हैं। उनका कथन है और प्रबल मान्यता यही है कि भारत में लिपि के लिए आविष्कर्ता के रूप में और कोई नहीं केवल 'ब्रह्मा' हैं। विद्वानों का दूसरा वर्ग इस मान्यता के विरोध में हैं। वे परंपरागत मान्यता का खंडन करते हुए विकासवाद के सिद्धांत को प्रमुख मानते हैं। उनके मतानुसार, 'भाषा की भांति लिपि भी मनुष्य के बुद्धि द्वारा अर्जित संपत्ति है और हमें इसी सिद्धांत पर लिपि का मूल्यांकन करना चाहिए।' परंपरागत विद्वान अपने मत को बल देते हुए लिखते हैं कि सरस्वती की वीणा हमें भाव और वर्ण इन दोनों को समझाने की चेष्टा करती है। वीणा के स्वर भाषा के ध्वनिमयी रूप को रेखांकित करते हैं, तो दूसरे हाथ में जो पुस्तक है वह हमें वर्ण के उद्भव की ओर संकेत करती है। इसी प्रकार मिस्री लोग अपनी लिपि का कर्ता थाथ (Thoth) या आइसिस (Isis)को, बेबिलोनिया के लोग नेबो (Nebo) को, पुराने ज्यू लोग मोजेज (Moses) को, यूनानी लोग हर्मेस (Hermes) को तथा पैलमीडप, प्रामेथ्यूस, आर्फ्रुस तथा लिनोज् आदि अन्य पौराणिक व्यक्तियों को मानते हैं। पर भाषा की लिपि के संबंध में भी इस प्रकार के मत अंधविश्वास मात्र हैं। तथ्य है कि मनुष्य ने अपनी आवश्यकतानुसार लिपि को स्वयं जन्म दिया।

▶ लिपी की उत्पत्ति सम्बंधित परंपरागत मान्यता

3.1.2 लिपि की परिभाषा

किसी भी भाषा को लिखित या स्थायी रूप देने के लिए जिन चिह्नों या लिखित संकेतों का प्रयोग किया जाता है वे लिपि कहलाते हैं। एक ही लिपि का प्रयोग एक से अधिक भाषाओं को लिखने के लिए किया जा सकता है। जैसे- हिन्दी व संस्कृत दोनों को लिखने के लिए एक ही लिपि देवनागरी का प्रयोग होता है। अंग्रेजी भाषा की लिपि का नाम 'रोमन' है तथा उर्दू भाषा की लिपि का नाम 'फारसी' है।

▶ एक से अधिक भाषा को लिखने के लिए एक लिपि का उपयोग

3.1.3 लिपि का विकास

आज तक लिपि के सम्बन्ध में जो प्राचीनतम सामग्री उपलब्ध है, उस आधार पर कहा जा सकता है कि 4,000 ई० पू० के मध्य तक लेखन की किसी भी व्यवस्थित पद्धति का कहीं भी विकास नहीं हुआ था और इस प्रकार के प्राचीनतम अव्यवस्थित प्रयास 10,000 ई० पू० और 4,000 ई० पू० के बीच लगभग 6,000 वर्षों में धीरे-धीरे लिपि का प्रारंभिक विकास होता रहा।

▶ लिपि का क्रमिक विकास

लिपि के विकास-क्रम में आने वाली विभिन्न प्रकार की लिपियाँ-

1. चित्रलिपि

2. सूत्रलिपि
3. प्रतीकात्मक लिपि
4. भावमूलक लिपि
5. भाव-ध्वनिमूलक लिपि
6. ध्वनिमूलक लिपि

▶ विभिन्न प्रकार के लिपि

3.1.3.1 चित्रलिपि

▶ चित्रलिपि का उद्‌भव

चित्र-लिपि ही लेखन के इतिहास की पहली सीढ़ी है। पर वे प्रारम्भिक चित्र केवल लेखन के इतिहास के आरम्भिक प्रतिनिधि थे, यह सोचना गलत होगा। उन्हीं चित्रों में चित्रकला के इतिहास का भी आरम्भ होता है, और लेखन के भी इतिहास का उस काल के मानव ने कंदराओं की दीवारों पर या अन्य चीजों पर वनस्पति, मानव शरीर या अंग तथा ज्यामितीय शक्लों आदि के टेढ़े-मेढ़े चित्र बनाये होंगे। यह भी संभव है कि कुछ चित्र धार्मिक कर्मकाण्डों के हेतु देवी-देवताओं के बनाये जाते रहे हों। इस प्रकार के पुराने चित्र दक्षिणी फ्रांस, स्पेन, क्रीट, मेसोपोटामिया, यूनान, इटली, पुर्तगल, साइबेरिया-उज़बेकिस्तान, सीरिया, मिस्र, ग्रेट ब्रिटेन, केलिर्फोनिया, ब्राजील, तथा ऑस्ट्रेलिया आदि अनेकानेक देशों में मिले हैं। ये पत्थर, हड्डी, काठ, सींग, हाथीदांत, पेड़ की छाल, जानवरों की खाल तथा मिट्टी के बर्तन आदि पर बनाए जाते थे।

▶ चित्रलिपि की उपयोगिता

चित्रलिपि में किसी विशिष्ट वस्तु के लिए उसका चित्र बना दिया जाता था, जैसे सूर्य के लिए गोला और उसके चारों ओर निकलती रेखाएँ, विभिन्न वस्तुओं के लिए उनके चित्र, आदमी के लिए आदमी का चित्र तथा उसके विभिन्न अंगों के लिए उन अंगों के चित्र आदि। चित्रलिपि की परम्परा उस प्राचीन काल से आज तक किसी न किसी रूप में चली आ रही है। भौगोलिक नक्शों में मंदिर, मस्जिद, बाग तथा पहाड़ आदि तथा पंचांगों में ग्रह आदि चित्रों द्वारा ही प्रकट किये जाते हैं। प्राचीन काल में चित्र लिपि बहुत ही व्यापक रही होगी, क्योंकि इसके आधार पर किसी भी वस्तु का चित्र बनाकर उसे व्यक्त कर सकते रहे होंगे। इसे एक अर्थ में अन्तर्राष्ट्रीय लिपि भी माना जा सकता है, क्योंकि किसी भी वस्तु या जीव का चित्र सर्वत्र प्रायः एक-सा ही रहेगा, और उसे देखकर विश्व का कोई भी व्यक्ति जो उस वस्तु या जीव से परिचित होगा, उसका भाव समझ जाएगा और इस प्रकार उसे पढ़ लेगा। पर यह तभी तक संभव रहा होगा जब तक चित्र मूल रूप में रहे होंगे।

3.1.3.2 सूत्रलिपि

सूत्र लिपि का इतिहास भी बहुत पुराना है। इसकी परम्परा प्राचीन काल से आज तक किसी

न किसी रूप में चली आ रही है। स्मरण के लिए आज भी लोग रूमाल आदि में गांठ देते हैं। सालगिरह या वर्षगांठ में भी वहीं परम्परा अक्षुण्ण है। प्राचीन काल में सूत्र, रस्सी तथा पेड़ों की छाल आदि में गांठ दी जाती थी। किसी बात को सूत्र में रखने या सूत्र यादकर पूरी बात को याद रखने की परम्परा का भी संबंध इसी से ज्ञात होता है। सूत्रों में गांठ आदि देकर भाव व्यक्त करने की परम्परा भी काफी प्राचीन है। इस आधार पर भाव कई प्रकार से व्यक्त किये जाते रहे हैं, जिनमें प्रधान निम्नांकित है-

(क) रस्सी में रंग-बिरंगे सूत्र बांधकर।

(ख) रस्सी को रंग-बिरंगे रंगों से रंग कर।

(ग) रस्सी या जानवरों की खाल आदि में भिन्न-भिन्न रंगों के मोती, घोंघे, मूंगे या मनके आदि बांधकर।

(घ) विभिन्न लम्बाइयों की रस्सियों से।

(ङ) विभिन्न मोटाइयों के रस्सियों से।

▶ सूत्रलिपि का इतिहास

(च) रस्सी में तरह-तरह की तथा विभिन्न दूरियों पर गांठें बांधकर।

(छ) डंडे में भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न मोटाइयों या रंगों की रस्सी बांध कर।

इस तरह के लेखन का उल्लेख 5 वीं सदी के ग्रंथकार हेरौडोटस ने किया है। इस प्रकार का सर्वश्रेष्ठ उदाहण पीरू की 'क्वीपू' है। 'क्वीपू' में भिन्न-भिन्न लम्बाइयों, मोटाइयों तथा रंगों के सूत (जो प्रायः बटे ऊन के होते थे) लटकाकर भाव प्रकट किये जाते थे। कहीं-कहीं गांठें भी लगाई जाती थी। इनके द्वारा गणना की जाती थी तथा ऐतिहासिक घटनाओं का भी अंकन होता था। पीरू के सैनिक अफसर इस लिपि का विशेष प्रयोग करते थे। इसके माध्यम से सेना का एक वर्णन आज भी प्राप्त है पर उसे पढ़ने या समझने का कोई साधन नहीं है। चीन तथा तिब्बत में भी प्राचीनकाल में सूत्र लिपि का व्यवहार होता था। बंगाल के संथालों तथा कुछ जापानी द्वीपों आदि में अब भी सूत्र लिपि कुछ रूपों में प्रयोग में आती रही है। टंगानिका के मकोन्दे लोग छाल की रस्सियों में गांठ देकर बहुत दिनों तक वे घटनाओ तथा समय की गणना करते आये हैं।

▶ सूत्रलिपि का व्यवहार

3.1.3.3 भावाभिव्यक्ति की प्रतीकात्मक पद्धति या प्रतीकात्मक लिपि

शुद्ध अर्थ में लिपि न होते हुए भी, इस रूप में कि आँख के सहारे दूरस्थ व्यक्ति के विचार भी उनके द्वारा भेजी गई वस्तुओं के द्वारा जाने जा सकते हैं, यह पद्धति लिपि कही जा सकती है। कई देशों और कबीलों में प्राचीन काल से इसका प्रचार मिलता है। तिब्बती-चीनी सीमा पर मुर्गी के बच्चे का कलेजा, उसकी चर्बी के तीन टुकड़े तथा एक मिर्च लाल कागज में लपेट कर भेजने का अर्थ रहा है कि युद्ध के लिए तैयार हो जाओ। गार्ड का लाल या हरी झंडी दिखलाना, युद्ध में सफेद रंग का झंडा फहराना तथा स्काउटों का हाथ से बात-चीत करना भी इसी के अंतर्गत आ सकता है। गूंगे-बहरों के वार्तालाप का आधार भी कुछ इसी प्रकार का साधन है। इस प्रकार विचाराभिव्यक्ति के साधन भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के मिलते हैं। कांगो नदी की घाटी में कोई हरकारा जब कोई महत्वपूर्ण समाचार लेकर किसी के पास जाता था तो भेजने वाला उसे एक केले की पत्ती दे देता था। यह पत्ती 6 इंच लंबी

विचाराभिव्यक्ति के साधन

होती थी और दोनों और पत्ती के चार-चार भाग किये रहते थे। कम महत्व के समाचार के साथ चाकू या भाले आदि भेजे जाते थे। सामान्य समाचारों के साथ कुछ भी नहीं भेजा जाता था। कहना न होगा कि लिपि के अन्य रूपों की भांति यह बहुत व्यापक नहीं है और इसका प्रयोग बहुत ही सीमित है।

3.1.3.4 भावमूलक लिपि

भावों की अभिव्यक्ति

भावमूलक लिपि चित्र लिपि का ही विकसित रूप है। चित्रलिपि में चित्र वस्तुओ को व्यक्त करते थे, पर भावलिपि में स्थूल वस्तुओं के अतिरिक्त भावों को भी व्यक्त करते हैं। उदाहरणार्थ चित्र लिपि में सूर्य के लिए एक गोला बनाते थे पर भावमूलक लिपि में यह गोला सूर्य के अतिरिक्त सूर्य से संबद्ध अन्य भावों को भी व्यक्त करने लगा। जैसे सूर्य देवता, गर्मी, दिन तथा प्रकाश आदि। इसी प्रकार चित्रलिपि में पैर का चित्र पैर को व्यक्त करता था पर भावमूलक लिपि में यह चलने का भी भाव व्यक्त करने लगा। कभी-कभी चित्र लिपि के दो चित्रों को एक में मिलाकर भी भावमूलक लिपि में भाव व्यक्त किये जाते हैं। जैसे दु:ख के लिए आँख का चित्र और उससे बहता आँसू या सुनने के लिए दरवाजे का चित्र और उसके पास कान। भावमूलक लिपि के उदाहरण उत्तरी अमेरिका, चीन तथा पश्चिमी अफ्रीका आदि में मिलते हैं। इस लिपि के द्वारा बड़े-बड़े पत्र आदि भी भेजे जाते हैं।

समुन्नत तथा अभिव्यक्ति में सफल-भावमूलक लिपि

पत्र लिखने वाला (1) उस कबीले का सरदार है, जिसका गणचिन्ह (टोटेम) गरूड़ है। उसके सिर पर दो रेखाएँ यह स्पष्ट कर रही हैं कि वह सरदार है। उसके आगे बढ़ा हुआ हाथ यह प्रकट कर रहा है कि वह मैत्री-संबंध स्थापित करना चाहता है। उसके पीछे उसी के कबीले के चार सिपाही हैं। छठां व्यक्ति मत्स्य गणचिन्ह के कबीले का है। नवां किसी और कबीले का है। उसके सर के चारों ओर की रेखाएं यह स्पष्ट करती है कि पहले सरदार से वह अधिक शक्तिशाली सरदार है। सबकी आँखों को मिलाने वाली रेखा उनसे मतैक्यता प्रकट करती है। नीचे के तीन मकान यह संकेत दे रहे हैं कि ये तीन सिपाही प्रेसिडेंट के तौर-तरीके अपनाने को तैयार है। पत्र इस प्रकार पढ़ा जा सकता है- 'मैं, गरुड़ गणचिन्ह के कबीले का सरदार, मेरे कई सिपाही, मत्स्य गणचिन्ह के कबीले का एक व्यक्ति, और एक अज्ञात गणचिन्ह के कबीले का मुझसे अधिक शक्तिशाली सरदार एकत्र हुए हैं, और आपसे मैत्री-संबंध स्थापित करना चाहते हैं हमारा आप से सभी बात में मतैक्य है। हमारे तीन सिपाही आपके तौर-तरीके अपनाने को तैयार हैं।' इस प्रकार भाव लिपि, चित्र तथा सूत्र लिपि की अपेक्षा अधिक समुन्नत तथा अभिव्यक्ति में सफल हैं। चीनी आदि कई लिपियाँ के बहुत से चिन्ह आज तक इसी श्रेणी के हैं।

3.1.3.5 भाव-ध्वनिमूलक लिपि

चित्रलिपि का विकसित रूप-ध्वनि-मूलक लिपि

चित्रलिपि का विकसित रूप ध्वनि-मूलक लिपि है, जिस पर आगे विचार किया जायेगा, पर उसके पूर्व ऐसी लिपि के संबंध में कुछ जान लेना आवश्यक है जो कुछ बातों में तो भावमूलक हैं और कुछ बातों में ध्वनि-मूलक। मेसपोटोमियन, मिस्री तथा हित्ती आदि लिपियों को प्राय: लोग भावमूलक कहते हैं, पर यथार्थत: ये भाव-ध्वनि-मूलक है, अर्थात् कुछ बातों में भावमूलक हैं और कुछ बातों में ध्वनिमूलक। आधुनिक चीनी लिपि भी कुछ अंशों में इसी के अंतर्गत आती है। इन लिपियों के कुछ चिन्ह चित्रात्मक तथा भावमूलक होते हैं और कुछ ध्वनिमूलक और दोनों का ही इसमें यथासमय उपयोग होता है। कुछ विद्वानों के अनुसार सिंधु घाटी की लिपि भी इसी श्रेणी की है।

3.1.3.6 ध्वनिमूलक लिपि

▶ ध्वनि-मूलक लिपि के दो भेद - आक्षरिक, वर्णिक

चित्रलिपि तथा भावमूलक लिपि में चिन्ह किसी वस्तु या भाव को प्रकट करते हैं। उनसे उस वस्तु या भाव के नाम से कोई संबंध नहीं होता। पर इसके विरुद्ध ध्वनिमूलक लिपि में चिन्ह किसी वस्तु या भाव को न प्रकट कर, ध्वनि को प्रकट करते हैं और उनके आधार पर किसी वस्तु या भाव का नाम लिखा जा सकता है। नागरी, अरबी तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं की लिपियाँ ध्वनि-मूलक ही हैं। ध्वनि-मूलक लिपि के दो भेद हैं- आक्षरिक, वर्णिक।

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

इस दुनिया में हर एक इन्सान अपने भाव को प्रकट करने के लिए, अपने विचारों को दूसरों को कहने के लिए, भाषा का उपयोग करते हैं। हम भाषा बोलते हैं और बोलने के लिए हम अपने मुँह से कुछ ध्वनि निकालते हैं, जिसे सामने वाला सुनता है और आपकी बात को समझता है। ध्वनियाँ बोलने के कुछ क्षणों के बाद नहीं रहती हैं, वो अदृश्य हो जाती हैं। बोला और सामने वाले ने सुना, बस। पर यदि मान लो कि हमें अपनी बात को अपने से बहुत दूर बैठे किसी व्यक्ति से कहना हो तो हम कैसे कहेंगे? आज के जमाने में तो कह सकते हैं, पर पहले के जमाने में तो ऐसी कोई सुविधा नहीं थी। जब संसार में भाषा से बातचीत करने की शुरुआत हुई तब से लोगो ने अपने विचारों को लिखना भी शुरू कर दिया। कुछ चिन्हों का उपयोग करके वे अपनी बात को लिखने लगे। जब उन्हें किसी दूर के व्यक्ति को कुछ कहना होता था तो वे अपनी बात को लिखकर उन तक पहुँचाते थे। समय के साथ-साथ लिपि का उपयोग ग्रन्थ लेखन में होने लगा और इसी तरह लिपि का इतिहास चलता रहा। लिपि के माध्यम से हम अपने विचारों को लिख सकते हैं।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. लिपि क्या है? लिपि की उत्पत्ति से सम्बंधित एक टिप्पणी लिखिए।
2. लिपि का विकास क्रम लिखिए।
3. लिपि का प्रकार क्या है ?
4. चित्रलिपि और सूत्रलिपि के बारे में एक टिप्पणी लिखिए।
5. भावाभिव्यक्ति से क्या तात्पर्य है?

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

भारत की प्राचीन लिपियाँ-ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भारत की प्राचीन लिपियों को समझता है
- ब्राह्मी लिपि और इनकी विशेषताओं को जानता है
- खरोष्ठी लिपि के बारे में जानकारी मिलता है
- अन्य कुछ लिपियों को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

भाषा का विकास मनुष्य के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी, किन्तु इस भाषा को चिरस्थायी रूप प्रदान करने की मानव की सोच ने 'लिपि' के विकास हेतु प्रेरित किया। भारतीय धर्म ग्रंथों में 'लिपि' को ब्रह्मा की कृति माना गया है। हमारी इस विशाल धरती में अनेक भूखण्ड हैं जहाँ विभिन्न देश उपस्थित हैं। उन्हीं क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की लेखन हेतु लिपियों का विकास हुआ। लिपि का अर्थ है लेखन प्रणाली या शब्दावली। भारत की दो प्राचीन लिपियाँ है- ब्राह्मी लिपि और खरोष्ठी लिपि। भारत में अधिकांश प्राचीन और आधुनिक लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ही विकसित हुई हैं, जैसे देवनागरी, तमिल, तेलुगु, कन्नड, उड़िया, असमिया, बंगाली आदि। अतः कहा जा सकता है कि ब्राह्मी लिपियों की जननी है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

सिंधु लिपि, ब्राह्मी लिपि, खरोष्ठी लिपि, देवनागरी लिपि

Discussion / चर्चा

भारत की सारी वर्तमान लिपियाँ ब्राह्मी से ही विकसित हुई हैं। इतना ही नहीं तिब्बती, सिंहली तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों की बहुत-सी लिपियाँ ब्राह्मी से ही जन्मी हैं। लिपि का शाब्दिक अर्थ होता है 'लिखित' या 'चित्रित करना'। ध्वनियों को लिखने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है वही लिपि कहलाती है। लिपि मानव के महान आविष्कारों में से एक है। मानव के विकास में अर्थात् मानव-सभ्यता के विकास में, वाणी के बाद लेखन का ही सबसे अधिक महत्व है। मानव के बोलने की कला, एक दूसरे को समझने की कला

तथा लिखने की कला ही मानवों को जानवरों से श्रेष्ठ बना देते हैं।

3.2.1 भारत की प्राचीन लिपियाँ

भारतीय लिपि के इतिहास की ओर सर्वप्रथम ध्यान विलियम जोन्स के माध्यम से हुआ। भारत में लिखने की कला का ज्ञान लोगों को अत्यंत प्राचीन काल से है। इसके प्राचीनतम नमूने सिंधु घाटी में मिले हैं।

1. सिंधु लिपि

सिन्धु घाटी की सभ्यता से संबंधित छोटे-छोटे संकेतों के समूह को सिन्धु लिपि कहते हैं। इसे सिन्धु-सरस्वती लिपि और हड़प्पा लिपि भी कहते हैं। कुछ इतिहासकारों का कहना है कि यह लिपि ब्राह्मी लिपि का पूर्ववर्ती है। यह लिपि बौस्ट्रोफेडन शैली का एक उदाहरण है क्योंकि यह लिपि दायें से बायें ओर और बायें से दायें की ओर लिखी जाती थी।

2. ब्राह्मी लिपि

ब्राह्मी एक प्राचीन लिपि है जिससे कई एशियाई लिपियों का विकास हुआ है। देवनागरी सहित अन्य दक्षिण एशियाई, दक्षिण-पूर्व एशियाई, तिब्बती तथा कुछ लोगों के अनुसार कोरियाई लिपि का विकास भी इसी से हुआ था। इस लिपि को पहली बार 1937 में जेम्स प्रिंस ने पढ़ा था। प्राचीन ब्राह्मी लिपि के उत्कृष्ट उदाहरण सम्राट अशोक (असोक) द्वारा ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में बनवाये गये शिलालेखों के रूप में अनेक स्थानों पर यह मिलते हैं।

3. खरोष्ठी लिपि

सिंधु लिपि के बाद यह भारत की प्राचीन लिपियों में से एक है। यह दाएँ से बाएँ की तरफ लिखी जाती थी। शाहबाजगढ़ी और मनसेहरा के सम्राट अशोक के अभिलेख खरोष्ठी लिपि में है। इसका इस्तेमाल उत्तर-पश्चिमी भारत की गांधार संस्कृति में किया जाता था और इसलिए इसको गांधारी लिपि भी बोला जाता है। इस लिपि के उदाहरण प्रस्तरशिल्पों, धातुनिर्मित पत्रों, भांडों, सिक्कों, मूर्तियों तथा भूर्जपत्र आदि पर उपलब्ध हुए हैं। खरोष्ठी के प्राचीनतम लेख तक्षशिला और चार (पुष्कलावती) के आसपास से मिले हैं किंतु इसका मुख्य क्षेत्र उत्तरी पश्चिमी भारत एवं पूर्वी अफगानिस्तान था।

4. गुप्त लिपि

इस लिपि को ब्राह्मी लिपि भी बोला जाता है। यह गुप्त काल में संस्कृत लिखने के लिए प्रयोग की जाती थी। देवनागरी, गुरुमुखी, तिब्बतन और बंगाली-असमिया लिपि का उद्भव इसी लिपि से हुआ है।

5. शारदा लिपि

यह लिपि पश्चिमी ब्राह्मी लिपि से नवीं शताब्दी में उत्पन्न हुई थी तथा इसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी-पश्चिमी भाग में सीमित था। ओझाजी का कहना है कि इस लिपि का आरम्भकाल दसवीं शताब्दी में हुआ था। उनका मत है कि नागरी लिपि की तरह शारदा लिपि भी कुटिल लिपि से निकली है। उनके मतानुसार, शारदा लिपि का सबसे पहला लेख सराहा (चंबा, हिमाचल प्रदेश) से प्राप्त प्रशस्ति है और उसका समय दसवीं शताब्दी है। यह कश्मीरी और गुरुमुखी लिपि में विकसित हुआ।

6. नागरी लिपि

इसी लिपि से ही देवनागरी, नंदिनागरी आदि लिपियों का विकास हुआ है। पहले इसे प्राकृत

और संस्कृत भाषा को लिखने में उपयोग किया जाता था। इसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। अभी कुछ हाल के अनुसन्धानों से पता चला है कि इस लिपि का विकास प्राचीन भारत में पहली से चौथी शताब्दी में गुजरात में हुआ था।

7. देवनागरी लिपि

इस लिपि की जड़ें प्राचीन ब्राह्मी परिवार में हैं। संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, सिन्धी, कश्मीरी, डोगरी, खस, नेपाल भाषा (तथा अन्य नेपाली भाषाएँ), तामाङ भाषा, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं। यह विश्व की सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली लिपियों में से एक है।

8. कलिंग लिपि

7 वीं से 12 वीं शताब्दी के दौरान कलिंग प्रदेश में जिस लिपि का प्रयोग किया गया था उसे कलिंग लिपी बोली जाती है। कलिंग ओडिशा का प्राचीन नाम है और इस लिपि का इस्तेमाल उडिया के प्राचीन रूप को लिखने के लिए किया जाता था। इस लिपि में भी तीन शैलियाँ देखने को मिलती हैं। शुरुवाती दौर के लेखों में मध्यदेशीय तथा दक्षिणी प्रभाव देखने को मिलता है। अक्षरों के सिरों पर ठोस चौखटे दिखाई देते हैं। आरम्भिक अक्षर समकोणीय हैं। लेकिन बाद में कन्नड़-तेलुगु लिपि के प्रभाव के अंतर्गत अक्षर गोलाकार होते नज़र आते हैं।

9. ग्रंथ लिपि

ग्रंथ लिपि दक्षिण भारत की प्राचीन लिपियों में एक है। मलयालम, तुलु व सिंहल लिपि पर इसका प्रभाव रहा है। इस लिपि का एक और संस्करण 'पल्लव ग्रंथ', पल्लव लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता था। इसलिए इसे 'पल्लव लिपि' भी कहा जाता था। कई दक्षिण भारतीय लिपियाँ, जैसे बर्मा की मोन लिपि, इंडोनेशिया की जावाई लिपि और ख्मेर लिपि इसी संस्करण से उपजी हैं।

10. वट्टेलुत्तु लिपि

इस लिपि पर ब्राह्मी लिपि का बहुत प्रभाव है और कुछ इतिहासकारों का कहना है की इसका विकास ब्राह्मी लिपि से ही हुआ है। तमिल और मलयालम भाषा को लिखने में उपयोग किया जाता था।

11. कदंब लिपि

इसे 'पूर्व-प्राचीन कन्नड लिपि' भी बोली जाती है। इसी लिपि से कन्नड में लेखन का आरम्भ हुआ। यह कलिंग लिपि से बहुत कुछ मिलती-जुलती है। इसका इस्तेमाल संस्कृत, कोंकणी, कन्नड़ और मराठी लिखने के लिए किया जाता था।

12. तमिल लिपि

यह लिपि भारत और श्रीलंका में तमिल भाषा को लिखने में प्रयोग किया जाता था। यह ग्रंथ लिपि और ब्राह्मी के दक्षिणी रूप से विकसित हुआ। यह शब्दावली भाषा है न वर्णमाला वाली। इसे बाएँ से दाएँ लिखा जाता है। सौराष्ट्र, बडगा, इरुला और पनिया आदि जैसी भाषाएँ तमिल में लिखी जाती हैं।

▶ भारत के कुछ प्राचीन लिपियाँ

3.2.2 ब्राह्मी लिपि

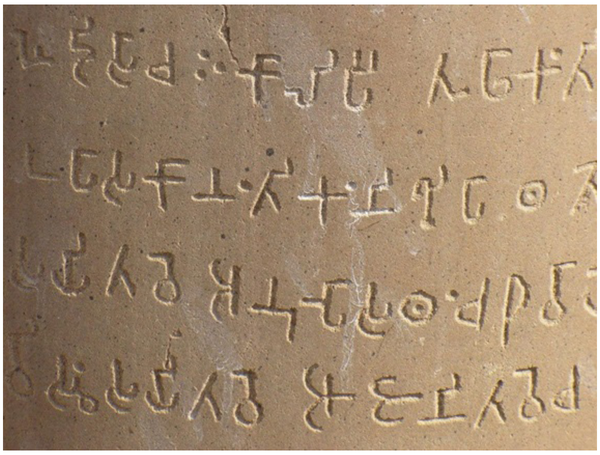

ब्राह्मी लिपि एक प्राचीन लिपि है जिससे कई एशियाई लिपियों का विकास हुआ है। प्राचीन ब्राह्मी लिपि के उत्कृष्ट उदाहरण सम्राट अशोक द्वारा ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में बनवाये गये शिलालेखों के रूप में अनेक स्थानों पर मिलते हैं। नये अनुसंधानों के आधार 6 वीं शताब्दी ईसा पूर्व के लेख भी मिले है। ब्राह्मी भी खरोष्ठी की तरह ही पूरे एशिया में फैली हुई थी। अशोक ने अपने लेखों की लिपि को 'धम्मलिपि' का नाम दिया है; उसके लेखों में कहीं भी इस लिपि के लिए 'ब्राह्मी' नाम नहीं मिलता। लेकिन बौद्धों, जैनों तथा ब्राह्मण-धर्म के ग्रंथों के अनेक उल्लेखों से ज्ञात होता है कि इस लिपि का नाम 'ब्राह्मी' लिपि ही रहा होगा। हमारे प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में यह बात आम तौर से पाई जाती है कि जिस किसी भी चीज़ की उत्पत्ति कुछ अधिक प्राचीन या अज्ञेय हो उसके निर्माता के रूप में बड़ी आसानी से 'ब्रह्मा' का नाम ले लिया जाता है। संसार की अन्य पुरालिपियों की उत्पत्ति के बारे में भी यही देखने को मिलता है कि प्रायः उनके जनक कोई न कोई दैवी पुरुष ही माने गए हें। हमारे यहाँ भी 'ब्रह्मा' को लिपि का जन्मदाता माना जाता रहा है, और इसीलिए हमारे देश की इस प्राचीन लिपि का नाम ब्राह्मी पड़ा है। बौद्ध ग्रंथ 'ललितविस्तर' में 64 लिपियों के नाम दिए गए हैं। इनमें पहला नाम 'ब्राह्मी' है और दूसरा 'खरोष्ठी'। इन 64 लिपि-नामों में से अधिकांश नाम कल्पित जान पड़ते हैं। जैनों के 'समवायांगसूत्र' में 16 लिपियों के नाम दिए गए हैं, जिनमें से पहला नाम 'बंभी' (ब्राह्मी) का है।

> ▶ 'ब्रह्मा' को लिपि का जन्मदाता माना जाता इसलिए इस प्राचीन लिपि का नाम ब्राह्मी पड़ा है

चीनी विश्वकोश 'फा-वान-शु-लिन' (668 ई.) में इसके निर्माता कोई ब्रह्म या ब्रह्मा (Fan) नाम के आचार्य लिखे गये हैं अतएव उनके नाम के आधार पर इसका नाम ब्राह्मी पड़ना संभव है। डॉ. राजबली पांडेय के अनुसार भारतीय आर्यों ने ब्रह्मा (=वेद) की रक्षा के लिए इसको बनाया। इस आधार पर भी इसके ब्राह्मी नाम पड़ने की संभावना हो सकती है। कुछ लोग साक्षर समाज-ब्राह्मणों-के प्रयोग में विशेष रूप से होने के कारण भी इसके ब्राह्मी नाम से पुकारे जाने का अनुमान लगाते हैं। ब्राह्मी लिपि के विषय में ऐतिहासिक शिलालेख यह सिद्ध करते हैं कि यह लिपि प्राचीन होने के साथ-साथ आधुनिक देवनागरी लिपि की जन्मदाता है- किंतु पाश्चात्य विद्वान इस लिपि के विषय में अपवाद स्वरूप कुछ तथ्य प्रस्तुत करते हैं। ब्राह्मी के विषय में विदेशी मान्यताएँ- इस लिपि को भारतीय लिपि ना मानने वाले विद्वानों में आलोचक बूलर का नाम सर्वप्रमुख है। वे इसका संबंध दो विदेशी लिपियाँ से जोड़ते

हैं- ग्रीक लिपि और सामी लिपि। वूलर महोदय के साथ-साथ अन्य विद्वान भी इनके मत को निर्णायक मत मानते हैं। यह धारणा समर्थन और खंडन की क्रिया में अपने तर्क और मत प्रस्तुत करते हैं। ब्राह्मी लिपि, सामी लिपि से संबंधित है क्योंकि ब्राह्मी की उत्पत्ति सामी लिपि से इसलिए है क्योंकि वर्ण और चिह्न दोनों समान है।

- ब्राह्मी की उत्पत्ति से संबंधित विद्वानों का मत

सामी लिपि के समान ब्राह्मी लिपि भी दाएँ से बाएँ लिखी जाती है। अंतिम धारणा यह है कि ग्रीक लिपि की कुछ विशेषताएँ ब्राह्मी लिपि में पाई जाती हैं। प्रायः दाएँ से बाएँ लिखा होना एक संयोग मात्र ही है। पाश्चात्य विद्वानों के विरोध में भारतीय मत इसे वैदिक उत्पत्ति मानता है। पहला तर्क ब्राह्मी लिपि मूलतः द्रविड़ों की लिपि है। आर्यों ने द्रविड़ सभ्यता और संस्कृति की अनेक वस्तुओं के साथ-साथ इस लिपि को ग्रहण किया। दूसरा तर्क ब्राह्मी लिपि के सबसे प्राचीनतम प्रमाण उत्तर भारत से प्राप्त हुए। सबसे प्रमाणिक तर्क, तथ्य और अभिमत की जब वैदिक संस्कृति की स्थापना, वैदिक सभ्यता की स्थापना के प्रमाण हम विश्वासपूर्वक मानते हैं तो ब्राह्मी लिपि को वैदिक उत्पत्ति से क्यों नहीं ग्रहण कर सकते। अंतिम अभिमत ब्राह्मी लिपि चाहे विदेशी अभिमत के अनुसार विदेशी लिपि से समानता रखती है किंतु संयोग को आधार नहीं माना जा सकता।

- ब्राह्मी लिपि की विशेषताएँ

3.2.3 खरोष्ठी लिपि

खरोष्ठी लिपि एक प्राचीन लिपि है जिसका उपयोग प्राचीन गांधार में गांधारी प्राकृत और संस्कृत लिखने के लिए किया जाता था। यह ब्राह्मी की सहयोगी लिपि है और इसे जेम्स प्रिंसेप ने पढ़ा था। आरंभिक काल से ही खरोष्ठी भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख लिपियों में से एक रही है। लोकप्रियता में यह ब्राह्मी लिपि के बाद दूसरे स्थान पर आती है। खरोष्ठी लिपि के प्राचीनतम लेख शहबाजगढ़ी और मनसेरा में मिले हैं। आगे चलकर बहुत-से विदेशी राजाओं के सिक्कों तथा शिलालेखों आदि में यह लिपि प्रयुक्त हुई है। इसकी प्राप्त सामग्री मोटे रूप से चौथी सदी ई.पू. से तीसवीं सदी ई. तक मिलती है। इसके इंडोबैक्ट्रियन, बैक्ट्रियन, काबुलियन, वैक्ट्रोपालि तथा आर्यन आदि और भी कई नाम मिलते हैं, पर अधिक प्रचलित नाम 'खरोष्ठी' ही है, जो चीनी साहित्य में 7 वीं सदी तक मिलता है।

- खरोष्ठी लिपि का उपयोग

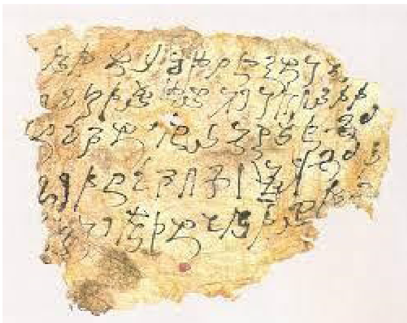

3.2.4 खरोष्ठी नाम पड़ने के संबंधित बातें

चीनी विश्कोश 'फा-वान-शु-लिन' के अनुसार किसी 'खरोष्ठ' नामक व्यक्ति ने इसे बनाया था। यह 'खरोष्ठ' नामक सीमाप्रान्त के अर्धसभ्य लोगों में प्रचलित होने के कारण इस नाम की अधिकारिणी बनी। इस लिपि का केन्द्र भी मध्य एशिया का एक प्राप्त 'काशगर' था और 'खरोष्ठ' काशगर का ही संस्कृत रूप है। सिलवां देवी के अनुसार खरोष्ठ काशगर के चीनी नाम 'किया-लु-शु-ता-ले' का विकसित रूप है और काशगर ही इस लिपि का केन्द्र

रहा है। गदहे की खाल पर लिखी जाने से इसे ईरानी में 'खरपोश्त' कहते थे और उसी का अपभ्रंश रूप 'खरोष्ठ' है। डॉ. प्रजिलुस्की के अनुसार यह गदहे की खाल पर लिखी जाने से 'खरपृष्ठी' और फिर खरोष्ठी कहलाई। कोई आर्मेइक शब्द 'खरोष्ठ' था, और उसी की भ्रामक व्युत्पत्ति के आधार पर बना संस्कृत रूप 'खरोष्ठ' है। डॉ. राजबली पांडेय के अनुसार इस लिपि के अधिक अक्षर गदहे के बोल की तरह बेढंगे हैं, अतएव यह नाम पड़ा है। डॉ. चटर्जी के अनुसार हिब्रू में खरोशेथ का अर्थ 'लिखावट' है। उसी से लिया जाने के कारण इसका नाम 'खरोशेथ' पड़ा, जिसका संस्कृत रूप खरोष्ठ और उससे बना शब्द खरोष्ठी है।

▶ खरोष्ठी नाम पड़ने संबंधित कुछ बातें

3.2.5 खरोष्ठी लिपि की विशेषताएँ

यह एक मध्य इंडो-आर्यन बोली है। यह दाएँ से बाएँ ओर लिखा जाता है। इसमें रोमन अंकों के समान संख्याएँ शामिल हैं। इसमें अधिकतर भारतीय, यूनानी और ईरानी शब्दों का प्रयोग होता है। इसमें स्वर का केवल एक ही मूल रूप होता है। इस लिपि में मध्य स्वरों को भी व्यक्त किया जाता है। इसके मूल अक्षर अरबी पर आधारित थे और शेष विशेषक चिह्नों के जुड़ने से विकसित हुए हैं। यह घसीट है। यह एक शीर्षोन्मुख लिपि है क्योंकि प्रत्येक अक्षर के ऊपरी भाग पर एक अक्षर होता है।

▶ इसमें अधिकतर भारतीय, यूनानी और ईरानी शब्दों का प्रयोग होता है

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

ब्राह्मी भारत की अधिकांश लिपियों की जननी है तथा इसका प्रयोग सम्राट अशोक के लेखों में हुआ है। 5वीं सदी ईसा पूर्व से 350 ईसा पूर्व तक इसका एक ही रूप मिलता है, लेकिन बाद में इसके दो विभाजन मिलते हैं- उत्तरी धारा व दक्षिणी धारा। ब्राह्मी की उत्तरी धारा में गुप्त लिपि, कुटिल लिपि, शारदा और देवनागरी को रखा गया है। दक्षिणी धारा में तेलुगु, कन्नड़, तमिल, कलिंग, ग्रंथ, मध्य देशी और पश्चिमी लिपि शामिल हैं। ब्राह्मी लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी। ब्राह्मी प्राचीन काल में भारत की सर्वश्रेष्ठ लिपि रही है। इसके प्राचीनतम नमूने बस्ती जिले में प्राप्त पिपरावा के स्तूप में तथा अजमेर जिले के बडली (या बर्ली) गाँव के शिलालेख में मिले हैं। इस लिपि का प्रयोग इतने प्राचीनकाल से होता आ रहा है कि लोगों को इसके निर्माता के बारे में कुछ ज्ञात नहीं है और धार्मिक भावना से विश्व की अन्य चीजों की भांति 'ब्रह्मा' को इसका भी निर्माता मानते रहे हैं, और इसी आधार पर इसे ब्राह्मी कहा गया है। खरोष्ठी लिपि का उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप में शासकों द्वारा स्थानीय आबादी के साथ संबंध स्थापित करने, धार्मिक अवशेषों आदि पर उपयोग के लिए किया जाता था। यह शुरुआत में गांधार क्षेत्र तक ही सीमित थी। लेकिन लोगों के प्रसार और आवाजाही के साथ, यह मध्य एशिया, उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों और यहाँ तक कि दक्षिण पूर्व एशिया तक पहुँच गया। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में 'एरियन पाली' को 'खरोष्ठी' लिपियों के रूप में पहचाना गया।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भारत की प्राचीन लिपियों के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।
2. ब्राह्मी लिपि से क्या तात्पर्य है?
3. खरोष्ठी लिपि क्या है? इस नाम के हेतु बातें क्या है?
4. ब्राह्मी लिपि और खरोष्ठी लिपि का अंतर क्या है?
5. खरोष्ठी लिपि का विशेषताएँ क्या है?

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्‌भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3 देवनागरी लिपि- उद्भव और विकास

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- देवनागरी लिपि के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- देवनागरी लिपि के उद्भव के बारे में समझता है
- देवनागरी लिपि के विकास से परिचित होता है
- देवनागरी लिपि की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

किसी भी भाषा को लिखने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उसे लिपि कहते हैं। लिपि किसी भी भाषा के ध्वनि चिन्हों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करती है। लिपि की मदद से किसी भी चीजों का संग्रह किया जाता है। जैसे हिन्दी को लिखने के लिए देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है, वही अंग्रेजी को लिखने के लिए रोमन लिपि का प्रयोग किया जाता है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अक्षरात्मक लिपि, उत्तरी ब्राह्मी, दक्षिणी ब्राह्मी, देवनागरी, शिलालेख।

Discussion / चर्चा

देवनागरी लिपि भारत की सबसे प्रचलित लिपियों में से एक है। इसमें कई भाषाएँ लिखी जाती हैं जैसे हिन्दी, संस्कृत, मराठी, पाली, राजस्थानी, नेपाली, गुजराती, भोजपुरी आदि।

देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। इस लिपि का प्रयोग सर्वप्रथम गुजरात नरेश जयभट्ट के शिलालेख में मिलता है।

3.3.1 देवनागरी लिपि

अधिकांशतः लिपियों की तरह देवनागरी लिपि भी बाएँ से दाएँ और लिखी जाती है। इसके प्रत्येक शब्द के ऊपर एक क्षैतिज रेखा होती है जिसे शिरोरेखा भी कहा जाता है। यह अक्षरात्मक लिपि (syllabic script) है। देवनागरी लिपि को नागरी एवं हिन्दी लिपि भी कहा जाता है। नामकरण के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। अधिकतर विद्वानों का मानना है कि

▶ देवनागरी लिपि का परिचय

देवनागरी लिपि सर्वप्रथम गुजरात में प्रचलित हुई थी। इसलिए वहाँ के नागर ब्रह्मणों के नाम पर इसे नागरी कहा गया और इस लिपि ने देव भाषा संस्कृत को लिपिबद्ध किया है। इसलिए नागरी में देव शब्द जुड़ गया और देवनागरी बन गया।

▶ देवनागरी लिपि के उच्चारण और प्रयोग में समानता है

देवनागरी लिपि के ध्वनिक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक है। इस लिपि के उच्चारण और प्रयोग में समानता है। इसमें प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण हैं। इस लिपि के वर्णों की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य है। इसमें निश्चित मात्राएँ हैं। यह लिखाई और छपाई दोनों में समान है। इस लिपि के एक वर्ण में दूसरे वर्ण का भ्रम नहीं है। डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना के अनुसार, देवनागरी पर्याप्त काल से भारतीय आर्य भाषाओं की लिपि रही है और आज भी हिन्दी, मराठी, नेपाली तथा समस्त हिन्दी बोलियों की यही लिपि है। भारत के संविधान ने जब से हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया है, तभी से देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि का महत्वपूर्ण पद प्रदान किया गया है। यह लिपि संस्कृत भाषा की भी एकमात्र लिपि है।

3.3.2 देवनागरी लिपि का उद्भव

▶ देवनागरी लिपि का उद्भव कुटिल लिपि से हुआ था

देवनागरी लिपि का उद्भव 8 वीं- 9 वीं शताब्दी के आसपास कुटिल लिपि से हुआ था। उत्तर भारत में इसका प्रसार 9 वीं शताब्दी के अंत में मिलता है। दक्षिण में राष्ट्रकूट राजा दंती दुर्ग के शामगढ़ से प्राप्त दान पत्र की लिपि नागरिक हीं है। बड़ौदा के राजा ध्रुव राज ने नौवीं शताब्दी में इसी लिपि का प्रयोग किया। उत्तर भारत में प्राचीन नागरी का सबसे प्राचीन रूप कन्नौज के राजा महेंद्र पाल के दान पत्र में मिलता है। इसलिए 12वीं शताब्दी तक प्राचीन नागरी वर्तमान नागरी बन पाई। गौरीशंकर हीराचंद ओझा का कथन है 10 वीं शताब्दी की उत्तरी भारत वर्ष की नागरी लिपि में और कुटिल लिपि में समानता मिलती है। और उस समय भारत में अनेक राजाओं ने अपने राज्यकारों के संपादन के लिए नागरी को ही अपना आधार बनाया। आठवीं नौवीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक उत्तर दक्षिण भारत में अनेक राजाओं ने अपने राज्य में कार्यों के संपादन के लिए नागरी लिपि को हीं आधार बनाया। नागरी में कार्य संपादन करने वालों में मारवाड़ के परिहार राजा, मेवाड़ के मुहीवंशी राठौर और गुजरात के सोलंकी राजाओं का विशेष महत्व है। ये अपने आदेश नागरी में ही निकालते थे। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार और उत्तर प्रदेश में खुदाई अभियान में अनेक ताम्रपत्र, हस्तलेख, पांडुलिपियाँ उपलब्ध हुई हैं, जिनमें नागरी लिपि का ही प्रयोग किया गया है।

▶ उत्पत्ति सम्बंधित विद्वानों का मत

देवनागरी नाम की उत्पत्ति के संबंध में प्रायः प्रश्न उठाया जाता है, यद्यपि यह विवादास्पद विषय तथापि विचार कर लेना अपेक्षित होगा। कतिपय भाषाविदों का कहना है कि गुजरात के 'नागर ब्रह्मणों द्वारा प्रचलित होने के कारण इसका नाम नागरी रखा गया है।' कुछ विद्वानों का मत है कि इस लिपि का प्रयोग प्रायः नगरों में किया जाता है इसलिए इसका नाम नागरी पड़ा। कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति बौद्धग्रंथ 'ललित विस्तार' की 'नागलिपि' से मानते हैं। श्रीराम शास्त्री की धारणा है कि माँत्रिक यंत्रों में बनने वाले चिह्न देवनगर से मिलते-जुलते अक्षरों के कारण यह लिपि 'देवनागरी' कहलायी। दक्षिण भारत में इसका नाम नंदिनागरी है। नंदिनागरी का संबंध 'नंदिनगर' नामक राजधानी से बताया जाता है। डॉ. उदयनारायण तिवारी का विचार हैं कि इस लिपि का प्रयोग देवभाषा संस्कृत लिखने में हुआ है, इसलिए इसे देवनागरी के नाम से संबोधित किया गया। इनमें डॉ. तिवारी का मत अधिक पुष्ट, तर्कसंगत एवं समीचीन है। यह तो सच है कि नागरी लिपि की मूल उत्पत्ति को पूर्ण रूप से बताना अति कठिन है। अभी तक लिपि विशेषों एवं भाषाविदों द्वारा प्रामाणिक व्युत्पत्ति नहीं प्रस्तुत की जा सकती है।

3.3.3 देवनागरी लिपि का विकास

देवनागरी का विकास उत्तर भारतीय ऐतिहासिक गुप्त लिपि से हुआ, हालांकि इसकी व्युत्पत्ति ब्राह्मी वर्णाक्षरों से हुई, जिससे सभी आधुनिक भारतीय लिपियों का जन्म हुआ है। सातवीं शताब्दी से इसका उपयोग हो रहा है, लेकिन इसके परिपक्व स्वरूप का विकास 11वीं शताब्दी में हुआ। उच्चरित ध्वनि संकेतों की सहायता से भाव या विचार की अभिव्यक्ति 'भाषा' कहलाती है। जबकि लिखित वर्ण संकेतों की सहायता से भाव या विचार की अभिव्यक्ति लिपि। भाषा श्रव्य होती है, जबकि लिपि दृश्य। भारत की सभी लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ही निकली हैं। ब्राह्मी लिपि का प्रयोग वैदिक आर्यो ने शुरू किया। ब्राह्मी लिपि का प्राचीनतम नमूना 5 वीं सदी का है जो कि बौद्धकालीन है। गुप्तकाल के प्रारम्भ में ब्राह्मी के दो भेद हो गए, उत्तरी ब्राह्मी व दक्षिणी ब्राह्मी। दक्षिणी ब्राह्मी से तमिल लिपि / कलिंग लिपि, तेलुगु एवं कन्नड लिपि, ग्रंथ लिपि, मलयालम लिपि आदि का विकास हुआ।

▶ देवनागरी का विकास उत्तर भारतीय ऐतिहासिक गुप्त लिपि से हुआ

3.3.4 देवनागरी लिपि की विशेषताएँ

देवनागरी लिपि में स्वरों एवं व्यंजनों का वर्गीकरण वैज्ञानिक पद्धति पर किया गया है। साथ ही स्वर और व्यंजन वैज्ञानिक ढ़ंग से क्रमबद्ध किए गए हैं। इस लिपि में मूलतः 14 स्वर, 35 व्यंजन और तीन संयुक्ताक्षर अर्थात् कुल 52 वर्ण है। व्यंजनों का वर्गीकरण उच्चारण स्थान एवं प्रयत्न के आधार पर किया गया है। इस विभाजन के कारण एक ओर तो वर्णो को शुद्ध रूप में उच्चारित किया जा सकता है तथा दूसरी ओर सुव्यवस्थित क्रम होने से उन्हें स्मरण रखने में भी सुविधा रहती है। रोमन लिपि में स्वर और व्यंजन परस्पर मिले हुए हैं, किन्तु देवनागरी में पहले स्वर ध्वनियाँ हैं, फिर व्यंजन ध्वनियों को क्रमबद्ध किया गया है। देवनागरी लिपि की यह अन्यतम विशेषता है कि इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए केवल एक चिह्न है, जबकि रोमन लिपि और फारसी लिपि में एक ध्वनि के लिए कई-कई विकल्प है, अतः वहाँ लिखने में भिन्नता आ सकती है, पर देवनागरी में प्रत्येक शब्द की केवल एक ही वर्तनी हो सकती है।

▶ देवनागरी लिपि में स्वर एवं व्यंजनों का वर्गीकरण वैज्ञानिक पद्धति पर किया गया है

वस्तुतः 18 वीं सदी की देवनागरी लिपि वर्तमान देवनागरी की तरह ही है। उसमें मात्राओं का थोड़ा हेर-फेर होता है। 19वीं शताब्दी में छापाखाना की सुविधा के कारण देवनागरी वर्णों में स्थिरता एवं सुनिश्चितता आ गयी। आज 20 वीं शताब्दी में देवनागरी को सम्पूर्ण भारत की वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण लिपि के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। भारतीय भाषाओं की वास्तविक एकता उसकी ब्राह्मी लिपि में ही निहित हैं। यह तथ्य हिन्दी, कश्मीरी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगाली, बिहारी, मैथिली एवं असमिया आदि सभी के साथ परिलक्षित होता है। दक्षिण भारत की चारों भाषाएँ जिन लिपियों में व्यवहृत होती हैं, वे ब्राह्मी से ही विकसित हुई हैं और उनमें संस्कृत शब्दावली का प्रयोग विपुल मात्रा में हुआ है। ब्राह्मी लिपि का राष्ट्रीय स्वरूप देवनागरी के रूप में दिखाई पड़ता है। यह मध्य प्रदेश में प्रचलित समस्त भारतीय भाषाओं एवं बोलियों का मुख्य वाहन है। वस्तुतः देवनागरी लिपि भारत की सर्वप्रथम लिपि हैं और इसके विकास का इतिहास ब्राह्मी एवं संस्कृत से सम्बद्ध रहा है।

▶ देवनागरी लिपि को सम्पूर्ण भारत की वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण लिपि के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

लिपि किसी भी भाषा के ध्वनि प्रतीकों की लिखित व्यवस्था होती है, जिसे हम भाषा के दृश्य प्रतीक के रूप में जानते हैं और जो भाषा के वाचन और लेखन कौशल से सम्बद्ध होती है। भाषा को हम दो रूपों में जानते हैं: पहला मौखिक दूसरा लिखित। भाषा का लिखित रूप ही लिपि है जो ध्वनियों को अंकित करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है। दूसरी परिभाषा के अनुसार भाषा के लिखित संकेतों और दृश्य प्रतीकों को लिपि कहते हैं। भारत के संविधान में देवनागरी लिपि का स्थान राजभाषा हिन्दी की लिपि के रूप में किया गया है। देवनागरी लिपि का उद्भव ब्राह्मी लिपि से हुआ है। कहते हैं कि ब्राह्मी लिपि से उत्तरी शैली का विकास हुआ, उत्तरी शैली से प्राचीन नागरी का विकास हुआ, प्राचीन नागरी से पश्चिमी नागरी का विकास हुआ एवं तदनन्तर पश्चिमी नागरी से देवनागरी का विकास हुआ।

देवनागरी लिपि चार भाषाओं में लिखी जाती है -संस्कृत, हिन्दी, मराठी और नेपाली। इस लिपि का स्वरूप भारत में नवीं शताब्दी से पहले ही निर्धारित हो गया था और इसके चिह्न समय के साथ-साथ धीरे धीरे परिवर्तित होते रहे। दसवीं शताब्दी में आकर देवनागरी लिपि के चिह्नों में काफी स्थिरता आने लगी। ग्यारहवी शताब्दी की नागरी लिपि आज की नागरी लिपि से काफी मिलती-जुलती हैं। बारहवीं शताब्दी तक आते-आते देवनागरी लिपि के चिह्नों का स्वरूप काफी हद तक स्थिर हो गया और आज के अधिकतम लिपिवर्ण बारहवीं शताब्दी के अनुसार पाए जाते है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. देवनागरी लिपि का परिचय दीजिए।
2. देवनागरी लिपि की उद्‌भव कैसे हुई?
3. देवनागरी लिपि की विशेषताओं के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।
4. देवनागरी लिपि की उद्‌भव और विकास के बारे में अपना मत प्रकट कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्‌भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, देवनागरी लिपि का मानकीकरण

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता को समझता है
- देवनागरी लिपि की मानकीकरण के बारे में जानकारी प्राप्त करता है
- देवनागरी लिपि की गुण और दोष को समझता है
- देवनागरी लिपि की मानक स्वरूप से परिचित होता है

Background / पृष्ठभूमि

हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है। देवनागरी लिपि का जन्म ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ब्राह्मी संसार की सबसे प्राचीन ध्वनि लिपि है। गौरीशंकर हरिचन्द ओझा के अनुसार ब्राह्मी लिपि का आविष्कार आर्यों ने ही किया था। वैदिक संस्कृत और संस्कृत इसी लिपि में लिखी जाती थीं। बुद्ध के समय में इस लिपि का विस्तृत प्रयोग होता था। अशोक के अधिकतर शिलालेखों में ब्राह्मी लिपि का ही प्रयोग किया गया है। कुछ शिलालेखों में पश्चिम भारत में प्रचलित खरोष्ठी लिपि का प्रयोग भी किया गया है। लेकिन अशोक के समय प्रचलित लिपि ब्राह्मी ही थी। अशोक के बाद ब्राह्मी लिपि में परिवर्तन होना आरम्भ हुआ। शिक्षित लोग लिपि को सुन्दर बनाने का प्रयत्न करने लगे। कलम उठाए बिना अक्षर लिखने की प्रवृत्ति के कारण भी लिपि में परिवर्तन होना स्वाभाविक था। इसके अतिरिक्त शीघ्रता से लिखने के कारण भी लिपि में अनेक परिवर्तन हुए। गुप्त काल में ब्राह्मी लिपि का परिवर्तित रूप गुप्त लिपि कहलाया।

Keywords / मुख्य बिन्दु

वैज्ञानिकता, मानक स्वरूप, मानकीकरण, प्रत्याहार

Discussion / चर्चा

हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी के सम्बन्ध में राहुल संकृत्यायन का कथन है- देवनागरी दुनिया की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देवनागरी लिपि की वर्णमाला विश्व की सभी वर्णमाला लिपियों की अपेक्षा निश्चय ही पूर्णतर है। देवनागरी की वर्णमाला एक अत्यंत तर्कपूर्ण ध्वन्यात्मक क्रम में व्यवस्थित है।

3.4.1 देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता

भारतवर्ष के अधिकांश ग्रन्थ, पत्र-पत्रिकाएँ, समाचार आदि देवनागरी लिपि में ही प्रकाशित होते हैं। वही हमारी राष्ट्रीय लिपि के रूप में स्वीकृत है। देवनागरी लिपि की लोकप्रियता के कारण, उसकी वैज्ञानिकता तथा अन्य समस्त लिपियों की अपेक्षा उसकी श्रेष्ठता है। भाषा विज्ञान के विद्वानों के मतानुसार देवनागरी लिपि संसार की सर्वाधिक वैज्ञानिक लिपि है। इसमें संसार की लगभग समस्त भाषाओं की ध्वनियों को उच्चरित करने का सामर्थ्य है। उत्तरी भारत में जो परिवर्तन हुए उनमें वर्णों का आकार थोड़ा कुटिल हो गया था इसलिए इस रूप को 'कुटिल लिपि' की संज्ञा दी गई। इस कुटिल लिपि से शारदा और नागरी दो लिपियाँ निकलीं। नागरी लिपि का प्रयोग ईसा की 10वीं शताब्दी से माना जाता है। इसी नागरी को बारहवीं शताब्दी में देवनागरी लिपि कहा जाने लगा। इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता। आज की देवनागरी लिपि, प्राचीन देवनागरी का सुधरा हुआ रूप है। भारत में प्रयुक्त होने वाली अन्य लिपियाँ भी ब्राह्मी लिपि से ही निकली हैं।

▶ आज की देवनागरी लिपि, प्राचीन देवनागरी का सुधरा हुआ रूप है

देवनागरी लिपि की विशेषताओं को बताने के क्रम में यह अक्सर कहा जाता है कि यह वैज्ञानिक लिपि है। प्रश्न यह है कि किसी लिपि को वैज्ञानिकता प्रदान करने वाले कौन से तत्व होते हैं? वैज्ञानिकता के आधार तत्व बताते हुए भाषाविदों ने माना है कि वह वैज्ञानिक लिपि हो सकती है। जिसमें एक वर्ण एक ही ध्वनि को व्यक्त करें। मात्रा एवं वर्णचिह्नों में भिन्नता हो। लेखन और उच्चारण में एकरूपता हो। सरल एवं स्पष्ट हो। उच्चारण एवं लेखन में व्यवस्थित हो। ध्वन्यात्मक दृष्टि से सन्तुलन स्थापित करती हो।

▶ देवनागरी लिपि सरल एवं स्पष्ट है

3.4.2 देवनागरी लिपि का मानक स्वरूप

मानकीकृत देवनागरी वर्णमाला–

स्वर- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ अनुस्वार- अं और विसर्ग- अः

व्यंजन-

क	ख	ग	घ	ङ	(कंठ्य)
च	छ	ज	झ	ञ	(तालव्य)
ट	ठ	ड	ढ	ण	(मूर्धन्य)
त	थ	द	ध	न	(दन्त्य)
प	फ	ब	भ	म	(ओष्ठ्य)
य	र	ल	व		(अन्तस्थ)
श	ष	स	ह		(ऊष्म)
क्ष,	त्र,	ज्ञ,	श्र		(संयुक्त व्यंजन)
ड़,	ढ़				(द्विगुण व्यंजन)

देवनागरी लिपि में कुल वर्णों की संख्या 52 है। देवनागरी लिपि में व्यंजनों की कुल संख्या- 39 (व्यंजनो में से 4 संयुक्त व्यंजन और द्विगुण व्यंजन हैं।) देवनागरी लिपि में स्वरों की संख्या- 11 अनुस्वार, विसर्ग को 'अयोगवाह' कहा जाता है, इनकी संख्या 2 है। 11 स्वर + 2 अयोगवाह + 39 व्यंजन = 52 वर्ण

▶ देवनागरी लिपि में कुल वर्णों की संख्या 52 है

3.4.3 देवनागरी लिपि का मानकीकरण

केंद्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी के मानकीकरण का कार्य देश के प्रतिष्ठित विद्वानों और भाषाविदों, हिन्दी सेवी संस्थाओं, राज्य सरकारों एवं विभिन्न मंत्रों के उच्च अधिकारियों से विचार विमर्श करके प्रारंभ किया गया। इसके अंतर्गत प्रथमतः 1967 में 'हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' नाम से लघु पुस्तिका प्रकाशित की गई थी। वर्ष 1983 में इस पुस्तिका का संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण 'देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण' प्रकाशित किया गया। इस पुस्तिका की लगातार बढ़ती हुई माँग को देखते हुए वर्ष 1989 में इसका पुनर्मुद्रण कराया गया तथा विभिन्न हिन्दी सेवी संस्थाओं, कार्यालय शिक्षण संस्थानों में इसका निःशुल्क वितरण कराया गया था कि अधिक से अधिक संस्थाओं में हिन्दी के मानक रूप का प्रयोग बढे। राजभाषा हिन्दी के संदर्भ में सभी मंत्रालयों, राज्यों सरकारों, शैक्षिक संस्थाओं, एन.सी.ई.आर.टी. समाचार पत्र पत्रिकाओं आदि ने भाषा में एकरूपता लाने के लिए इस मानकीकरण को आधिकारिक रूप से अपनाया। वर्ष 1967 के मानकीकरण का मुख्य आधार प्रयोक्ता और टंकण यंत्र रहा था। नवीन सूचना प्रौद्योगिकी के युग में हिन्दी भाषा, देवनागरी लिपि तथा वर्तनी के मानकीकरण को पुनः संशोधित और परिवर्धित करने की आवश्यकता महसूस की गई। कप्यूटर में उपलब्ध विभिन्न सॉफ्टवेयर और फॉन्ट के कारण हिन्दी भाषा में कार्य करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता था। इन समस्याओं के समाधान के लिए यूनिकोड तैयार किया गया।

▶ केंद्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी के मानकीकरण का कार्य प्रारंभ किया गया

लिपि के विविध स्तरों पर पाई जाने वाली विषमरूपता को दूर कर उसमें एकरूपता लाना ही मानकीकरण है। लिपि का मानकीकरण करने के लिए निम्न तथ्य महत्त्वपूर्ण हैं।

1. एक ध्वनि को अंकित करने के लिए विविध लिपि चिह्नों में से एक को मान्यता दी जाती है। यथा देवनागरी लिपि में निम्न प्रकार से लिखे जाते है:
   अ, झ, ल, ध, भ, ण। इनमें से प्रथम पंक्ति में लिखे हुए वर्ण ही मान्य हैं। द्वितीय पंक्ति के वर्ण अमान्य हैं।
2. ध्वनियों के उच्चारण में भी एकरूपता लाना आवश्यक है। क्षेत्रीय उच्चारण के कारण लोग अलग-अलग ढंग से ही ध्वनि का उच्चारण करते हैं। जैसे पैसा, पइसा, पाइसा। इनमें से पहला 'उच्चारण ही' मानक उच्चारण है, शेष दो उच्चारण ठीक नहीं हैं।
3. वर्तनी की एकरूपता भी भाषा की शुद्धता के लिए परम आवश्यक है। देवनागरी लिपि में ई, यी तथा ये, ए के प्रयोग कहाँ करने चाहिए और कहाँ नहीं, इस सम्बन्ध में भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय की 'वर्तनी समिति' ने कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लेकर मानकीकरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। इसके अनुसार-
   (अ) संज्ञा शब्दों के अन्त में 'ई' का प्रयोग होना चाहिए, 'यी' का नहीं।

▶ लिपि के विविध स्तरों पर पाई जाने वाली विषमरूपता को दूर कर उस में एकरूपता लाना ही मानकीकरण है

माहेश्वर सूत्र में देवनागरी वर्णों को एक विशिष्ट क्रम में सजाया गया है। इसमें से किसी वर्ण से आरम्भ करके किसी दूसरे वर्ण तक के वर्णसमूह को दो अक्षर का एक छोटा नाम दे दिया जाता है जिसे 'प्रत्याहार' कहते हैं। प्रत्याहार का प्रयोग करते हुए सन्धि आदि के नियम अत्यन्त सरल और संक्षिप्त ढंग से दिए गये हैं। देवनागरी लिपि के वर्णों का उपयोग संख्याओं को निरूपित करने के लिये किया जाता रहा है। मात्राओं की संख्या के आधार पर छंदों का वर्गीकरणः यह भारतीय लिपियों की अद्भुत विशेषता है कि किसी पद्य के लिखित रूप से मात्राओं और उनके क्रम को गिनकर बताया जा सकता है कि कौन सा छन्द है। रोमन, अरबी

▶ देवनागरी लिपि में लेखन और मुद्रण में एकरूपता है

एवं अन्य में यह गुण अप्राप्य है। लिपि चिह्नों के नाम और ध्वनि में कोई अन्तर नहीं (जैसे रोमन में अक्षर का नाम 'बी' है और ध्वनि 'ब' है)। लेखन और मुद्रण में एकरूपता (रोमन, अरबी और फ़ारसी में हस्तलिखित और मुद्रित रूप अलग-अलग हैं)। देवनागरी, 'स्माल लेटर' और 'कैपिटल लेटर' की अवैज्ञानिक व्यवस्था से मुक्त है।

▶ देवनागरी लिपि अन्य लिपियों की अपेक्षा अच्छी मानी जा सकती है

देवनागरी के चारों ओर से मात्राएँ लगना और फिर शिरोरेखा खींचना लेखन में अधिक समय लेता है, रोमन और उर्दू में नहीं होता। 'र' के एक से अधिक प्रकार का होना, जैसे- रात, प्रकार, कर्म, राष्ट्र। अतः यह कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि अन्य लिपियों की अपेक्षा अच्छी मानी जा सकती है, जिसमें कुछ सुधार की आवश्यकता महसूस होती है जेसे- वर्णों के लिखावट में सुधार की आवश्कता है क्योंकि रवाना लिखने की परम्परा में सुधार हो कर अब 'खाना' इस तरह से लिखा जाने लगा है। इसी तरह से लिखने के पश्चात हमें शिरोरेखा पर विशेष ध्यान देना चाहिए, जैसे- 'भर' लिखते समय हमें शिरोरेखा थोड़ा जल्द बाजी कर दे तो मर पढ़ा जाएगा। इन छोटी-छोटी बातों पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

3.4.4 देवनागरी लिपि की गुण और दोष

	गुण	दोष
1	एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण संकेत।	कुल मिलाकर 403 टाइप होने के कारण टंकण, मुंद्रण में कठिनाई।
2	एक वर्ण संकेत से अनिवार्यतः एक ही ध्वनि व्यक्त।	शिरोरेखा का प्रयोग अनावश्यक अलंकरण के लिए।
3	जो ध्वनि का नाम वही वर्ण का नाम।	अनावश्यक वर्ण (ऋ ॠ लृ, ॡ, ङ्, ञ्, ष)- आज इन्हें कोई शुद्ध उच्चारण के साथ उच्चारित नहीं कर पाता।
4	मूक वर्ण नहीं।	द्विरूप वर्ण (ञ्र अ, ज्ञ, क्ष, त, त्र, छ, झ, रा ण, श)
5	जो बोला जाता है वही लिखा जाता है।	समरूप वर्ण ('ख' में 'र व' का, 'घ' में 'ध' का, 'म' में 'भ' का भ्रम होना)।
6	एक वर्ण में दूसरे वर्ण का भ्रम नहीं।	वर्णों के संयुक्त करने की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं।
7	उच्चारण के सूक्ष्मतम भेद को भी प्रकट करने की क्षमता।	अनुस्वार एवं अनुनासिकता के प्रयोग में एकरूपता का अभाव।
8	वर्णमाला ध्वनि वैज्ञानिक पद्धति के बिल्कुल अनुरूप।	त्वरापूर्ण लेखन नहीं क्योंकि लेखन में हाथ बार-बार उठाना पड़ता है।
9	प्रयोग बहुत व्यापक	वर्णों के संयुक्तीकरण में 'र' के प्रयोग को लेकर भ्रम की स्थिति।
10	भारत की अनेक लिपियों के निकट।	'इ' की मात्रा (ि) का लेखन वर्ण के पहले पर उच्चारण वर्ण के बाद।

▶ देवनागरी लिपि का प्रयोग बहुत व्यापक है

3.4.5 देवनागरी लिपि में सुधार

देवनागरी लिपि आक्षरिक एवं कई दृष्टियों से अपूर्ण होते हुए भी विश्व की अनेक लिपियों से अच्छी है। यों तो यह लिपि विश्व की अनेक लिपियों की तुलना में वैज्ञानिक है, किन्तु इस में काफी कमियाँ भी है और सुधार की काफी गुंजाइश है। आज की आवश्यकताओं को देखते हुए उस में अनेक सुधार अपेक्षित है।

1. नागरिक लिपि आक्षरिक है। वैज्ञानिक लिपि की पहली शर्त है कि उसे वर्णनात्मक होना चाहिए, आक्षरिक नहीं वस्तुतः यह कमी नागरी की प्रकृति में है, अतः उसे थोड़े बहुत परिवर्तन से सुधारना कठिन है।
2. वैज्ञानिक लिपि में एक ध्वनि के लिए एक ही चिह्न होना चाहिए। किन्तु नगरी में एक ध्वनि के लिए एकाधिक चिह्न है।
3. वैज्ञानिक लिपि में अक्षर उसी क्रम से लिखे जाने चाहिए जिस क्रम से वे बोले जाय।
4. वैज्ञानिक लिपि में अक्षरों में समानता होने के कारण भ्रम की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। जैसे हिन्दी में खाना-रवाना अर्थात ख, र, व लिखते समय 'ख' के नीचे भागों को मिला देने या छोड़ देने से यह भ्रम दूर हो जाता है।
5. वैज्ञानिक लिपि में लेखन की एकरूपता भी आवश्यक है। हिन्दी में शिरोरेखा बिंदी (क,ग,ख) तथा अनुस्वार (पम्प- पंप) आदि के सम्बन्ध में एकरूपता नहीं है। इस सम्बन्ध में एक पद्धति (क, ख, ग, ज, फ शिरोरेखा का न होना तथा अनुस्वार) को स्वीकार कर लेना चाहिए।

> ▶ आक्षरिक एवं कई दृष्टि यों से अपूर्ण होते हुए भी 'देवनागरी लिपि' विश्व की अनेक लिपियों से अच्छी है

सुधार की दृष्टि से प्रथम उल्लेखनीय नाम महादेव गोविन्द रानाडे का ही। बाद में महाराष्ट्र साहित्य परिषद्, पुणे ने एक लिपिसुधार समिति नियुक्त की। विनोबा भावे ने अपने पत्र 'लोक नगरी' के माध्यम से नागरी लिपि में सुधार के लिए लोकमत जागृत करने का कार्य किया। 1941 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने एक लिपि सुधार समिति बनाई जिसकी बैठक, उसी वर्ष 5 अक्तूबर को हुई। हिन्दी प्रदेश का यह पहला सुव्यवस्थित प्रयास था। नागरी प्रचारिणी सभा ने 1945 में एक लिपि समिति बनायी थी। आगे चलकर नागरी प्रचारिणी सभा के अनुरोध पर उत्तर प्रदेशीय सरकार ने एक लिपि सुधार परिषद् बनाई।

> ▶ विनोबा भावे ने अपने पत्र 'लोक नगरी' के माध्यम से नागरी लिपि में सुधार के लिए लोकमत जागृत करने का कार्य किया

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

किसी भी भाषा की लिखावट या लिखने के तरीके को लिपि या लेखन प्रणाली कहते हैं। इसमें अलग-अलग ध्वनियों को अलग-अलग चिन्हों के द्वारा दर्शाया जाता है। यदि कोई कहे कि भाषा और लिपि एक ही है तो ऐसा बिल्कुल नहीं है। दोनों में अंतर यह है कि भाषा बोली जाती है जबकि लिपि लेखन प्रणाली है। भाषा बोली जा सकती है जबकि मौखिक वाक्य आदि किसी भी लिपि में लिखे जा सकते हैं। इन लिपियों में देवनागरी लिपि भारतीय उपमहाद्वीप की एक प्राचीन लिपि है। यह ब्राह्मी लिपि पर आधारित है। इस लिपि की शब्दावली भाषा के उच्चारण को दर्शाती है। देवनागरी लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती है। देवनागरी लिपि में कुल 52 वर्ण हैं। यह दुनिया में चौथी सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली लेखन प्रणाली है और इसका उपयोग 120 से अधिक भाषाओं में किया जा रहा है। देवनागरी लिपि में वे सभी विशेषताएँ उपलब्ध है जो एक वैज्ञानिक लिपि में होनी चाहिए उसी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है, जिसमें गुण अधिक हों और दोष न्यूनतम हों। यद्यपि दुनिया की कोई भी लिपि ऐसी नहीं होगी, जिसमें कोई दोष ही न हो, तथापि वैज्ञानिक लिपि के लिए कम से कम दोषों वाली लिपि को ही मान्यता मिलेगी। देवनागरी लिपि की विशेषताएँ अधिक हैं, दोष कम हैं, अतः इसे वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता से क्या तात्पर्य है?
2. देवनागरी लिपि का मानकीकरण के बारे में अपना मत प्रकट कीजिए।
3. देवनागरी लिपि का गुण और दोष क्या-क्या है?
4. देवनागरी लिपि का मानक स्वरूप क्या है?
5. 'देवनागरी लिपी में सुधार' इस विषय पर टिप्पणी लिखिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्‌भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

भाषा विज्ञान-स्वरूप, परिभाषा, वर्गीकरण

BLOCK-04

Block Content

Unit 1: भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की पद्धति और स्वरूप

Unit 2: भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण की इकाइयाँ-वाक्य विज्ञान, रूप विज्ञान

Unit 3: स्वनिम विज्ञान-स्वरूप, भेद, स्वनिम परिवर्तन

Unit 4: अर्थ विज्ञान-स्वरूप, भेद

इकाई : 1

भाषा वैज्ञानिक अध्ययन की पद्धति और स्वरूप

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- भाषाविज्ञान से परिचित होता है
- भाषा की परिभाषा को जानता है
- भाषाविज्ञान के बारे में विविध विद्वानों का मत समझता है
- भाषाविज्ञान के विविध प्रकार को समझता है
- भाषाविज्ञान और व्याकरण के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन को भाषा विज्ञान कहते हैं। भाषा विज्ञान की प्रक्रिया दो शताब्दी पहले शुरू हुई थी। भाषा विज्ञान के लिए समय-समय पर अनेक नाम दिए गए हैं। भाषा विज्ञान सर्वाधिक प्रचलित होने के साथ सहज रूप में भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन का भाव प्रकट करता है। भाषा विज्ञान के ज्ञाताओं ने भाषाओं के आर्य, सेमेटिक आदि कई वर्ग स्थापित करके उनमें से प्रत्येक की अलग अलग शाखाएँ स्थापित की हैं और उन शाखाओं को भी अनेक वर्ग और उपवर्ग बनाकर उनमें बड़ी-बड़ी भाषाओं और उनके प्रांतीय भेदों, उपभाषाओं अथवा बोलियों को रखा है। हिन्दी भाषा, भाषा विज्ञान की दृष्टि से भारतीय आर्य शाखा की एक भाषा है; और ब्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी आदि इसकी उपभाषाएँ या बोलियाँ हैं। पास-पास बोली जानेवाली अनेक उपभाषाओं या बोलियों में बहुत कुछ साम्य होता है; और उसी साम्य के आधार पर उनके वर्ग या कुल स्थापित किए जाते हैं। भारतीय आर्यों की वैदिक भाषा से संस्कृत और प्राकृतों का, प्राकृतों से अपभ्रंशों का और अपभ्रंशों से आधुनिक भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

भाषा की बनावट, वर्णनात्मक भाषाविज्ञान, तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रयोगात्मक भाषाविज्ञान

Discussion / चर्चा

मानव इस दुनिया में अपनी बात और विचार जिस चीज़ के द्वारा पहूँचाता है उसे भाषा कहते हैं। यानी मनुष्यों के बीच सूचना के आदान प्रदान के माध्यम को भाषा कहा जाता है। भाषा मानव मुख से उच्चरित ध्वनियों की व्यवस्था है। भाषा से जुड़े विज्ञान को भाषा विज्ञान

कहते हैं। भाषा को इंसान के द्वारा किया गया सबसे बड़ा आविष्कार माना जाता है।

4.1.1 भाषाविज्ञान की परिभाषा

> ▶ 'भाषा' शब्द का उद्‌भव संस्कृत के 'भाष्' धातु से

"भाषा-विज्ञान" नाम में दो पदों का प्रयोग हुआ है। "भाषा" तथा "विज्ञान"। भाषा विज्ञान को समझने से पूर्व इन दोनों शब्दों से परिचित होना आवश्यक प्रतीत होता है। 'भाषा' शब्द संस्कृत की "भाष्" धातु से निष्पन्न हुआ है। जिसका अर्थ है- व्यक्त वाक् (व्यक्तायां वाचि)। 'विज्ञान' शब्द में 'वि' उपसर्ग तथा 'ज्ञा' धातु से 'ल्युट्' (अन) प्रत्यय लगाने पर बनता है। सामान्य रूप से 'भाषा' का अर्थ है 'बोल चाल की भाषा या बोली' तथा 'विज्ञान' का अर्थ है 'विशेष ज्ञान'।

डॉ. श्यामसुन्दर दास के अनुसार- "भाषा-विज्ञान भाषा की उत्पत्ति, उसकी बनावट, उसके विकास तथा उसके ह्रास की वैज्ञानिक व्याख्या करता है।"

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार- "जिस विज्ञान के अन्तर्गत वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक अध्ययन के सहारे भाषा की उत्पत्ति, गठन, प्रकृति एवं विकास आदि की सम्यक् व्याख्या करते हुए, इन सभी के विषय में सिद्धान्तों का निर्धारण हो, उसे भाषा विज्ञान कहते हैं।"

डॉ. बाबूराम सक्सेना के अनुसार- "भाषा विज्ञान से अभिप्राय भाषा का विश्लेषण करके उसका निर्देशन कराना है।"

मंगल देव शास्त्री के अनुसार, "भाषा-विज्ञान उस विज्ञान को कहते हैं जिसमें सामान्य रूप से मानवी भाषा किसी विशेष भाषा की रचना और इतिहास का और अन्ततः भाषाओं या प्रादेशिक भाषाओं के वर्गों की पारस्परिक समानताओं और विशेषताओं का तुलनात्मक विचार किया जाता है।"

> ▶ भाषा विज्ञान के संबंध में विविध विद्वानों के मत

भाषा विज्ञान के अंतर्गत एक भाषा विशेष के रचनात्मक और ऐतिहासिक अध्ययन और विवेचन को आवश्यक मानते हैं, वही भाषाओं के तुलनात्मक महत्व को भी आवश्यक समझते हैं। वस्तुतः भाषा में तुलनात्मक अध्ययन की यह प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। क्योंकि इसके द्वारा एक ओर तो भाषाओं के परिवार का अन्वेषण मार्ग सुगम हो जाता है दूसरे उसकी उत्पत्ति की खोज मे भी प्रचुर सहायता मिल जाती है।

4.1.2 भाषाविज्ञान की अध्ययन पद्धतियाँ

भाषा विज्ञान की अध्ययन की पद्धतियाँ हैं- भाषा विज्ञान की वर्णनात्मक पद्धति, भाषा विज्ञान की ऐतिहासिक पद्धति, भाषा विज्ञान की तुलनात्मक पद्धति, भाषा विज्ञान की प्रयोगात्मक पद्धति और भाषा विज्ञान की संरचनात्मक पद्धति।

भाषा विज्ञान की वर्णनात्मक पद्धति

जब किसी भाषा के विशिष्ट काल का संगठनात्मक अध्ययन किया जाता है, तो उसे वर्णनात्मक अध्ययन कहते हैं। प्रसिद्ध विद्वान पाणिनी के अष्टाध्यायी में इसी प्रकार का भाषा-अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भाषा के संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा विशेषण आदि की वर्णनात्मक समीक्षा करते हुए ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि पर विचार किया जाता है। भाषा की सब इकाइयों पर अध्ययन करते हुए उनसे सम्बन्धित नियम निर्धारित किया जाता है। भाषा के सीमित काल का ही अध्ययन होता है, फिर भी इसका प्राचीन काल से विशेष महत्व रहा

> ▶ भाषा के विशिष्ट काल का संगठनात्मक अध्ययन

है। इस प्रकार के अध्ययन में भाषा के साधु-असाधु रूपों पर चिन्तन करते हुए उसके ध्वनि, शब्द आदि इकाइयों रूपी शरीरांग के साथ उसकी अर्थरूपी आत्मा पर भी विचार किया जाता है। वर्तमान समय में वर्णनात्मक पद्धति के भाषा-अध्ययन की ओर विद्वानों का विशेष झुकाव दिखाई पड़ता है।

भाषा विज्ञान की ऐतिहासिक पद्धति

ऐतिहासिक पद्धति में भाषा विशेष के काल-क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है। यदि किसी विशेष भाषा के कालों के विवरणात्मक अध्ययन को कालक्रम से व्यवस्थित कर दिया जाए, तो ऐतिहासिक अध्ययन हो जाएगा। भाषा-विकास या परिवर्तन की विभिन्न धाराओं का अध्ययन इसी पद्धति में होता है। भारतीय आर्य भाषाओं के विकास-क्रम में हिन्दी का अध्ययन करना चाहें तो इसी पद्धति से वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं पर विचार करते हुए हिन्दी भाषा का अध्ययन किया जाएगा। यदि हिन्दी शब्दों का उद्भव और विकास जानना चाहेंगे तो संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश के साथ हिन्दी का कालक्रमिक अध्ययन करना होगा; यथा - कर्म (संस्कृत), कम्म (प्राकृत), काम (हिन्दी)। भाषा चिर परिवर्तनशील है। समय तथा स्थान परिवर्तन के साथ भाषा में परिवर्तन होना स्वाभाविक ही है। समय-समय पर भाषा की ध्वनियों, शब्दों तथा वाक्यों में ही नहीं अर्थ में भी परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन हमें ऐतिहासिक पद्धति के अध्ययन से ही ज्ञात होता है।

> ▶ भाषा विशेष के काल-क्रमिक विकास का अध्ययन

भाषा विज्ञान की तुलनात्मक पद्धति

भाषा अध्ययन की जिस पद्धति में दो या दो से अधिक भाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों, पदों, वाक्यों और अर्थों आदि की तुलना की जाती है, उसे भाषा-अध्ययन की तुलनात्मक पद्धति कहते हैं। इस अध्ययन के अन्तर्गत एक भाषा के विभिन्न कालों के रूपों का तुलनात्मक अध्ययन कर उसकी विकासात्मक स्थिति का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करते हैं। एक भाषा की विभिन्न बोलियों की समता-विषमता जानने के लिए भी भाषा-अध्ययन की इस पद्धति से ही उभरा है। इसका प्रबल प्रमाण है कि प्रारम्भ में इसके लिए तुलनात्मक भाषा विज्ञान (Comparative Philology) नाम दिया गया था। यह भी सत्य है कि बिना तुलनात्मक अध्ययन-दृष्टिकोण अपनाए किसी नियम का निर्धारण अत्यन्त कठिन होता है। भाषा-परिवार के निर्धारण में भी तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक होता है। भाषा की सरसता, सरलता या विशेषताओं को स्पष्ट रूप से रेखांकित करने के लिए तुलनात्मक अध्ययन सर्वाधिक उपयोगी होता है।

> ▶ भाषा-अध्ययन की तुलनात्मक पद्धति

भाषा विज्ञान की प्रयोगात्मक पद्धति

भाषा-अध्ययन का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। इसे देखते हुए भाषा-अध्ययन की इस नई पद्धति का प्रारम्भ हुआ है। इसमें भाषा के जीवन्तरूप का व्यावहारिक ढंग से अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन किसी क्षेत्र विशेष से जुड़ा होता है। इसलिए इसे क्षेत्रीय कार्य (Field Work) कहते हैं। इस पद्धति के अध्ययन में अध्येता को किसी क्षेत्र विशेष में जाकर सम्बन्धित भाषा-भाषी से निकट सम्पर्क करना होता है। प्रायोगिक अध्ययन में किसी भाषा या बोली की ध्वनियों, शब्दों, वाक्यों के साथ बोलनेवाले की भाषा में प्रयुक्त मुहावरे, कहावतों आदि की प्रयोग-स्थिति भी अध्ययन किया जाता है। प्रयोगात्मक अध्ययन से ही विभिन्न बोलियों की सहजता, स्वाभाविकता तथा अभिव्यक्ति की स्पष्टता की बात सामने आ रही है। जैसे-जैसे क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग की बात जोर पकड़ रही है वैसे-वैसे इस पद्धति के अध्ययन में गति आ रही है। वर्तमान समय में विभिन्न विद्वानों की भाषा-विशेषताओं को जानने

भाषा के जीवन्तरूप

के लिए भी प्रयोगात्मक पद्धति अपनायी जाती है। आधुनिक भाषा विज्ञान में प्रयोगात्मक पद्धति के अध्ययन का विशेष महत्व है।

भाषा विज्ञान की संरचनात्मक पद्धति

संरचनात्मक पद्धति में भाषा की संरचना के आधार पर अध्ययन किया जाए उसे भाषा-अध्ययन की संरचनात्मक पद्धति कहते हैं। भाषा-अध्ययन की यह पद्धति भाषा की विभिन्न इकाइयों के सूक्ष्म चिन्तन पर आधारित है। इसमें भाषा का विवेचन और विश्लेषण संगठनात्मक दृष्टिकोण से करते हैं। भाषा के संरचनात्मक अध्ययन में पारस्परिक सम्बद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है, वर्णनात्मक भाषा-अध्ययन में भी यत्र-तत्र संरचनात्मक रूप उभर आता है। वर्णनात्मक पद्धति और संरचनात्मक पद्धति के अध्ययन में विशिष्ट अन्तर यह है कि वर्णनात्मक पद्धति में भाषा की इकाईयों का अध्ययन एकाकी रूप में किया जाता है, जबकि संरचनात्मक अध्ययन में विभिन्न इकाइयों के पारम्परिक सम्बन्ध पर भी विचार किया जाता है, यथा - "काम" शब्द के संरचनात्मक अध्ययन में इसके विभिन्न ध्वनि-चिह्नों - क् + आ + म् + अ के लिखित तथा विभिन्न ध्वनियों क् + आ + म् के उच्चरित रूप पर चिन्तन करते हैं। इस प्रकार शब्द-संरचना के अध्ययन में उससे सम्बन्धित ध्वनियों के साथ वाक्यों में प्रयोग की स्थिति पर भी विचार करते हैं। इससे उक्त शब्द के लिखित तथा उच्चरित रूपों का सुस्पष्ट प्रमाण मिल जाता है। वर्तमान समय में भाषा-अध्ययन की संरचनात्मक पद्धति पर विशेष बल दिया जा रहा है।

भाषा की संरचना के आधार पर अध्ययन

4.1.3 भाषा विज्ञान का क्षेत्र

भाषा विज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। इसका क्षेत्र विश्व की समस्त भाषाओं तक फैला हुआ है। भाषा विज्ञान मानव मात्र की भाषा से सम्बन्धित होता है इसलिए इसका विस्तार मानव के चिन्तन तक है। इसमें यदि साहित्यिक भाषाओं का अध्ययन किया जाता है, तो विभिन्न बोलियों का भी अध्ययन किया जाता है। वर्तमान समय में बोलियों का अध्ययन भाषा विज्ञान का महत्वपूर्ण अंग बन गया है इसमें भाषा की विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक अध्ययन के साथ उत्पत्ति तथा विकास का भी अध्ययन किया जाता है। भाषा विज्ञान में वर्तमान तथा अतीत से सम्बन्धित भाषाओं का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार कह सकते हैं कि इसमें एक तरफ उन भाषाओं का अध्ययन किया जाता है जो अब वाचिक रूप में प्रयुक्त नहीं होती हैं, उनका केवल साहित्य प्राप्त होता है। भाषा के विभिन्न कालों में भाषा विज्ञान का सम्बन्ध होता है। भाषा की विभिन्न इकाइयाँ-ध्वनि, वर्ण, शब्द, पद, वाक्य तथा अर्थ भाषा विज्ञान क्षेत्र के विभिन्न आयाम हैं।

वर्तमान तथा अतीत से सम्बन्धित भाषाओं का अध्ययन

4.1.4 भाषाविज्ञान विज्ञान है या कला?

'विज्ञान' शब्द का मूल अर्थ 'विशिष्ट ज्ञान' है। उपनिषदों में इसका प्रयोग 'ब्रह्मविद्या' के लिए भी हुआ है। आज सामान्य प्रयोग में 'शास्त्र' में और इसमें कोई भेद प्रायः नहीं किया जाता। यों मूलतः 'शास्त्र' और 'विज्ञान' में अंतर है। 'विज्ञानं' तो 'विशेष ज्ञान' है और 'शास्त्र' 'शासन करने वाला' है, अर्थात् वह यह बतलाता है कि क्या करणीय है और क्या अकरणीय। अपने यहाँ अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, धर्मशास्त्र के प्राचीन प्रयोग इसी ओर संकेत करते हैं। इस अर्थ में व्याकरण को शास्त्र कह सकते हैं, किन्तु इस मूल अर्थ की दृष्टि से भाषाविज्ञान को शास्त्र नहीं कह सकते। यह बात दूसरी है कि अब मूल अर्थ भुला दिया गया है और 'विज्ञान' तथा 'शास्त्र' पर्याय से हो गये हैं। इसीलिए राजनीतिविज्ञान (Political Science)

'विज्ञानं' 'विशेष ज्ञान' है और 'शास्त्र' 'शासन करने वाला'

तथा राजनीतिशास्त्र, भौतिकविज्ञान और भौतिकशास्त्र, समाजविज्ञान और समाजशास्त्र, मानवविज्ञान और मानवशास्त्र एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

यहाँ यह प्रश्न भी उठाया जा सकता है कि भाषाविज्ञान किस सीमा तक विज्ञान है। वस्तुतः 'विज्ञान' का अर्थ आज के प्रयोग में केवल एक नहीं है। गणित, भौतिक और रसायन जिस अर्थ में विज्ञान हैं, ठीक उसी अर्थ में मानवविज्ञान, राजनीतिविज्ञान, समाजविज्ञान आदि विज्ञान नहीं है। विज्ञान में प्रायः विकल्प नहीं होता और उसके सत्य (जैसे अमुक कारण हो तो अमुक कार्य होगा) काफी सीमा तक देश काल से परे अर्थात् सार्वत्रिक और सार्वकालिक होते हैं। वे बातें गणित या भौतिकी पर जितनी लागू होती है, उतनी राजनीतिविज्ञान आदि पर नहीं, फिर भी, वे विज्ञान कहे जाते हैं। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि भाषाविज्ञान विज्ञान तो है, किन्तु उस सीमा तक नहीं जितना कि गणित आदि। यो इसमें सन्देह नहीं कि दिनोंदिन यह विकसित तथा अधिक वैज्ञानिक होता जा रहा है।

▶ विज्ञान सार्वत्रिक और सार्वकालिक होते हैं

4.1.5 व्याकरण और भाषाविज्ञान

'व्याकरण' शब्द का अर्थ है 'टुकड़े-टुकड़े करना' अर्थात् टुकड़े-टुकड़े करके उसका ठीक स्वरूप दिखाना। यह किसी भाषा के टुकड़े-टुकड़े करके उसके ठीक स्वरूप को दिखाता है। जैसा कि भर्तृहरि ने कहा है (साधुत्वज्ञानविषया सैषा व्याकरण स्मृति-वाक्यपदीय) यह शुद्ध और अशुद्ध प्रयोग का ज्ञान कराता है। इस प्रकार किसी भाषा के सम्यक् ज्ञान के लिए व्याकरण सीखा जाता है। पहले लोग व्याकरण और भाषाविज्ञान में अधिक अंतर नहीं मानते थे, इसीलिए भाषाविज्ञान को तुलनात्मक व्याकरण (Comparative Grammar) कहा गया था, किन्तु यथार्थतः इन दोनों में पर्याप्त भेद है। यदि शास्त्र तथा विज्ञान का ठीक और मूल अर्थ में प्रयोग करें तो व्याकरण शास्त्र है तथा भाषाविज्ञान विज्ञान। यो साम्य भी है। आगे संक्षेप में कुछ बातें दी जा रही है-

(1) दोनों का सम्बन्ध भाषा के अध्ययन से है। (2) व्याकरण के समकालिक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक ये तीन भेद होते हैं। भाषाविज्ञान के भी इस प्रकार के रूप हैं, जैसा कि पीछे संकेत किया जा चुका है। दोनों के इन समनामी रूपों में पर्याप्त साम्य भी है। यों कुछ और वर्णनात्मक भाषाविज्ञान को एक ही माना है, किन्तु वस्तुतः दोनों एक नहीं हैं।

▶ भाषा के सम्यक् ज्ञान के लिए व्याकरण

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन जिस शास्त्र में किया जाता है, उसे भाषा का विज्ञान कहते हैं। अध्ययन के अनेक विषयों में से आजकल भाषा-विज्ञान को विशेष महत्व दिया जा रहा है। अपने वर्तमान स्वरूप में भाषा विज्ञान पश्चिमी विद्वानों के मस्तिष्क की देन कहा जाता है। अति प्राचीन काल से ही भाषा-सम्बन्धी अध्ययन की प्रवृत्ति संस्कृत-साहित्य में पाई जाती है। 'शिक्षा' नामक वेदांग में भाषा सम्बन्धी सूक्ष्म चर्चा उपलब्ध होती है। ध्वनियों के उच्चारण-अवयव, स्थान, प्रयत्न आदि का इन ग्रन्थों में विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। 'प्रातिशाख्य' एवं निरूक्त में शब्दों की व्युत्पत्ति, धातु, उपसर्ग-प्रत्यय आदि विषयों पर वैज्ञानिक विश्लेषण भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन कहा जा सकता है। मनुष्य का प्रत्येक कार्य सोद्देश्य होता है बिना उद्देश्य के वह कोई कार्य नहीं करता। भाषा का अध्ययन भी एक निश्चित उद्देश्य से किया जाता है। भाषा के अध्ययन का अर्थ होता है- भाषा के उन मूलभूत तत्वों का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन करना जिनसे भाषा विशेष का निर्माण हुआ है। भाषा का अध्ययन भाषा के बारे में अध्ययन है और भाषा विज्ञान ही व्यक्ति को भाषा के बारे में अध्ययन कराता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. भाषाविज्ञान से क्या तात्पर्य है?
2. भाषाविज्ञान की अध्ययन पद्धतियों पर प्रकाश डालीए।
3. भाषाविज्ञान विज्ञान है या कला स्पष्ट कीजिए।
4. भाषा और व्याकरण का सम्बन्ध के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।
5. भाषाविज्ञान और भाषाविज्ञान की परिभाषा पर प्रकाश डालिए।
6. भाषाविज्ञान की प्रयोगात्मक पद्धति क्या है?

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ. राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 2

भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण की इकाइयाँ- वाक्य विज्ञान, रूप विज्ञान

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- वाक्य विज्ञान से परिचित होता है
- वाक्यों के प्रकार को जानता है
- रूपविज्ञान की जानकारी प्राप्त होता है
- रूपिम का परिचय प्राप्त करता है
- मुक्त रूप और बद्ध रूप को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

भाषा का मुख्य व्यापार होता है विचारों का आदान-प्रदान। विचारों का यह आदान-प्रदान भाषा में वाक्यों द्वारा ही किया जाता है। जाहिर है यह वाक्य ही भाषा का सबसे अधिक स्वाभाविक और महत्वपूर्ण अंग माना जाता है; क्योंकि वाक्य के बिना विचार संप्रेषित हो ही नहीं सकते। भाषा की विभिन्न उत्पत्तियों के अध्ययनार्थ अनेक विज्ञान या शास्त्र बनाए गये हैं। ऐसे ही भाषा-विज्ञान के जिस विभाग या खंड में 'वाक्य' का अध्ययन-विश्लेषण होता है, उसे ही वाक्य-विज्ञान, 'वाक्य-विचार' या 'वाक्य-रचनाशास्त्र' कहते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

वाक्यविज्ञान, श्लिष्ट योगात्मक वाक्य, अश्लिष्ट योगात्मक वाक्य, प्रश्लिष्ट योगात्मक वाक्य

Discussion / चर्चा

वाक्य-विज्ञान का संबंध बहुत कुछ बोलने वाले समाज के मनोविज्ञान से होता है। वाक्य-विज्ञान में वाक्य का अध्ययन पदक्रम, अन्वय, निकटस्थ अवयव, केन्द्रिकता, परिवर्तन के कारण, परिवर्तन की दिशाएँ आदि दृष्टियों से किया जाता है। रूपकात्मक या वाक्य संरचना की दृष्टि से वाक्य के गठन, उद्देश्य और विधेय का बोध; यानी वाक्य के तत्व, 'भेदक' का प्रयोग, अशक्त शब्द, विशेषणों का प्रयोग, पदों की पुनरुक्ति, सर्वनामों का प्रयोग, अनुनासिक -अनुनासिक स्वर, विभक्तियों का प्रयोग, विराम-चिह्न, वाक्य के प्रकार इन सब पर विचार

किया जाता है, क्योंकि इन्हीं से वाक्य का स्वरूप संरचित होता है।

4.2.1 वाक्यविज्ञान

▶ वाक्य बनाने की प्रक्रिया

'वाक्यविज्ञान' में वाक्य गठन या 'पद' से वाक्य बनाने की प्रक्रिया का वर्णनात्मक, तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन होता है। वर्णनात्मक वाक्यविज्ञान में किसी भाषा में किसी एक काल में प्रचलित वाक्य गठन का अध्ययन किया जाता है। तुलनात्मक तथा व्यतिरेकी में दो या अधिक भाषाओं का वाक्य गठन की दृष्टि से किये गये अध्ययन की तुलना करके साम्य और वैषम्य देखा जाता है। ऐतिहासिक वाक्यविज्ञान में एक भाषा के विभिन्न कालों का अध्ययन कर वाक्य गठन की दृष्टि से उसका इतिहास प्रस्तुत किया जाता है।

▶ 'पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द-समूह'

वाक्य को प्रायः लोक सार्थक शब्दों का समूह मानते हैं, जो भाव को व्यक्त करने की दृष्टि से अपने आप में पूर्ण हो। कोशों तथा व्याकरणों में भी वाक्य की इसी प्रकार की परिभाषा मिलती है। यूरोप में इस दृष्टि से प्रथम प्रयास प्रैक्स (लगभग पहली सदी ई० पूर्व) का है। भारत में 'पतंजलि' (150 ई० पू. के लगभग) का नाम लिया जा सकता है। ये दोनों ही आचार्य 'पूर्ण अर्थ की प्रतीति कराने वाले शब्द-समूह को वाक्य' मानते हैं। इसप्रकार समझने-समझाने के लिये ये परिभाषाएँ अधिक हैं, किन्तु तत्वतः इन्हें ठीक नहीं कहा जा सकता। थोड़ा ध्यान दें तो यह स्पष्ट हुए बिना नहीं रहेगा कि भाषा में या बोलने में वाक्य ही प्रधान है। वाक्य भाषा की इकाई है। व्याकरण्वेत्ताओं ने कृत्रिम रूप से वाक्य को तोड़कर शब्दों को अलग-अलग कर दिया है। हमारा सोचना, समझना बोलना या किसी भाव को हृदयंगम करना सब कुछ 'वाक्य' में ही होता है। ऐसी स्थिति में 'वाक्य पदों या शब्दों का समूह है' कहने की अपेक्षा 'पद या शब्द वाक्यों के कृत्रिम खंड है' कहना अधिक समीचीन है।

4.2.2 वाक्यों के प्रकार

वाक्य के प्रकार पर बात करने से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि वाक्य का वर्गीकरण पाँच आधार पर किया जाता है। जैसे- आकृति के आधार पर, रचना के आधार पर, अर्थ के आधार पर, क्रिया के आधार पर, शैली के आधार पर।

1. आकृति के आधार वाक्य

इसके आधार पर वाक्य भी चार प्रकार के मिलते हैं-

1. **अयोगात्मक वाक्यः** अयोग का अर्थ है- प्रकृति और प्रत्यय अथवा अर्थतत्व और सम्बन्धतत्व का मिला हुआ न होना। अयोगात्मक भाषाओं में प्रकृति प्रत्यय अलग-अलग रहते हैं। इनमें कारक, चिह्न आदि स्वतंत्र शब्द होते हैं। चीनी भाषा अयोगात्मक भाषा है। इसमें पद-क्रम निश्चित है- कर्ता, क्रिया, कर्म। विशेषण कर्ता के पूर्व आता है।
2. **श्लिष्ट योगात्मक वाक्यः** ऐसे वाक्य में प्रकृति और प्रत्यय श्लिष्ट (मिले हुए, जुड़े) होते हैं। इनमें प्रकृति (शब्द, धातु) और प्रत्यय को अलग-अलग करना कठिन होता है। भारोपीय परिवार की प्राचीन भाषाएँ संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, अवेस्ता आदि इसी प्रकार की हैं।
3. **अश्लिष्ट योगात्मक वाक्यः** ऐसे वाक्यों में प्रकृति और प्रत्यय अथवा अर्थतत्व और सम्बन्धतत्व अश्लिष्ट (घनिष्ठता से न मिलना) ढंग के मिले हुए होते हैं। प्रकृति और प्रत्यय जुड़े होने पर भी तिल-तण्डुल-वत् (तिल और चावल की तरह) अलग-अलग देखे जा सकते हैं। तुर्की भाषा में इसके सुन्दर उदाहरण मिलते हैं।

वाक्य का वर्गीकरण

4. **प्रश्लिष्ट योगात्मक वाक्यः** ऐसे वाक्यों में प्रकृति और प्रत्यय इतने अधिक घनिष्ठ रूप में मिल जाते हैं कि पदों को पृथक करना कठिन होता है। पूरा वाक्य एक शब्द-सा हो जाता है। ऐसे उदाहरण दक्षिण अमेरिका की चेरोकी भाषा, पेरीनीज पर्वत के पश्चिमी भाग में बोली जानेवाली बास्क भाषा आदि में मिलते हैं।

2. रचना के आधार वाक्य

वाक्य की रचना या गठन के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं।

1. **सामान्य वाक्यः** इसमें एक उद्देश्य होता है और एक विधेय अर्थात् एक संज्ञा और एक क्रिया। जैसे- वह पुस्तक पढ़ता है।
2. **मिश्र वाक्यः** इसमें एक मुख्य वाक्य होता है और उसके आश्रित एक या अनेक उपवाक्य होते हैं। जैसे- यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः।, यस्यार्थाः तस्य मित्रणि।, जिसके पास धन होता है, उसके सभी मित्र होते हैं।, जिसके पास विद्या है, उसका सर्वत्र आदर होता है।

सामान्य वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य

3. **संयुक्त वाक्यः** इसमें एक एक अधिक प्रधान उपवाक्य होते हैं। इनके साथ आश्रित उपवाक्य एक या अनेक होते हैं अथवा नहीं भी होते हैं। जैसे- जब में गुरु की कुटी पर पहुँचा तो वे स्नान करने नदी पर गए थे- यदाहं गुरुगृहं प्रापम्, तदा स स्नानार्थ नदीं गत आसीत्।

3. अर्थ या भाव के आधार वाक्य

अर्थ या भाव की दृष्टि से वाक्य के प्रमुख 7 भेद किए जाते हैं-

1. विधि-वाक्य - कृष्ण काम करता है।
2. निषेध-वाक्य - कृष्ण काम नहीं करता है।
3. प्रश्न-वाक्य - क्या कृष्ण काम करता है?
4. अनुज्ञा-वाक्य - तुम करो।
5. सन्देह-वाक्य - कृष्ण काम करता होगा।
6. इच्छावाचक-वाक्य - ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि दे।
7. संकेतार्थ-वाक्य - यदि कृष्ण पढ़ता तो अवश्य उत्तीर्ण होता।
8. विस्मयार्थक-वाक्य - अरे तुम उत्तीर्ण हो गए।

अर्थ या भाव की दृष्टि से वाक्य के प्रमुख भेद

5. क्रिया के आधार वाक्य

वाक्य में क्रिया के आधार पर दो भेद होते हैं-

1. **क्रियायुक्त वाक्यः** सामान्यतया सभी भाषाओं में एक वाक्य में एक क्रिया होती है। वह विधेय के रूप में होती है। अधिकांश वाक्य इसी कोटि में आते हैं। जैसे- सः पुस्तकं पठति (वह पुस्तक पढ़ता है)। वाच्य (Voice) के आधार पर क्रियायुक्त वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

- कर्तृवाच्य में कर्ता मुख्य होता है। कर्ता में प्रथमा होती है। जैसे- रामः पुस्तकं पठति (राम पुस्तक पढ़ता है)।
- कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है, अतः कर्म में प्रथम होती है और कर्ता में तृतीय। जैसे- मया पुस्तकं पठ्यते (मेरे द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है)।
- भाववाच्य में क्रिया मुख्य होती है। कर्म नहीं होता। कर्ता में तृतीया होती है और क्रिया में सदा प्रथम पुरुष एकवचन होता है। जैसे- मया हस्यते (मेरे द्वारा हँसा जाता है), मया हसितम् (मैं हँसा)।

क्रिया के आधार पर वाक्य

2. **क्रियाहीन वाक्यः** प्रचलन के आधार पर कई भाषाओं में क्रियाहीन वाक्यों का भी प्रयोग होता है। वहाँ क्रियापद गुप्त रहता है।

- **प्रचलन-मूलकः** प्रचलन के आधार पर संस्कृत, रूसी, बंगला आदि में सहायक क्रिया के बिना भी वाक्यों का प्रयोग होता है। क्रिया अन्तर्निहित मानी जाती है। हिन्दी, अंग्रेजी में सामान्यता सहायक क्रिया का होना अनिवार्य है। जैसे- संस्कृत- इदम् मम गृहम् (यह मेरा घर है) रूसी- एता मोय दोम (यह मेरा घर है) बंगला- एइ आमार बाड़ी (यह मेरा घर है)
- **प्रश्न-वाक्यः** प्रश्न-वाक्यों में प्रश्न और उत्तर दोनों स्थलों पर या केवल उत्तर-वाक्य में क्रिया नहीं होती। जैसे- प्रश्न - कस्मात् त्वम् (कहाँ से?)। उत्तर- प्रयागात् (प्रयाग से)। यहाँ पर पूरा प्रश्न वाक्य होगा- तुम कहाँ से आ रहे हो? उत्तर- मैं प्रयाग से आ रहा हूँ। प्रयत्नलाघव के कारण क्रियाहीन वाक्य का प्रयोग होता है।

- क्रियायक्त वाक्य और क्रियाहीन वाक्य

3. शैली के आधार वाक्य

शैली के आधार पर वाक्यों के तीन भेद किए जो हैं-

- **शिथिल वाक्यः** इसमें अलंकृत या मुहावरेदार वाक्य की ओर ध्यान नहीं दिया जाता है। वक्ता या लेखक मनमाने ढंग से बात कहता है। जैसे- 'एक थी रानी कुन्ती, उसके पाँच पुत्तर, एक का नाम युधिष्ठिर, एक का नाम भीम, एक का नाम कुछ और, एक का नाम कुछ और, एक का नाम भूल गया'। यह कथावाचकों आदि की शैली होती है।
- **समीकृत वाक्यः** इसमें संतुलन और संगति का ध्यान रखा जाता है। जैसे, यस्यार्थाः तस्य मित्राणि (जिसके पास पैसा, उसी के मित्र), यतो धर्मस्ततो जयः, इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः, यथा राजा तथा प्रजा, जिसकी लाठी उसकी भैंस, न घर का न घाट का। समीकृत वाक्य विरोधमूलक भी होते हैं। जैसे- कहाँ हंस कहाँ बगुला, कहाँ राजा कहाँ रंक, कहाँ शेर कहाँ सुअर। समीकृत वाक्य सन्तुलन आदि गुणों के कारण लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हो जाते हैं।
- **आवर्तक वाक्यः** इसमें क्रिया कथनीय वस्तु में दी जाती है। श्रोता की जिज्ञासा अन्तिम वाक्य सुनने पर ही पूर्ण होती है। यदि, अगर आदि लगाकर वाक्यों को लंबा किया जाता है। जैसे- 'यदि सुख चाहिए, यदि शान्ति चाहिए, यदि कीर्ति चाहिए, यदि अमरता चाहिए तो विद्याध्ययन में मन लगाओ।'

- शिथिल वाक्य, समीकृत वाक्य और आवर्तक वाक्य

4.2.3 रूप विज्ञान

'रूपविज्ञान' भाषाविज्ञान की एक शाखा है, जिसके अध्ययन की केंद्रीय इकाई 'रूपिम' है। अंग्रेजी में रूपविज्ञान के लिए 'मार्फोलॉजी' (Morphology) शब्द का प्रयोग किया जाता है, जो 'Morph' और 'logy' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'मार्फ' (Morph) के लिए हिन्दी में 'रूप' शब्द का प्रयोग होता है और 'लॉजी' (logy) का अर्थ है- 'विज्ञान'। विभिन्न भाषावेत्ताओं ने रूपविज्ञान को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है। नाइडा के अनुसार, रूपविज्ञान रूपिम तथा शब्द निर्माण में उसकी व्यवस्था करता है। कैरोल के अनुसार, 'रूपविज्ञान उस पद्धति अथवा प्रणाली का अध्ययन है जिसके अनुसार शब्द-निर्माण किया जाता है और निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि रूपविज्ञान का संबंध रूपिमों की पहचान, शब्द-निर्माण में उनके क्रम, उनमें होने वाले परिवर्तन तथा विविध व्याकरणिक संरचनाओं में पाई जाने वाली व्यवस्था का अध्ययन है।'

- 'रूपविज्ञान' की केंद्रीय इकाई

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रूपविज्ञान भाषाविज्ञान की वह शाखा है जिसमें रूपिमों के अर्थ, स्वरूप, अनुक्रम, उनकी प्रतीति और प्रकार्य आदि के आधार पर उनके भेदों का किसी

भाषा विशेष की संरचना के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।

भाषा का अध्ययन दो आधारों पर होता है- ध्वन्यात्मक आधार और व्याकरणिक आधार। ध्वन्यात्मक आधार पर भाषा की ध्वनियों का अध्ययन होता है जिसका अर्थ से सीधा सम्बन्ध नहीं होता। स्वनिम अर्थभेदक तो होता है, लेकिन अपने में सार्थक नहीं होता। व्याकरणिक आधार पर भाषा का अध्ययन रूपों और वाक्यों से सम्बन्ध होता है। रूप और वाक्य दोनों ही भाव, विचार या अर्थ से सीधा सम्बन्ध रखते हैं। अर्थ से सम्बन्ध जोड़कर भाषा का अध्ययन करने पर उसकी सबसे लघुतम इकाई 'रूप' (Morph) की होती है। किसी निश्चित व्यवस्था के अन्तर्गत स्वनिमों का अनुक्रम बनाने पर रूप या रूपिम का निर्माण होता है। इसी प्रकार रूपिमों के कुछ निश्चित क्रम के अनुक्रम बनते हैं तो वाक्यों की रचना होती है। व्याकरण के मुख्यतः दो अंग होते हैं- रूप-विज्ञान और वाक्य-विज्ञान। इनमें रूप-विज्ञान अथवा पद-विज्ञान का इतना महत्व है कि लोग उसे व्याकरण का पर्यायवाची समझते हैं। व्याकरण जहाँ वर्णन प्रधान होता है, रूप-विज्ञान वहाँ विचार-प्रधान होता है। भाषा में प्रयुक्त रूपों अथवा पदों का विभिन्न दृष्टि कोणों से विवेचन रूप-विज्ञान का विषय होता है। स्वन-विज्ञान की आधारभूत इकाई स्वनिम (Phoneme) है तो रूप-विज्ञान की आधारभूत इकाई रूपिम (Morpheme) हैं। रूप-विज्ञान के अध्ययन के प्रारम्भ में हमें तीन पारिभाषिक शब्दों से परिचित होना है- रूप, शब्द और पद।

▶ रूप-विज्ञान और वाक्य-विज्ञान

भाषा वैज्ञानिकों के अनुसार किसी भी 'लघुतम अर्थयुक्त इकाई को (Minimum Meaningful Unit) 'रूप' (Morph) कहना चाहिए। इसके अनुसार अप, उप, वे आदि उपसर्ग, ता, त्व, पा, पन, ई आदि प्रत्यय तथा पेड़, गाड़ी आदि मूल शब्द भी रूप की परिधि में आते हैं। 'शब्द' (Word) वह भाषाशास्त्रीय रूप है जिसका अर्थ व वितरण सर्वथा स्वतन्त्र होता है तथा जिसके पूर्व और पश्चात् विराम (Pause) होता है। शब्द और रूप का एक अन्तर यह है कि शब्दों का अर्थ कोश-ग्रन्थों में मिल जाता है, पर सभी रूपों का अर्थ कोश-ग्रन्थों में मिलता नहीं है। रूपों से शब्द बनते हैं, पर हर रूप, शब्द नहीं होता। आदमी, पानी आदि रूप होते हैं, शब्द भी आदमीपन, पनिहारा आदि शब्द हैं, पर दो-दो रूपों के अनुक्रम से इनका निर्माण हुआ है। शब्द तो कोश में प्राप्त मूल रूप होता है। अगर हम भाषा में उसका प्रयोग करना चाहें तो उसके साथ प्रत्यय अथवा सम्बन्ध-तत्व (कारक, लिंग, वचन, काल आदि के प्रत्यय) लगाने की आवश्यकता होती है। इस तरह अर्थतत्व और सम्बन्ध-तत्व (प्रकृति और प्रत्यय) का संयुक्त रूप जो बनता है, वही वाक्य में प्रयोग होता है, उसी को 'पद' कहते हैं।

▶ शब्द और पद का अर्थ एवं प्रयोग

4.2.4 रूपिम- सामान्य परिचय

रूपिम स्वनिमों का ऐसा लखुतम अनुक्रम है, जो व्याकरणिक दृष्टि से सार्थक होता हैं। रूपिम को 'न्यूनतम अर्थयुक्त इकाई' (Minimum Meaningful Unit) कह सकते हैं, पर याद रखना है कि यह अर्थ की इकाई नहीं है। सभी अनुक्रम रूप नहीं होते। 'प्रगति', 'प्रवीण', 'प्रहार' आदि के 'प्रासार्थक' होते हैं, पर 'प्रश्न' का 'प्र ' सार्थक नहीं है। 'सुन्दर' सार्थक है, इसलिए यह रूपिम हो सकता है। 'सुन्दरता', 'लघुता' 'मनुष्यता', 'ममता' का 'ता' भी रूपिम है। पर सुन्दर का 'सन्' और 'दर' रूपिम नहीं है, क्योंकि वे सार्थक नहीं होते। स्वनिमों के समान रूपिम भी कुछ निश्चित सन्दर्भ (Environment) में ही प्रयुक्त होते हैं। रूपिमों के अर्थ अक्सर उनके सन्दर्भ पर ही निर्भर करते हैं। जब तक किसी रूपिम के प्रयुक्त होने के सन्दर्भों की पूरी जानकारी प्राप्त नहीं हो, तब तक उसके अर्थ को भी ठीक-ठीक नहीं समझ सकते।

▶ रूपिम स्वनिमों का लखुतम अनुक्रम

किसी रूपिम के वितरण (Distribution) का पता लगाना हो तो हमें देखना होगा कि किन-किन सन्दर्भो में वह प्रयुक्त होता है और किन-किन सन्दर्भो में नहीं। 'मनुष्यता', 'लघुता', 'गुरुता', 'सुन्दरता' के आधार पर 'ता' को और 'उपवन', 'उपमन्त्री', 'उपाध्यक्ष', 'उपस्वन' के आधार पर 'उप' को अलग कर सकते हैं।

मातृभाषा का अध्ययन करते हुए 'ता' 'उप' आदि रूपों की पहचान बड़ी ही सरल मालूम पड़े क्योंकि बचपन से ही हम इनको बराबर पहचानते रहे हैं। 'खाया', 'लाया' के सादृश्य में 'जा' का भूतकाल रूप 'जाया' बोलने वाला छोटा बच्चा व्याकरणिक दृष्टि से भले ही गलत बोलता हो, पर रूपों के विश्लेषण की दृष्टि से वह सही बोलता है। अनजाने में अपने आप ऐसा विश्लेषण हो जाता है। पर अन्य भाषा के अध्ययन में तो हमें परिश्रम से हो ऐसे विश्लेषण करने पड़ते हैं।

4.2.5 रूपिमों का निर्धारण

▶ 'रूपिम' और 'उपरूपों' का निर्धारण

रूपों के आकार और अर्थ के आधार पर 'रूपिम' (Morpheme) और 'उपरूपों' (Allo-morphs) का निर्धारण होता है। समान अर्थवाले एकाधिक रूप अपने सन्दर्भ के आधार पर (Environments), प्रवचनीय (Definable) हो तो इन सबको मिलाकर एक रूपिम बनाया जाता है। उदाहरण के रूप में हिन्दी स्त्रीलिंग प्रत्यय को लिया जा सकता है। कभी यह 'ई' होता है कभी 'इन' और कभी 'इया'। इसी तरह बहुवचन प्रत्यय के 'ए' - 'एं' 'याँ' आदि अनेक रूप होते हैं। एक ही अर्थ को सूचित करने के लिए एकाधिक रूप हो और उनके प्रस्तुत होने के सन्दर्भ प्रवचनीय हों तो उन सबको एक ही रूपिम के उपरूप माना जाता है। वचन प्रत्ययों में जहाँ 'ए' होता है, वहाँ 'एं' या 'याँ' नहीं होता। ये परिपूरक वितरण में हैं। इनमें से किसी को रूपिम मानकर उपरूपों का निर्धारण कर लेना आसान होता है।

4.2.6 मुक्त रूप और बद्ध रूप

▶ स्वनिमों के अनुक्रम स्वतन्त्र रूप में

स्वनिमों के कुछ अनुक्रम स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त हो सकते हैं, उन्हें मुक्त रूप कहेंगे। जो स्वनिमानुक्रम सार्थक होने पर भी स्वतन्त्र रूप में प्रयुक्त नहीं होते उन्हें बद्ध रूप कहेंगे।

मुक्त रूप - घर, आदमी, सुन्दर, तेज

बद्ध रूप - उप - (उपवन) अप - (अपमान) - सु - (सुपुत्र) कु - (कुरूप)

- ऊ (कमाऊ) - ई (तेज़ी)

- पन (बचपन) - ता (मनुष्यता)

एकाधिक रूपिमों के अनुक्रम से बने शब्द चार प्रकार के हो सकते हैं-

मुक्त रूप + बद्ध रूप	-	घरू, बचपन, सुन्दरता, तेजी
बद्ध रूप + मुक्त रूप	-	उपमंत्री, सुयोग्य, कुपुत्र, अपवाद
मुक्त रूप + मुक्त रूप	-	घर-द्वार, काम-काज
बद्ध रूप + बद्ध रूप	-	तारतम्य

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

भाषा मानव जीवन की अत्यन्त महत्वपूर्ण उपलब्धि है। ज्ञान विज्ञान की समस्त शाखाओं एवं प्रशाखाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है। इस दृष्टि से 'भाषा' का सम्बन्ध प्रत्येक शास्त्र एवं विज्ञान से है। भाषाविज्ञान में ज्ञान के समस्त विषयों की अभिव्यक्ति के माध्यम 'भाषा' का अध्ययन किया जाता है और इस दृष्टि से भाषावैज्ञानिक अध्ययन का महत्व बहुत अधिक है। भाषाविज्ञान एवं ज्ञान की अन्य शाखाओं का अध्ययन करने वाले विषयों में यह अन्तर अवश्य है कि जहाँ दूसरे विषय भाषा के सम्बन्ध में एक माध्यम एवं साधन के रूप में विचार करते हैं वहाँ भाषावैज्ञानिक के लिए भाषा का अध्ययन एवं विवेचन ही साध्य है। यह बात अवश्य है कि भाषावैज्ञानिक भी भाषा का विवेचन 'भाषा' के माध्यम से ही करता है परन्तु उसका लक्ष्य 'भाषा' की संरचनाओं तथा अभिव्यक्ति-क्षमताओं का विवेचन एवं विश्लेषण करना होता है न कि भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त विचार का चिन्तन अथवा भाव-बोध के सौन्दर्य का उद्घाटन। भाषावैज्ञानिक भाषा की व्यवस्थाओं को ज्ञात करता है एवं उनमें प्राप्त अभिरचनाओं एवं संरचनाओं का विश्लेषण करता है तथा संसार भर की भाषाओं के स्वरूप के सम्बन्ध में विचार करने के पश्चात् उनका पारिवारिक एवं आकृतिमूलक वर्गीकरण करते हुए भाषा एवं भाषा अध्ययन की पद्धतियों के सम्बन्ध में सैद्धांतिक अध्ययन करता है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. वाक्य विज्ञान से क्या तात्पर्य है?
2. वाक्य विज्ञान की प्रकार के बारे में टिप्पणी तैयार कीजिए।
3. रूप विज्ञान क्या है?
4. अर्थ या भाव के आधार वाक्य के भेद को समझाइए।
5. रूपिमों की परिचय दीजिए।
6. मुक्त रूप और बद्ध रूप से क्या तात्पर्य है?

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ. राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 3

स्वनिम विज्ञान-स्वरूप, भेद, स्वनिम परिवर्तन

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- स्वनिम विज्ञान को समझता है
- स्वनिम के स्वरूप को समझता है
- स्वानिकी और स्वानिमी की जानकारी प्राप्त करता है
- स्वानिकी की क्षेत्र को समझता है
- स्वानिकी और स्वानिमी के अंतर को समझता है

Background / पृष्ठभूमि

भाषा का चरम अवयव वाक्य है। वाक्यों का विश्लेषण करने पर पद, शब्द, रूप से होते हुए हम ध्वनि तक जा पहुँचते हैं। अर्थात् भाषा के वाक्यों का विश्लेषण करने पर सबसे निचले स्तर पर हम ध्वनि को पाते हैं। वैसे 'ध्वनि' शब्द का बड़ा व्यापक अर्थ होता है। चेतन, अचेतन किसी भी वस्तु से ध्वनि उत्पन्न हो सकती है। भाषा विज्ञान में तो मानव की भाषा में प्रयुक्त ध्वनि को 'भाषा ध्वनि' (Speech Sound) कहते हैं। भाषा विज्ञान की पारिभाषिक शब्दावली में भाषा-ध्वनि को 'स्वन' (Phone) कहते हैं। स्वन अथवा भाषा-ध्वनि के अध्ययन से सम्बद्ध विज्ञान को 'ध्वनि-विज्ञान' अथवा 'स्वन-विज्ञान' (Phonology) कहते हैं।

Keywords / मुख्य बिन्दु

शुद्ध सैद्धांतिक पक्ष, प्रायोगिक पक्ष, वाग्ध्वनि, उच्चारण प्रक्रिया, संवहन प्रक्रिया, श्रवण प्रक्रिया

Discussion / चर्चा

'स्वनिम' का अर्थ है 'ध्वनि'। स्वनिम शब्द अंग्रेजी भाषा के 'फोनिक' का नवीनतम हिन्दी अनुवाद है। स्वनिम के लिए अब तक 'ध्वनिग्राम' और 'स्वनग्राम' शब्द का प्रयोग होता रहा है। किन्तु भारत सरकार के पारिभाषिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग में 'फोनिक' का हिन्दी अनुवाद 'स्वनिम' कर दिया गया।

4.3.1 स्वनिमविज्ञान

स्वन विज्ञान के अध्ययन के दो पक्ष होते हैं- शुद्ध सैद्धान्तिक पक्ष और प्रायोगिक पक्ष।

सैद्धान्तिक पक्ष में स्वन की परिभाषा, वाग्यंत्र, स्वन की उत्पत्ति, स्वन का वर्गीकरण आदि की चर्चा होती है जो किसी भाषा विशेष से सम्बद्ध नहीं होती। इस तरह का अध्ययन 'स्वानिकी' (Phonetics) कहलाता है। किसी भाषाविशेष के स्वनों का अध्ययन, स्वनों की संरचना, उस भाषा के स्वनियों का निर्धारण आदि की चर्चा 'स्वानिमी' (Phonemics) के अन्दर होती है। इस तरह स्वानिकी में स्वनों का सामान्य अध्ययन होता है और स्वानिमी में भाषाविशेष की ध्वनियों का अध्ययन होता है। स्वनिमविज्ञान (phonemics) वह विज्ञान है जिसमें किसी भाषा में प्रयुक्त स्वनिमों (ध्वनिग्रामों) तथा उनसे संबद्ध पूरी व्यवस्था पर विचार करते हैं। इसके अंतर्गत स्वनिम (ध्वनिग्राम) तथा उपस्वन (सध्वनि) का निर्धारण उपस्वन का वितरण स्वर और व्यंजन स्वनिम का उस भाषा में प्रयुक्त संयोग एवं अनुक्रम प्राप्त खण्ड्येतर स्वनिमों की व्यवस्था रूपियों के मिलने पर घटित होने वाले स्वनिमिक परिवर्तन आदि स्वनिमिक व्यवस्था से संबंध सारी बातें आती है।

▶ भाषा में प्रयुक्त स्वनिमों तथा उनसे संबद्ध पूरी व्यवस्था

4.3.2 परिभाषा

भोलानाथ तिवारी के शब्दों में- "स्वनिम किसी भाषा की वह अर्थभेदक ध्वन्यात्मक इकाई है जो भौतिक यथार्थ में होकर मानसिक यथार्थ होती हैं तथा जिसमें एक से अधिक ऐसे उपसर्ग होते हैं जो ध्वन्यात्मक दृष्टि से मिलते-जुलते हैं।" अर्थभेदक में असमर्थ तथा आपस में मुक्त वितरक होते हैं। देवेन्द्र नाथ शर्मा के शब्दों में- "स्वनिम उच्चरित भाषा का वह न्यूनतम अंश है, जो ध्वनियों का अंतर प्रदर्शित करते हैं।" डॉ. तिलक सिंह के शब्दों में- "स्वनिम उच्चरित पक्ष की विषम स्वनिक अर्थ भेदक तत्व की इकाई स्वनिम है।" ब्लूम फील्ड व डेनियर जोन्स ने स्वनिम को- 'भौतिक' इकाई माना है। एडवर्ड सापीर ने स्वनिम को- 'मनोवैज्ञानिक' इकाई माना है। डेनियल जान्स के शब्दों में- 'स्वनिम मिलते-जुलते ध्वनियों का परिवार है'। डब्ल्यू. एफ. ट्वोडल ने स्वनिम को- 'अमूर्त काल्पनिक' इकाई माना है। स्वनिम विज्ञान के प्रवर्तक 'महर्षि पाणिनि' है। स्वनिम विज्ञान लिपि निर्माण का मूलाधार है।

▶ स्वनिम विज्ञान के बारे में विद्वानों के मत

4.3.3 स्वरूप

स्वनिम के स्वरूप के संदर्भ में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। विभिन्न विद्वानों ने इसे भिन्न-भिन्न विषयों से सम्बन्धित माना है। ब्लूमफील्ड और डैनियल जोन्सने ने इसे भौतिक इकाई के रूप में स्वीकार किया है। एडवर्ड सपीर इसे मनोवैज्ञानिक इकाई मानते हैं। डब्ल्यू. एफ. ट्वोडल स्वनिम को अमूर्त काल्पनिक इकाई मानते हैं। स्वन या ध्वनि-परिवर्तन से सदा अर्थ-परिवर्तन नहीं होता है, जबकि स्वनिम-परिवर्तन से अर्थ-परिवर्तन निश्चित है। स्वनिम उच्चारित भाषा की ऐसी लघुतम इकाई है, जिससे दो ध्वनियों का अन्तर स्पष्ट होता है। इस प्रकार यह भी स्पष्ट है कि स्वनिम का सम्बन्ध ध्वनि से है। ध्वनि का सम्बन्ध यदि उच्चारण से होता है, तो श्रवण से भी इसका अटूट सम्बन्ध होता है। यदि ध्वनि सुनी नहीं जाएगी तो उसका अस्तित्व भी संदिग्ध होगा। ध्वनि के उच्चारण तथा श्रवण-सम्बन्धों के ही कारण स्वनिम को शरीर-विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान से सम्बन्धित कहा गया है, क्योंकि उच्चारण और श्रवण-प्रक्रिया यदि शरीर विज्ञान से सम्बन्धित होती है, तो संवहन-प्रक्रिया पूर्णतः भौतिक विज्ञान से।

▶ स्वनिम के स्वरूप भौतिक इकाई के रूप में

किसी भी भाषा की मूलभूत ध्वनियाँ लगभग पन्द्रह से पचास तक होती हैं। इन्हीं ध्वनियों के निर्धारण पर स्वनिम का निर्धारण होता है। स्वनिम के ही माध्यम से ध्वनियों के मध्य अन्तर प्रदर्शित होता है। ज, न, प भिन्न-भिन्न स्वनिम हैं। 'जान' तथा 'पान' का अन्तर

स्वनिम की भिन्नता के ही आधार पर होता है। यहाँ 'ज' तथा 'प' दो भिन्न सार्थक ध्वनियाँ हैं। इन्हीं भिन्न सार्थक ध्वनियों के आधार पर 'ज्ञान' तथा 'पान' में अर्थ भिन्नता भी है। इन्हीं सार्थक ध्वनियों को ध्वनि विज्ञान में स्वनिम कहते हैं। उन दो शब्दो की 'न' ध्वनियों में सूक्ष्म अन्तर है, क्योंकि कोई भी व्यक्ति यदि एक ध्वनि को दो बार उच्चारण करेगा, तो उनमें सूक्ष्म अन्तर होना स्वाभाविक है; यथा- पान, जान, पानी, मनु, मीनू, माने, मानो आदि शब्दों की विभिन्न 'न' ध्वनियों में सामान्य रूप से कोई अन्तर नहीं लगता है, किन्तु सूक्ष्म चिन्तन पर इन ध्वनियों में सूक्ष्म भिन्नता का ज्ञान होता है। स्वनिक रूप से यदि इनमें भिन्नता है तो उच्चारण के स्थान, प्रयत्न तथा कारण आदि आधारों पर इनमें पर्याप्त समानता ही स्वनिम की अवधारणा का आधार है।

▶ स्वनिम की अवधारणा का आधार

4.3.5 स्वानिकी

स्वानिकी में स्वनों का सामान्य रूप से अध्ययन होता है। भाषा विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए स्थानिकी का अध्ययन अनिवार्य होता है, क्योंकि भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन का मूल आधार स्वानिकी ही है। किसी भाषा का स्वानिमिक विश्लेषण स्वानिकी द्वारा प्रस्तुत सामग्री के आधार पर ही होता है। सामग्री प्रस्तुत करना स्वानिकी का काम है और स्वानिमी उस सामग्री की व्यवस्था को ढूंढ निकालता है। 'रूप-विज्ञान' (Morphemics), 'वाक्य-विज्ञान' (Syntax) तथा उससे ऊपर के स्तर तक स्वानिकी का महत्व होता है। जॉर्ज सैम्पसन ने ठीक ही कहा है- "स्वानिकी से अनभिज्ञ भाषा शिक्षक वैसे ही निरर्थक है जैसे शरीर-विज्ञान से अनभिज्ञ चिकित्सक।"

▶ भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन का मूल आधार

4.3.5.1 स्वानिकी का क्षेत्र

भाषा एक माध्यम है जिसके सहारे मानव समुदाय परस्पर विचार-विनिमय करता है। इस दृष्टि से भाषा के व्यवहार की तीन प्रक्रियाएँ देखी जा सकती हैं- उच्चारण-प्रक्रिया, संवहन प्रक्रिया और श्रवण प्रक्रिया। इन तीनों-प्रक्रियाओं के आधार पर स्वन का अध्ययन हो सकता है और इस तरह स्वानिकी की तीन शाखाएँ बनती हैं-

▶ भाषा के व्यवहार की तीन प्रक्रियाएँ

1. औच्चारिकी (Articulatory Phonetics)
2. संचारिकी (Acoustic Phonetics)
3. श्रौतिकी (Auditory Phonetics)

औच्चारिकी के अन्दर उच्चारण अवयव, उच्चारण प्रक्रिया, भिन्न-भिन्न उच्चारण- अवयवों के कार्य, उच्चरित स्वनों के भेद आदि का अध्ययन होता है। जब तक किसी स्वन का उच्चारण न कर दिया जाए, तब तक उस पर वक्ता का नियन्त्रण होता है। अर्थात् मनुष्य किसी स्वन का उच्चारण करना चाहे, उसके लिए प्रयत्नशील हो, इस बीच उस स्वन के बदले किसी अन्य स्वन का उच्चारण करने की आवश्यकता महसूस हो, तो वह पहले स्वन के उच्चारण को रोककर दूसरे स्वन का उच्चारण कर सकता है। औच्चारिकी मात्रा में ऐसे नियंत्रण हो सकता है, इसलिए स्वन-विज्ञान में औच्चारिकी का विशेष महत्व होता है। सांचारिकी का भौतिक विज्ञान और गणित से निकट का सम्बन्ध होता है। मानव-मुख से निकलने वाला स्वन अन्तरीक्ष में लहरों के रूप में फैल जाता है। मानव के मुख से निकल जाने के बाद इन ध्वनियों पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता। अन्तरीक्ष में फैल जानेवाली ध्वनि लहरों का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक उपकरणों की आवश्यकता होती है और किसी प्रयोगशाला में ही ऐसे अध्ययन हो सकते हैं। अतः सांचारिकी एक तरह से भौतिक विज्ञान का विषय बन जाता है।

भौतिकी में व्यक्ति द्वारा स्वनों के श्रवण के स्वरूप का अध्ययन होता है। उच्चारण और श्रवण एक-दूसरे के पीछे चलते हैं तथा वे परस्पर सम्बद्ध होते हैं। श्रवण का सम्बन्ध वक्ता से नहीं, श्रोता से होता है। भाषा विज्ञान में श्रोतिकी के क्षेत्र में बहुत कम काम हुआ है। स्वानिकी की इन तीन शाखाओं के होने पर भी सामान्य रूप से स्वानिकी कहने पर औच्चारिकी का ही अर्थ लिया जाता है।

▶ स्वानिकी के तीन शाखाओं के परिचय

4.3.6 स्वानिमी (Phonemics)

मानव के वाग्यंत्र से उच्चरित ध्वनि 'वाग्ध्वनि' या 'भाषा ध्वनि' कहलाती है। इसी के मूल रूप को स्वन कहा जाता है। हम किसी एक स्वन का कई बार उच्चारण करते हैं तो प्रत्येक बार के उच्चारण में अन्तर अवश्य होता है। इसी तरह 'कमला अपनी काली कलम किसी को नहीं देती' में पाँच 'क' हैं, पर ये पाँचों अपने आगे-पीछे के स्वनों के प्रभाव में आने के कारण भिन्न-भिन्न प्रकार से उच्चरित होते हैं। 'कलम, किताब, कुमार, कृष्ण, केशव, कैदी, कोठी, कौन' इन शब्दों के 'क' अलग-अलग ढंग से उच्चरित होते हैं। उच्चारण में थोड़ा-थोड़ा अन्तर होने पर भी इन्हें एक ही लिपि-संकेत से अंकित किया जाता है। अर्थात् ये सब एक ही ध्वनि संकेत से अंकित होते हैं, क्योंकि इनमें अर्थभेदक तत्व नहीं है। इसके विपरीत 'काल', 'खाल', 'गाल' को लीजिए, इनमें प्रयुक्त क्, ख् और ग् में अर्थभेदक क्षमता है। अंग्रेज़ आदमी 'कील', 'खील' के अन्तर को पहचान नहीं सकेगा, क्योंकि उनकी भाषा में 'क' और 'ख' के कारण कोई शब्द अर्थभेदक नहीं होता। हिन्दी में 'श, ष, स' अर्थभेदक हैं, पर बंगला में 'श, ष, स' को अलग पहचानना असम्भव होता है। विभिन्न भाषाओं में अर्थभेदक- क्षमता भी भिन्न प्रकार की होती है। अर्थभेदक क्षमता से युक्त स्वनों को अथवा स्वनों के समूह को 'स्वनिम' (Phoneme) कहते हैं। दूसरे शब्दों में, स्वनिम किसी भाषा- विशेष के स्वनों का ऐसा समूह है जिसमें अर्थभेदक गुण पाया जाता है। स्वन और स्वनिम का अन्तर यह है कि स्वन का कोई अर्थ नहीं होता, स्वनिम का अपना कोई अर्थ नहीं होता, पर वह अर्थभेदक होता है।

▶ अर्थभेदक क्षमता से युक्त स्वनों के समूह

4.3.7 स्वानिकी और स्वानिमी-तुलना

▶ स्वानिकी और स्वनिमी की तुलना

	स्वानिकी	स्वानिमी
1.	स्वन मात्र का अध्ययन।	भाषा विशेष के स्वनिम का अध्ययन।
2.	व्यवस्थित प्रणाली नहीं है।	व्यवस्थित प्रणाली विद्यमान है।
3.	भाषा अध्ययन के लिए 'कच्चा 'माल' एकत्र करता है।	'कच्चा माल' का विश्लेषण करके निर्णय पर पहुँचता है।
4.	मुँह से निकले स्वन का विवरण देता है।	भाषा की संरचनात्मक इकाइयों का अध्ययन
5.	प्रत्येक स्वन का विवरण देता है।	उच्चरित भाषा को लेखन में उतारने में सहायक
6.	स्वनिमों तक पहुँचने में सहायक।	रूप-वाक्य विज्ञानों को सरल बनाता है।
7.	विदेशी भाषा के उच्चारण में मदद पहुँचाता है।	उच्चारण से विशेष मतलब नहीं है।
8.	लिपि-संकेतों की संख्या अधिक।	सीमित लिपि-संकेत

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

कोई भी भाषिक ध्वनि स्वन है। इसकी अवधारणा भाषा निरपेक्ष होती है। स्वनिमों का उच्चरित रूप स्वन कहलाता है। अर्थात् जब स्वनिम उच्चरित होते हैं तो वही स्वन कहलाते हैं। स्वनिम किसी भाषा की लघुतम अर्थभेदक इकाई है। इसकी सत्ता अमूर्त होती है और यह मानव मस्तिष्क में होता है। मानव मस्तिष्क में स्वनिम संकल्पनात्मक रूप में रहते हैं और उन्हीं के आधार पर मनुष्य उनका बार-बार भाषा उत्पादन (अभिव्यक्ति) और बोधन में उपयोग करता है। किसी स्वनिम विशेष के ही जब एक से अधिक रूप भाषा में प्रचलित हो जाते हैं तो वे आपस में उपस्वन कहलाते हैं। उपस्वन का प्रयोग संबंधित स्वनिम के स्थान पर शब्द का अर्थ नहीं बदलता है। स्वनिम और उपस्वन एक ही प्रकार्य संपन्न करते हैं। उनके प्रयोग की स्थितियाँ अलग-अलग होती हैं।

स्वनिम की संकल्पना पोलिश भाषाविद जॉन बॉदविन द कुर्तिने द्वारा दी गई। 1930 के दशक में प्राग संप्रदाय के एन.त्रुबेत्स्काय ने भाषा के स्वनिमिक अध्ययन को एक नई दिशा दी। 1940 के दशक में प्राग संप्रदाय के ही सदस्य रोमन याकोब्सन द्वारा इस पर अमेरिका में कार्य किया गया। प्राग संप्रदाय द्वारा 'स्वनिम' को परिभाषित किया गया और द्विआधारी प्रतियोग (binary oppositions) के आधार पर स्वनिमों के विश्लेषण पर बल दिया गया। अमेरिका के संरचनात्मक संप्रदाय के विद्वानों द्वारा भी इस क्षेत्र में कार्य किया गया, जिनमें लियोनार्ड ब्लूमफील्ड प्रमुख हैं। ब्लूमफील्ड व्यवहारवादी भाषावैज्ञानिक हैं। उन्होंने स्वनिम को 'मूर्त' माना है, जबकि प्रकार्यवादियों ने इसे अमूर्त माना है। बाद में भी स्वनिम की सत्ता को अमूर्त ही माना गया है।

1968 में प्रजनक स्वनिमविज्ञान के क्षेत्र में कार्य हुआ, जिसके प्रणेताओं में मॉरिस हाले और नोअम चॉम्स्की प्रमुख हैं। इसमें किसी वाक्य की अमूर्त वाक्य विन्यासात्मक बाह्य संरचना और स्वनिक तथ्यों के बीच संबंधों का विश्लेषण किया जाता है। 1969 में डेविड स्टैंप ने प्राकृतिक स्वनिमविज्ञान (Natural Phonology) की चर्चा की। 1980 के दशक में अनुशासन स्वनिमविज्ञान (Government Phonology) भी प्रस्तुत किया गया है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. स्वन के बारे में अपना मत प्रकट कीजिए।
2. स्वनिम विज्ञान से क्या तात्पर्य है?
3. स्वनिम की परिभाषा दीजिए।
4. स्वनिम विज्ञान के स्वरूप पर टिप्पणी तैयार कीजिए।
5. स्वानिकी और स्वनिमी की तुलना कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्‌भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ. राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

इकाई : 4

अर्थ विज्ञान-स्वरूप, भेद

Learning Outcomes / अध्ययन परिणाम

- अर्थविज्ञान की जानकारी प्राप्त करता है
- अर्थ परिवर्तन की दिशाओं से परिचित होता है
- अर्थविज्ञान की शाखाओं से अवगत होता है
- अर्थ विस्तार को समझता है
- अर्थ संकोच के बारे में जानकारी प्राप्त करता है

Background / पृष्ठभूमि

अर्थविज्ञान में शब्द और अर्थ के संबंध का अध्ययन करने के साथ ही अर्थबोध के साधन, अनेकार्थवाची शब्दों के अर्थ निर्णय के साधन, संकेत-ग्रह आदि का भी विश्लेषण किया जाता है। भाषा मनुष्य के व्यवहार का प्रमुख साधन है। मनुष्य स्वयं परिवर्तनशील है इसलिए उसके व्यवहार का साधन भाषा भी सतत परिवर्तनशील है।

Keywords / मुख्य बिन्दु

अर्थतत्व, अर्थग्राम, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, अर्थादेश

Discussion / चर्चा

- शब्दों का महत्व जिस तत्व पर टिका है उसे ही अर्थ तत्व कहते हैं

भोलानाथ तिवारी के मत में अर्थविज्ञान का अध्ययन बहुत कुछ मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र की अपेक्षा रखता है। प्रत्येक सार्थक शब्द अपने साथ एक भाव या विचार रखता है। यही भाव या विचार अर्थ के रूप में उस शब्द का प्राण या सार्थकता है। शब्दों का महत्व जिस तत्व पर टिका है उसे ही पारिभाषिक शब्दावली में अर्थ-तत्व या अर्थग्राम (semanteme) कहते हैं। किसी शब्द का अर्थ हमेशा एक जैसा नहीं रहता। समय, प्रसंग और परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन और विकास की प्रक्रिया चलती रहती है। अर्थविज्ञान में अर्थ में आए इन्हीं परिवर्तनों और उनके विकास का अध्ययन किया जाता है। इसीलिए भोलानाथ तिवारी मानते हैं कि 'अर्थविज्ञान के अंतर्गत हम किसी शब्द के अर्थतत्व में होने वाले परिवर्तन या

विकास के कारण तथा उसकी दिशा पर विचार करते हैं।

4.4.1 अर्थ-विज्ञान (SEMANTICS)

▶ भाषा में प्रयुक्त रूप, शब्द, मुहावरे आदि के अर्थ का अध्ययन

अर्थ -विज्ञान में भाषा में प्रयुक्त रूप, शब्द, मुहावरे आदि के अर्थ का अध्ययन होता है। दूसरे शब्दों में अर्थ के आधार पर ही रूप, शब्द, पद आदि की पहचान होती है। कुछ पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने अर्थ-विज्ञान को भाषा विज्ञान से बाहर की चीज माना था। भाषा विज्ञान के मुख्य अंगों में (ध्वनि, रूप और वाक्य) अर्थ को स्थान ही नहीं दिया था। वस्तुतः अर्थ ही भाषा की आत्मा है, भाषा की शक्ति है। अर्थ-विज्ञान को छोड़ना तो आत्मा को छोड़कर केवल शरीर का अध्ययन करने के समान है। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीनतम शाखा अर्थ-विज्ञान ही है। विदेशी विद्वानों ने अर्थ-विज्ञान को Semantology. Semasiology. Glossology आदि अनेक नाम दिये थे। आखिर इस शाखा का नाम Semantics स्थिर हुआ। स्वनिम और रूपिम के अनुकरण Semanteme Sememe (अर्थ-तत्व) को भी कल्पना को गयी है। अर्थ की दृष्टि से लघुतम इकाईवाले शब्द, धातु रूप या पद के अर्थ को Semanteme या अर्थतत्व कहते हैं। रूपिम और अर्थतत्व का आपस में गहरा सम्बन्ध होता है। भाषा में प्रयुक्त लघुतम अर्थयुक्त इकाई को रूपिम कहते हैं, तो उस इकाई के अर्थ को अर्थ-तत्व या Semanteme कहते हैं।

▶ अभिधा लक्षणा और व्यंजना

अर्थ के अनेक रूप होते हैं- एकार्थता (Monosemy), अनेकार्थता (Polysemy), समानाकारता (Homonymy), समानार्थता (Synonymy). विलोमार्थता (Antonymy) आदि। भाषा में एक अर्थ को सूचित करने वाले शब्द पर विचार करते हुए कभी-कभी उसके उलटे अर्थ को सूचित करनेवाले शब्द की ओर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। अर्थ के ऐसे सम्बन्ध को विलोमार्थता (Antonymy) कहेंगे। जैसे भला - बुरा, गरम - ठण्डा, खूबसूरत - बदसूरत आदि। भारतीय दृष्टिकोण से अर्थ के तीन भेद होते हैं- अभिधा, लक्षणा और व्यंजना इन्हें शब्द-शक्ति भी कहते हैं। अभिधार्थ, शब्द का अपना वाचक अर्थ या सीधा अर्थ होता है। लक्षणार्थ, लक्षण पर आधारित है; लक्षणार्थ लेते हुए शब्द के वाचक अर्थ का महत्त्व नहीं होता, उसे छोड़ दिया जाता है। व्यंजनार्थ में तो शब्द के वाचक अर्थ को उसी तरह स्वीकार करते हुए किसी विशेष अर्थ पर बल दिया जाता है। 'शब्द-शक्ति' मुख्य रूप से काव्यशास्त्र का विषय है, अतः यहाँ उसका विस्तार नहीं किया जाता।

4.4.2 अर्थ- परिवर्तन की दिशाएँ (प्रकार)

▶ ब्रील का विचार

'अर्थ परिवर्तन किन किन दिशाओं में होता है, अथवा उसके कितने प्रकार होते हैं, इस विषय पर सबसे पहले फ्रांसीसी भाषा विज्ञानिक बेत्ता ब्रील ने विचार किया था।' उन्होंने तीन दिशाओं की खोज की अर्थ-विस्तार, अर्थ-संकोच, अर्थादेश। अभी तक ये ही दिशाएँ अथवा प्रकार बहुस्वीकृत हैं।

4.4.2.1 अर्थ-विस्तार

अर्थ-विस्तार का अर्थ है अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकल विस्तार पा जाना। प्रत्येक शब्द के साथ उसका अपना एक अर्थ, भाव या विचार लगा रहता है। पर वह हमेशा एक सा नहीं रहता। धीरे-धीरे आवश्यकतानुसार अथवा परिस्थितिवश शब्दों के अर्थ में परिवर्तन होता रहता है। उदाहरण के लिए, संस्कृत का एक शब्द है जिसका मूल अर्थ है 'तिल का रस' अर्थात्, संस्कृत में मूलतः 'तिल के तेल' को ही 'तैल' कहते थे। यही इसका व्युत्पत्तिमूलक अर्थ था। हिन्दी आदि आधुनिक भाषाओं का 'तेल' शब्द इसी 'तैल' से विकसित है, किंतु इसका अर्थ

विस्तृत हो गया है। 'तैल' का मूल अर्थ या तिल का तेल, किंतु तेल का प्रयोग अब सभी चीजों के तेल के लिए होता है। इसी तरह कुछ अन्य उदाहरण दिये जाते हैं जिनमें पहला अर्थ असली संकुचित अर्थ है और दूसरा विस्तृत और व्यवहृत अर्थ है।

पत्र	-	पत्ता / चिट्ठी, अखबार, ताम्रपत्र
गवेषणा	-	गाय की खोज / खोज, अनुसन्धान
प्रवीण	-	वीणावादन में समर्थ/ किसी भी काम में निपुण
कुशल	-	कुश लाने में समर्थ / होशियार
स्याही	-	काला द्रव पदार्थ / लिखने के काम आने वाला कोई - द्रव पदार्थ

▶ अर्थ का सीमित क्षेत्र से निकल विस्तार पा जाना

4.4.2.2 अर्थ-संकोच

यह अर्थ-विस्तार का ठीक उलटा है। इसमें अर्थ की परिधि पहले विस्तृत रहती है, फिर संकुचित हो जाती है। उदाहरण के लिए संस्कृत 'मृग' का मूल अर्थ पशु है। 'शिकार' का वाचक 'मृगया' तथा 'पशुओं के राजा' सिंह के लिये 'मृगराज' के योग में मूल अर्थ आज भी सुरक्षित है। किन्तु आगे चलकर इस शब्द के अर्थ में संकोच हो गया और सभी पशुओं का वाचक शब्द मृग केवल 'हिरन' का वाचक हो गया। यह अर्थ संकोच संस्कृत में ही हो गया था। वस्तुतः अर्थ-संकोच में अर्थ 'सामान्य' से परिवर्तित होकर 'विशेष' हो जाता है। मृग 'सामान्य पशु' से 'विशेष पशु' हो गया है। एक सिद्धांत यह है कि भाषा में मूलतः शब्द सामान्य के लिए थे, अर्थसंकोच द्वारा धीरे-धीरे विशेष के लिए शब्दों का निर्धारण हुआ। इसी तरह के कुछ अन्य उदाहरण नीचे दिये हैं। पहला अर्थ सामान्य विस्तृत अर्थ है और दूसरा विशिष्ट संकुचित अर्थ।

मृग	-	कोई भी जानवर / हरिण
घृत	-	जो कुछ सींचा जाय / घी
भार्या	-	जिसका भरण-पोषण हो / पत्नी
नेत्र	-	चमकने वाला / आँख
श्राद्ध	-	श्राद्ध श्रद्धा से करने लायक काम / पितरों की तृप्ति के लिए - श्राद्ध

▶ अर्थ की परिधि पहले विस्तृत रहती है, फिर संकुचित

4.4.2.3 अर्थादेश

भाव-साहचर्य के कारण कभी-कभी शब्द के प्रधान अर्थ के साथ एक गौण अर्थ भी चलने लगता है। प्रधान अर्थ का धीरे-धीरे लोप हो जाता है और गौण अर्थ में ही शब्द प्रयुक्त होने लगता है। इस प्रकार एक अर्थ के लोप होने तथा नवीन अर्थ के आ जाने को 'अर्थादेश' कहते हैं। 'गंवार' शब्द का अर्थ है 'गाँव वाला' अथवा 'गाँव का लड़का'। यहाँ अर्थ का वाचक शब्द धीरे-धीरे 'असभ्य' का वाचक हो गया। इसका उदाहरण 'असुर' का दिया जा सकता है। ऋग्वेद की आरम्भ की ऋचाओं में यह देववाची शब्द है, पर बाद में राक्षसवाची हो गया। 'वर' का अर्थ श्रेष्ठ था, पर अब इसका प्रयोग 'दूल्हे' के लिए होता है। स्वयं 'दूल्हा' शब्द भी इसी प्रकार का है। इसका मूल अर्थ 'जो जल्द न मिले' (दुर्लभ) था पर अब यह 'वर' के नवीन अर्थ में ही प्रयुक्त होता है। ईरानी शब्द 'दिहकान' का मूल अर्थ 'देहात का बड़ा

▶ प्रधान अर्थ के लोप होना तथा नवीन अर्थ के आ जाना

ताल्लुकेदार' है, पर उर्दू तथा फ़ारसी गुजराती में 'देहकानी' का अर्थ मूर्ख होता है। अशोक 'देवानां प्रियः' कहा जाता था, पर बाद में इसका अर्थ 'मूर्ख' हो गया। संस्कृत का 'वाटिका' शब्द बंगला में 'बाड़ी' हो गया है और उसका अर्थ बगीचे से हट कर 'घर' हो गया है। बौद्ध धर्म के अनुयायी बौद्ध कहलाते हैं, पर 'बुद्धू' (जो उसी का रूपांतर है) का अर्थ मूर्ख होता है।

4.4.3 अर्थविज्ञान की शाखाएँ

▶ शब्दों और वाक्यों के तात्पर्य का अध्ययन

भाषा के दायरे में शब्दों और वाक्यों के तात्पर्य का अध्ययन अर्थ-विज्ञान कहलाता है। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध से पहले अर्थ-विज्ञान को एक अलग अनुशासन के रूप में मान्यता नहीं थी। फ्रांसीसी भाषा-शास्त्री मिशेल ब्रील ने इस अनुशासन की स्थापना की और इसे 'सीमेंटिक्स' का नाम दिया। अर्थविज्ञान की शाखाएँ इस प्रकार हैं।

4.4.3.1 शब्दवृत्तिक अर्थविज्ञान

▶ शब्दों की आंतरिक आर्थी संरचना का विश्लेषण

इसमें शब्द के स्तर पर आर्थी संरचना को केंद्र में रखकर चलते हैं। इस शाखा का आरंभ 19 वीं शताब्दी के आरंभ में हुआ था। इसमें शब्दों की आंतरिक आर्थी संरचना का विश्लेषण उनके बीच प्राप्त आर्थी संबंधों के आधार पर किया जाता है। इसमें विश्लेषण के मुख्यतः दो पक्ष हैं- (क) शब्दों के बीच प्राप्त आर्थी संबंध, जैसे- पर्यायता, विलोमता, अधिनामिता और अवनामिता (hypernymy and hyponymy), बहुअर्थकता (polysemy) रूपक और रूपकीकरण (metaphor & metonymy) आदि का विश्लेषण; तथा (ख) कोशीय क्षेत्र (lexical fields), कोशीय संबंधों के आधार पर आर्थी संजालों (semantic networks) और साँचों (frames) आदि का निरूपण।

4.4.3.2 संरचनात्मक अर्थविज्ञान

▶ अर्थ के विविध पक्षों पर विचार

इसमें 'संरचना' की दृष्टि से अर्थ के विविध पक्षों पर विचार किया गया है। अंग्रेजी में इसे Structuralist Semantics भी कहा गया है। संरचनावादी अर्थवैज्ञानिकों के अनुसार किसी भाषा का शब्दभंडार (vocabulary) शब्दों का असंरचित संग्रह नहीं है, बल्कि विभिन्न प्रकार के आर्थी संबंधों से जुड़ी संकल्पनाओं (concepts) या आर्थी इकाइयों का संरचित संजाल (structured network) है। अतः आर्थी अध्ययन की इस पद्धति ने उस संरचित संजाल को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। इस क्रम में संरचनात्मक अर्थविज्ञान में विश्लेषण की कई पद्धतियाँ भी विकसित हुई हैं, जैसे- शब्दवृत्तिक क्षेत्र सिद्धांत (Lexical field theory), घटकीय विश्लेषण (Componential analysis), संबंधपरक अर्थविज्ञान (Relational semantics) और नवसंरचनात्मक अर्थविज्ञान (Neo Structural Semantics) आदि।

4.4.3.3 संज्ञानात्मक अर्थविज्ञान

▶ 'मन' के परिप्रेक्ष्य में भाषा अध्ययन

भाषा की सत्ता मानसिक है। इसलिए 'मन' के परिप्रेक्ष्य में भाषा अध्ययन के कई सिद्धांत विकसित हुए हैं, जिन्हें मनोवादी सिद्धांत (mentalist theory) कहते हैं। 'मन' का भाषा और व्यवहार संबंधी भाग 'संज्ञान' कहलाता है। संज्ञान में 'भाषा की अमूर्त संरचना' और 'संकल्पनात्मक अर्थ' दोनों आते हैं। 'संज्ञानात्मक अर्थविज्ञान' भाषा विश्लेषण के केंद्र में 'अर्थ' को रखकर चलता है। इसमें आर्थी विश्लेषण और प्रस्तुति को 'वर्गात्मक प्रस्तुति', (Categorical Representation) 'रूपक और रूपकीकरण' (metaphor & metonymy) आदि के रूप में देखा गया है और इनके आधार पर अमूर्तीकृत संज्ञानात्मक मॉडल (Idealized Cognitive Model) तथा साँचापरक अर्थविज्ञान (Frame semantics) आदि पद्धतियों का

विकास किया गया है।

4.4.3.4 रूपात्मक अर्थविज्ञान

▶ मशीन में निरूपित

'रूपात्मक अर्थविज्ञान' आर्थी विश्लेषण और प्रस्तुति की वह विधा है, जो तार्किक रूपों (logical forms) के माध्यम से प्राकृतिक भाषाओं की आर्थी संरचना को मशीन में निरूपित (represent) करने का प्रयास करती है। इसमें दो निरूपण पद्धतियाँ अत्यंत प्रचलित हैं- प्रतिज्ञप्तिपरक तर्क (Propositional logic) और विधेय तर्क (Predicate Logic/First order logic)

Summarised Overview / संक्षिप्त अवलोकन

अर्थ की प्रतीति दो आधारों पर होती है: (क) आत्मानुभव से अर्थात् स्वयं किसी वस्तु का प्रत्यक्ष संपर्क द्वारा अनुभव प्राप्त करना और (ख) परानुभव से अर्थात् दूसरे के अनुभवों को सुन या पढ़कर किसी वस्तु या विषय को जानना। हम हर उस चीज के विषय में दूसरों के ज्ञान या अनुभव का सहारा लेते हैं जो हमारी अपनी पहुँच के बाहर होती हैं। चीनी मीठी होती हैं यह ज्ञान आत्मानुभाव से हो सकता है परंतु सूर्य, ईश्वर या आत्मा के अनुभव और ज्ञान के लिये हम प्रायः दूसरों के ज्ञान या अनुभव का ही सहारा लेते हैं। किसी भी भाषिक इकाई की अर्थ-प्रतीति के ये ही दो मुख्य आधार होते हैं।

कुछ लोग व्युत्पत्ति शास्त्र को अर्थविज्ञान का एक अंग मानते हैं जबकि कुछ लोग इसे भाषा-विज्ञान का स्वतंत्र खंड तथा कुछ दोनों को ही एक मानते हैं। वास्तव में तीनों मत गलत है। व्युत्पत्ति भाषा-विज्ञान का अलग विभाग हो ही नहीं सकता और न ही अर्थ विज्ञान की तरह इसका स्वतंत्र रूप से अध्ययन ही हो सकता है। तथ्य तो यह है कि व्युत्पति में किसी शब्द के आरंभ तथा धातु आदि पर विचार करते हुए ध्वनि और अर्थ-दोनों दृष्टियों से इतिहास दिया जाता है। इस प्रकार किसी शब्द की व्युत्पत्ति के अंतर्गत शब्द का सभी दृष्टियों से जीवन-चरित्र देना होता है। कहा जा सकता है कि व्युत्पत्ति शास्त्र अलग विज्ञान या भाषाविज्ञान का विभाग या अर्थ-विज्ञान न होकर ध्वनि-विज्ञान का ही सम्मिलित प्रयोग मात्र है।

Assignment / प्रदत्त कार्य

1. अर्थ विज्ञान से क्या तात्पर्य है?
2. अर्थ- परिवर्तन की दिशाओं का परिचय कीजिए।
3. अर्थविज्ञान की शाखाएँ क्या-क्या है?
4. संरचनात्मक अर्थविज्ञान से क्या तात्पर्य है?
5. संरचनात्मक अर्थविज्ञान और संज्ञानात्मक अर्थविज्ञान की तुलना कीजिए।

Suggested Reading / निर्धारित पुस्तक

1. हिन्दी भाषा-उद्भव, विकास और रूप - हरदेव बिहारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
2. आधुनिक भाषा विज्ञान के सिद्धांत - डॉ राम किशोर शर्मा, इलाहाबाद।
3. भाषा विज्ञान - डॉ. भोलानाथ तिवारी, किताब महल, पटना।

Reference / संदर्भ ग्रंथ

1. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ भोलानाथ तिवारी।
2. हिंदी भाषा का इतिहास - डॉ. धीरेंद्र वर्मा।
3. ध्वनि विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहाबाद।
4. भाषा विज्ञान की भूमिका - देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

Space for Learner Engagement for Objective Questions

Learners are encouraged to develop objective questions based on the content in the paragraph as a sign of their comprehension of the content. The Learners may reflect on the recap bullets and relate their understanding with the narrative in order to frame objective questions from the given text. The University expects that 1 - 2 questions are developed for each paragraph. The space given below can be used for listing the questions.

സർവ്വകലാശാലാഗീതം

വിദ്യയാൽ സ്വതന്ത്രരാകണം
വിശ്വപൗരരായി മാറണം
ഗ്രഹപ്രസാദമായ് വിളങ്ങണം
ഗുരുപ്രകാശമേ നയിക്കണേ

കൂരിരുട്ടിൽ നിന്നു ഞങ്ങളെ
സൂര്യവീഥിയിൽ തെളിക്കണം
സ്നേഹദീപ്തിയായ് വിളങ്ങണം
നീതിവൈജയന്തി പാറണം

ശാസ്ത്രവ്യാപ്തിയെന്നുമേകണം
ജാതിഭേദമാകെ മാറണം
ബോധരശ്മിയിൽ തിളങ്ങുവാൻ
ജ്ഞാനകേന്ദ്രമേ ജ്വലിക്കണേ

കുരീപ്പുഴ ശ്രീകുമാർ

SREENARAYANAGURU OPEN UNIVERSITY

Regional Centres

Kozhikode
Govt. Arts and Science College
Meenchantha, Kozhikode,
Kerala, Pin: 673002
Ph: 04952920228
email: rckdirector@sgou.ac.in

Thalassery
Govt. Brennen College
Dharmadam, Thalassery,
Kannur, Pin: 670106
Ph: 04902990494
email: rctdirector@sgou.ac.in

Tripunithura
Govt. College
Tripunithura, Ernakulam,
Kerala, Pin: 682301
Ph: 04842927436
email: rcedirector@sgou.ac.in

Pattambi
Sree Neelakanta Govt. Sanskrit College
Pattambi, Palakkad,
Kerala, Pin: 679303
Ph: 04662912009
email: rcpdirector@sgou.ac.in

हिन्दी भाषा का इतिहास और भाषा विज्ञान

Course Code: M23HD03DC

SREENARAYANAGURU
OPEN UNIVERSITY

YouTube

ISBN 978-81-966843-2-7

Sreenarayanaguru Open University
Kollam, Kerala Pin- 691601, email: info@sgou.ac.in, www.sgou.ac.in Ph: +91 474 2966841